दिन देवता ने उसे अमृत फल लादिया तब उसने उस फल को अपने घर में लाकर बिराह्मनी से कहा कि जो कोई इसे खायगा सो अमर होयगा देवता ने फल देते वक्त यह मुझ से कहा। यह सुन के बिराह्मनी बहुत सा रोई और कहने लगी कि यह हमें बड़ा पाप भुगमना पड़ा क्योंकि अमर होके कबतक भीख मागेंगे बल्कि इस से मरना बिहतर है—जो मर जाइये तो संसार के दुख से छुटिये तब ब्राह्मण बोला कि लेते तो मैं ले आया पर तेरी बातान के मेरी अक्ल खोई गई—अब जो बनावे सो मैं हूं। फिर उस से बिराह्मनी ने कहा यह फल राजा को दो और इस के बदले लक्ष्मी लो जिस से औ परमारथ का काम हो यह बात सुन ब्राह्मण राजा के पास गया और असीस दी फल का अहवाल बयान करके कहा कि महाराज यह फल आप लीजिये और मुझे कुछ लक्ष्मी दीजिये आप के चिरंजीव रहने से मुझे सुख है। राजा ने ब्राह्मण को लाख रुपये दे बिदाकर महल में आ जिस रानी को बहुतसा चाहता था उसे वह फल देकर कहा ऐ रानी। तू इसे खा कि अमर होवेगी और हमेश: जवान रहेगी रानी ने इस बात को सुन राजा से फल ले लिया राजा बाहर सभा में आया। उस रानी

प लीजिये और मुझे कुछ लक्ष्मी दीजिये,आपके चिर
जीव रहने से मुझे सुख है,फिर राजाने ब्राह्मण को ला
ख रुपैये दे,बिदा कर,महल में आ जिस रानी को बहुत
आ चाहता था उसे वह फल दे कर कहा,ऐ रानी तू इ
से खा कि अमर होवेगी और हमेशः जवान रहेगी॥ रा
नीने इस बातको सुन राजासे फल ले लिया,राजा बा
हर सभा में आया,उस रानी का आशनाव एक कोतवा
ल,था,उसने वह उसे फल दिया,इत्तिफाकन् एक वेश्वा
कोतवाल की दोस्त थी,उसने उसे वह फल दे कर उस
की खूबी बयान की॥ उस वेश्याने अपने मन में विचा
रा कि यह फल राजाके देने योग्य है। यह बात अपने
मन में ठहरा वुह फल राजाको लाकर दिया राजाने
फल ले लिया और उसे बहुत सा धन दे बिदा किया,
और फल को देख अपने जीमें चिन्ता कर संसार से उ
दास हो कहने लगा,कि इस संसार की माया किसी
काम की नहीं,क्योंकि इससे आख़िर नरक में पड़ना
होता है,तिससे बिहतर यह है कि तपस्या की जिये,औ
र भगवान की याद में रहिये,कि जिससे आइन्दे को
भला होवे। यह बात दिल में ठान महल में जा रानी
से पूछा,कि तुम वुह फल क्या किया,उसने कहा मैं उसे
खा गई,तब तो राजाने वह फल रानी को देखाया,वुह
देखते ही भौचक्की सी हो गई, और कुछ [illegible]

आया, फिर राजाने बाहर आ उस फलको धुलाकर खाया और राजपाट छोड जोगी बन, अकेला बिन कहे सुने, बनको सिधारा, बिक्रम का राज खाली रहा॥ जब यह खबर राजा इन्द्र को पहुंची, तो उसने एक देव धारानगर की रखवाली को भेजा, वह दिन रात उस शहर की चौकी दिया करता, गरज इस बात का शहर: मुलुक व मुलुक हुआ, कि राजा भरथरी राज छोड निकल गया, यह खबर राजा बिक्रम भी सुनते ही तुरन्त अपने देश में आया, उस वक्त आधीरात थी उस समैं नगरी में जाता था, कि वुह देव पुकारा तू कौन है, और कहां जाता है, खडा रह, अपना नाम बता, तब राजाने कहा मैं हुं राजा बिक्रम अपने शहर में जाता हुं तू कौन जो मुझे रोकता है, तब देव बोला कि मुझे देवताओंने इस नगरी की रखवाली को भेजा है जो तुम सत्य राजा बिक्रम हो तो पहिले मुझसे लडो, पीछे शहर में जाव इस बात के सुनते ही, राजाने चरना काछकर, उस देव को ललकारा, फिर वुह देव भी उसके सन्मुख हुआ, लडाई होने लगी, निदान राजाने देवको पछाड उसकी छातीपर चढ बैठा, तब उसने कहा ए राजा तूने मुझे पछाडा लेकिन मैं तुझे जीदान देता हुं, तब तो राजाने हंसकर कहा तू दीवाना हुआ है, किसको जी दान देता है, मैं चाहुं तो तुझे मार डालुं, तू मुझे जी दान क्या दे

था, तब वुह राक्षस बोला कि ऐ राजा मैं तुझे कालसे बचाता हूं, पहले मेरी एक बात सुन, फिर बे परवा होत माम दुनिया का राज कर, आखिर राजाने उसे छोड दिया, और उसकी बात दिल देकर सुन्ने लगा, फिर देव ने यह उससे कहा, कि इस शहर में चन्द्रभान नाम एक राजा बडा दाता था, इत्तिफाकन एक रोज वुह जङ्गल को निकल गया, तो देखता क्या है, कि एक तपस्वी दरखत में उलटा लटका हुआ है, और धुयांपीपी कर रहता है, न किसीसे कुछ लेता है, न बात करता है॥ उसका यह हाल देख राजाने अपने घर आ, सभामें बैठकर यह कहा जो कोई इस तपस्वी को लावे वुह लाख रुपैये पावे, इस बातको सुनकर, एक वेश्याने राजाके पास आ, यह अर्ज की, अगर महाराज की आज्ञा पाऊं, तो उसी तपस्वी से एक लडका जन्मया उसी के कांधेपर चढाकर ले आऊं, इस बातके सुन्ने से राजा को अचम्भा हुआ, और उस वेश्याको तपस्वी के लाने के वास्ते, बीडा देकर रुखसत किया, यह उस बनमें गई, और योगी के मकान पर पहुंच, देखती क्या है, कि वुह योगी सच ही उलटा लटका रहा है, न कुछ खाता न पीता है, और सुख रहा है, गरज उस वेश्याने हलवा पका उस तपस्वी के मुंह में दिया, उसे मीठा मीठा जो लगा, तो वुह उसे चाट गिया, फिर उस वेश्याने और लगा दिया॥

इसी तरह से दो रोज तक हलवा चटाया की उसके खा
ने से एक कुवत उसे हुई, तब उसने आंखे खोल दरखत
से नीचे उतर उससे पूछा, तू यहां किस काम को आई
वे श्या ने कहा, मैं देव कन्या हूं, स्वर्गलोक में तपस्या कर
ती थी, अब इस बन में आई हूं, फिर उस तपस्वी ने कहा
तुम्हारी मढ़ी कहां है, हमें दिखाओ, तब वुह वेश्या उ
स तपस्वी को अपनी मढ़ी में लाकर षटरस भोजन कर
वाने लगी, तो तपस्वीने धूआं पीना छोड दिया, और ह
र रोज खाना खाने पानी पीने लगा, निदान कामदेव ने
उसे सताया, फिर तपस्वी ने उससे भोग किया, जोग खो
या और वेश्या को गर्भ रहा, बत्तिमरे यन से लडका पै
दा हुआ॥ जब कई एक महीने का हुआ तब उस रण्डी
ने तपस्वी से कहा, कि गोसांईजी अब चलकर तीर्थया
त्रा कीजिये, जिसे शरीर के सब पाप कटें, ऐसी बातें कर
उसे भुलाय लडका उसके कांधे पर चढ़ा राजा की मज
लिस को चली कि जहां से वुह उस बात का बीडा उठा
कर आई थी, जिसवक्त राजा के साम्हने पहुंची, राजा
उसको दूर से पहचान और लडके को उस तपस्वी के
कांधेपर देख यह बिमजलिस से कहने लगा, देखो तो
यह वही वेश्या है, जो जोगी के लेने को गई थी, उन्हों
ने अर्ज की कि महाराज सच फरमाते हो, यह वही है,
और मुलाहिजा फरमाइये कि जो जो बात हुजूर से

अर्ज कर गई थी, ये सब वक़ूअ में आई, ये बातें राजा कि और मजलिसियों को जब योगीने सुनी तो समझा कि राजाने मेरी तपस्या के डिगाने के लिये, यह यतन किया था। जोगी यह अपने जीमें बिचार कर वहां से उलटा, फिर शहर के बाहर निकल उस लड़के को मार डाला, और एक जङ्गलमें जा योग करने लगा, और बाद चन्दरोज के उस राजाका वाक़िआ हुआ और योगी ने योग पूरा किया। गरज़ इसका ब्यौरा यह है, कि तुम तीन आदमी एक नगर में और एक नक्षत्र योग महूरत में पैदा हुए हो, तुमने राजाके घरमें जनम लिया, दूसरा तेलीके बेटा हुआ, तीसरा योगी कुम्हारके घरमें पैदा हुआ। तुमतो यहां का राज करते हो, और तेलीका बेटा पातालके राज का मालिक था, सो उस कुम्हार ने खूब अपना योग साधा तेलीको मार मरघट में पिशाच बना शिरस के दरख़्त में उलटा लटका रखा है, और तेरे मारने की फ़िक्र में है, अगर तु उससे बचेगा तो राज करेगा। इस अहवाल से मैं ने तुझे ख़बरदार किया, तू उससे गाफ़िल मत रहना, इतनी बात कहकर देव तो चला गया, यह अपने महल में दाख़िल हुआ। जब सुबह हुई तो राजा बाहर निकल बैठा, और दरबारि आम को हुकुम किया, जितने छोटे बड़े नौकर चाकर थे सबने आ आके हुज़ूर में नज़रें दीं, और श

दियानै बाजने लगे,सारे शहर को अजब एक तरह की खुशी औ खुशी हासिल हुई कि जा बजा और घर बघर नाच राग मच गया। फिर राजा धर्म राज करने लगा,एक दिन का जिक्र है कि शांत शील नामे योगी एक फल हाथ में लिये राजा की सभामें आया,और वह फल उसके हाथ में दे आसन उस जगह बिछाकर बैठा,फिर एक घडी के पीछे चला गया। राजाने उसके जाने के बाद अपने मन में बिचारा कि जिसे देखने कहा था वही तो नहीं। यह गुमान कर फल न खाया, और भाण्डारी को बुलाकर दीया कि इसे अच्छी तरह से रखना,पर योगी हमेशः इसी तरह से आता,और एक फल रोज दे जाता,इत्तिफाकन् एक रोज राजा अपने अस्तबल के देखने को गया था,और मुसाहिब भी कछु साथ थे,इतने में योगी भी वहां पहुंचा,और उसी तरह से फल राजा को हाथ दिया,वुह उसे उछालने लगा कि एक बारगी हाथ से जमीन पर गिरपडा,और बन्दर ने उठाकर तोड डाला,ऐसा एक लाल उसमें से निकला,की राजा और उसके मसाहिब उसकी जोत को देख हैरान हुए,तब राजाने योगी से कहा कि तूने यह लाल मुझे किसवास्ते दिया तब उसने कहा ऐ महाराज। शास्त्रमें लिखा है,कि खाली हाथ इतनी जगह न जाय,राजा,गुरु,जोतिषी,वैद,बेटी के इसवास्ते कि यहां

दाना से फल निकला है । ऐ राजा तुम एक लाल को क्या कहते हो, मैंने जितने फल तुमको दिये हैं, उन सब में रतन हैं । यह बात सुन राजाने भण्डारी से कहा जितने फल तुझ को दिये है, उन सबको ले आ ॥ भाण्डारी राजाकी आज्ञा पा तुरन्त ले आया, और इन फलों को जो तोडवाया तो सब में से एक एक लाल पाया, अब इतने लाल देखें तो राजा निहायत खुश हुआ, और रतन पारखीको बुलवा लालोंको परखवाने लगा, और यों बोला कि साथ कछु नहीं जायगा, दुनिया में धर्म बडी चीज है, जो कुछ हरएक पएरव का मोल हो सो धर्म से कह दीजिये । यह बात सुन जौहरी बोला कि महाराज तुमने सच फरमाया, जिसका धर्म रहेगा उसका सब कुछ रहेगा, धर्म ही साथ जाता है और वही दोनों जहान में काम आता है, सुनो महाराज हरएक पएरव अपने अपने रङ्ग संङ्ग ढङ्ग में दुरुल है, अगर, हरएक का मोल कडोड कडोडकङ्क तो भी हो नहीं सकता । फिल वाकिअ एकएक इकलीम एक एक लाल की कीमत है, यह सुन राजा बहुत सा खुश हो जौहरीको खिलअत देरुकसत कर जोगीका हाथ पकड गद्दीपर ले आया, और कहने लगा, मेरा तो सारा मुल्क भी एक लाल का बहा नहीं है, तुमने दिगम्बर होकर जो इतने रतन मेरे तई दिये है

इसका बिचार क्या है, सो तुम मुझ से कहो॥ योगी बो
ला राजा इतनी बातें जाहिर करनी मुनासिब नहीं
जंतमंत्र औषध, अधर्म, घरका अहवाल, हाराम का खाना,
बुरी बात सुनी हुईये सब बातें मजलीस में कही नहीं
जाती, खीलवत में कहूंगा। सुनो यह काइदा है, जो
बातछ: कान में पडती है वुह मखफीनी रहती चारका
न की बात कोई नहीं सुनता, और दो कान की बात
ब्रह्मा भी नहीं जानता, आदमी का तो क्या जिक्र है॥
यह बात सुन योगी को निराले में ले राजा पूछने लगा,
कि गोसाई जी तुमने इतने लाल मुझे दिये और एक
रोज भी भोजन न किया में तुम से बहुत शरमिन्द: हुं,
अपना जो मतलब हो सो कहो। योगी बोला राजा
गोदावरी नदीके तीर महा स्मशान में मंत्र सिद्ध करूंगा,
उससे अष्ट सिद्ध मुझे मिलेगी सो मैं तुमसे भिक्षा मांग
ता हुं, एकरोज तुम मेरे पास रातभर रहना, तुम्हारे पा
सके रहने से मेरा मंत्र सिद्ध हो जावेगा। तब राजाने
कहा कब मैं आऊंगा, तुम वुह दिन हमें बता जाओ,
योगी बोला भादों वदी चौदश मङ्गलवार को सांझ
हथियार बांध अकेले तुम मेरे पास आना। राजाने
कहा तुम जाओ मैं मुकर्रर तनहा आऊंगा। इस तरह
राजा से वचन ले रुखसत हो मठमें जा तैयार हो सब
सामानले वुह तो मरघट में जा बैठा, और यहां राजा
अपने जीमें फिक्र करने लगा, इतमें वुह साअत भी

आन पहुंचो, तब राजा वहां तलवार बांध लंगोट कस अकेला योगीके पास जा पहुंचा, और उसको आदेश सुनाया, योगीने कहा आओ बैठो, फिर राजा वहां बैठ गया, तो देखता क्या है, कि चारों तरफ भूत प्रेत डायन तरह बतरह की हौलनाक सूरतें बनाये नाचते हैं और योगी बीचमें बैठा दोकपाल बजाता है ॥ ❋
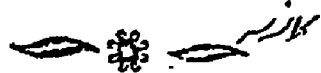
राजाने यह अहवाल देख कुछ डर भी न किया और योगी से कहा मुझे क्या आज्ञा है ॥ उसने कहा राजा तुम आये हो तो एक काम करो। यहां से दक्षिण तरफ दो कोस पर एक मरघट है, उसमें एक सिरसके दरखत तिसमें एक मुर्दा लटकता है उसे मेरे पास तुरंत लाओ, कि मैं यहां पूजा करता हूं ॥ राजा को उधर भेज आप आसन मार जप करने लगा। एकतो अंधेरी रातको डराती थी, दूसरे सिहकी ऐसी झड़ी लगी हुई गोया आज बरस कर फिर कभी न बरसेगा, और भूत पलीद ऐसे शोर गुल करते थे कि कूद बीर भी हो तो देखके घबरा जाय, लेकिन राजा अपनी राह चला जाता था सांप जो आन आन पांव में लिपटते तो उनको मंत्र पड छुडा देता, निदान जो तों कठन वाट काट कर राजा उस मसान में पहुंचा तो देखा किहां थ पकड आदमियों को देदे मारते हैं डायन लडकोंके कलेजे चबाती हैं और दहाड़ते हैं कभी कि

घोडे मारते हैं, गरज उस दरखत को जो ध्यान कर देखा तो जड से फुनग तलक हरएक डाल पात उसका दहड दहड जलता है और हर चहार तरफ से एक गोगा बरपा हो रहा है कि मार मार ले ले खबरदार जाने न पावे॥ राजा उस अहवाल को देख न डरा लेकिन अपने जीमें कहता था हो नहो यह वही योगी है जिसकी बात मुझसे देवने कही थी, और पास आकर जो देखा तो एक मुर्दा रस्सि से बंधा उलटा लटकता है॥ मुर्दे को देख राजा खुश हुआ कि मेरी मिहनत सुफल हुई खांडा फरी ले, उस पेडपर निरभै चढ़ एक हाथ तलवार का ऐसा मारा कि रस्सी कट मुर्दा नीचे गीर पडा और गिरते ही ढाढें मार मार रोने लगा, पर राजा उसकी आवाज सुन खुश हो अपने दिल में कहने लगा, भला यह आदमी जीता तो है, फिर उतर कर उस्से पूछा तू कौन है, वह सुन्ते ही खिल खिला के हंसा, राजाको इस बात का बडा अचंभा हुआ, फिर वुह मुर्दार उसी दरखत पर चढकर लटका गया, राजा भी वोंही चढकर उसे बगल में दबा नीचे ले आया और कहा चण्डाल। तूकौन है मुझसे कह। उसने कुछ जवाब न दिया राजाने सोचकर जीमें कहा शायद यह वही तेली है जो देवने कहा था कि योगीने मसान बनाकर रखा है॥ यह बिचार उसे चादर में बांध योगीके पास ले चला॥ जो नर ऐसा साहस करेगा

वुह सिद्ध होवेगा, तब वुह बैताल बोला तू कौन है और कहां लिये जाता है, राजाने जवाब दिया कि मैं राजा बिक्रम हूं तुझे योगीके पास लिये जाता हूं ॥ उसने कहा एक सत्य से चलता हूं जो रस्ते में तू बोलेगा तो मैं उलटा फिर जाऊंगा, राजाने उसको सत्य मानी और ले चला, फिर बैताल बोला ऐ राजा ॥ पण्डित चतुर बुद्धिवान लोग जो हैं तिनके दिन तो गीत और शास्त्र के आनन्द में कटते है और कूढ मूरखोंके दिन कल काल और नींद में, इससे बिहतर यह है कि इतनी राह अच्छी बातों के चर्चे में कट जाय, ऐ राजा जो मैं कथा कहता हूं उसे सुन ॥
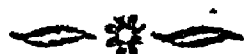
॥ कहानी सुरूअ ॥

एक राजा प्रतापमुकट नाम बनारस का था और उसके बेटेका नाम बज्रमुकट जिसको राणीका नाम महादेवी, एकदिन वुह अपने दीवानके बेटे को साथ ले सिकार को गया और बहुत दूर जङ्गलमें जा निकला और उसके बीच एक सुन्दर तालाव देखा, कि उसके कनारे हंस चकवा चकवी बगले मुर्गावियां सबके सब कलोल में, वे चारों तरफ पुखतः घाट बने हुए, कंवल तालव में फूले हुए, कनारों पर तरह वतरह के दरखत लगे हुए, कि जिनकी घनी घनी छांव में ठंढी ठंढी हवाए आतियां थीं और पंछी पखेरू दरखतों पर जह चहीं

में थे, और रङ्ग बरङ्गके फूल बनमें फूल रहे थे, उनपर भौंरों के झुंड के झुंड गुञ्ज रहे थे, कि उस तालाव के कनारे पहुंचे और मुंह हाथ धो कर ऊपर आये। व हां एक महादेव का मन्दिर था, घोड़ों को बांध मन्दिर के अन्दर जा महादेव का दर्शन कर बाहर निकले। जितनी देर उनको दर्शन में लगी, उतने अरसे में कि सु राजा की बेटी सहेलियों का झुंड साथ लिये हुए उसी तालाव के दूसरे कनारे पर असनान करने आई, सो असनान ध्यान पूजा कर सहेलियों को साथ लिये दरखतों की छांव में टहलने लगी। इधर दीवान का बेटा बैठा था, और राजा का बेटा फिरता था, कि अचा नक उस की और राजाकी बेटी की चार नजरें हुई, दे खते ही उस के रूपको राजा का बेटा फरेफ्तः हुआ, औ र अपने दिलमें कहने लगा कि ऐ चण्डाल काम। मु झ को क्या सताता है, और उस राजपुत्री ने उस कुंवर को देख सिरमें जो कंवल का फुल पूजा करके रखा था वही फूल हाथ में ले, कानसे लगा, दांत से कुतर पांव तले दिया फिर उठा छाती से लगा लिया, और सखि यों को साथ ले सवार हो अपने मकान को गई। और यह राजपुत्र निहायत निरास हो, विरह में डूबा हुआ दीवान के लड़के के पास आया, और साथ शर्म के उस के आगे हकीकत कहने लगा, कि ऐ मित्र। मैं ने एक अति सुन्दरी नायिका देखी न उसका नाम जानता हूं न

ठां, जो वुह मुझे न मिलेगी तो मैं अपनी जान न रखूं गा, यह मैंने अपने जीमें निश्चय विचारा है, यह अहवाल दीवान का बेटा सुन उसे सवार करवा घरको ले आया पर राजाका बेटा बिरह की पीर से ऐसा बेकल था कि लिखना पढना खाना पीना सोना राजकाज सब कुछ तजबैठा नकशा उसकी सूरतका लिखलिख देखता और रोता, न अपनी कहता, न और की सुनता। दीवान के बेटे ने यह हालत उसकी जो बिरह से हुई थी जब देखी तो उससे कहा, कि जिसने इश्क की राह में कदम रखा है फिर वुह जिया नहीं, और जो जिया तो उसने बहुत दुख पाया, इसवास्ते ज्ञानी लोग इस राह में पांव नहीं रखते। फिर उसकी बात सुन राजकुमार बोला मैंने तो इस पथमें पांव दीया, इसमें सुख होया दुख। जब ऐसा मजबूत कलाम उसका सुना तब वुह बोला, कि महाराज। तुमसे चलते वक्त कुछ उसने कहा था या तुम ने कुछ उससे, फिर उसने जवाब दिया कि न मैंने कुछ कहा न उससे कुछ सुना, तब दीवान का बेटा बोला उसका मिलना बहुत मुशकिल है। उसने कहा जो वुह मिली तो हमारी जान रही। नहीं तो गई, फिर उसने पूछा कुछ इशारा भी किया था वहीं कुंवर ने कहा, जो उसने हरकतें की थीं सो ये हैं, कि एका एक मुझ को देख सीरपर से कंवल का फूल उतार कान से लगा दांत से कुतार पांवतले दे कर

छाती से लगा लिया। यह सुन दीवान के बेटे ने कहा उसके इशारों को हम समझे और नांव ठांव सब उस का जाना। वुह बोला जो समझे हो सो बयान करो, यह कहने लगा सुनो राजा कंवलका फूल सिर से उतार कान से जो लगाया तो गोया उसने तुमको बताया कि मैं करनाटक की रहनेवाली हूं और दांत से जो कुतरा सो कहा कि दन्तवाट राजा की बेटी हूं, और पांव से जो दबाया सो कहा कि पद्मावती मेरा नाम है और छाती में जो लगाया सो कहा तुम तो मेरे हृदय में बसे हो॥ जब इतनी बातें कुंवरने सुनी तो उससे कहा बिहतर यह है कि मुझे उसके शहरमें ले चलो॥ यह कहते ही कपडे पहन हथियार बांध कुछ जवाहीर ले घोडोंपर सवार हो दोनोंने उस तरफ की राह ली। कई दिनके बाद करनाटक देशमें पहुंच शहर की सैर करते हुए राजा के महलों के नीचे आये, तो वहां देखते क्या हैं कि एक बुढिया अपने दरवाजे पर बैठी हुई चर्खा काटती है, दोनों घोडों से उतर उसके पास जा कहने लगे माई हम मुसाफिर सौदागर हैं, माल हमारा पीछे आता है, और हम जागह ढूंढने के वास्ते आगे बढ आये हैं, जो हमें जगह दे तो हम रहें। बुढिया उनकी सूरतों को देख औ बातों को सुन रहम कर के बोली, यह घर तुम्हारा है, जबतलक जी चाहे रहो। गरज यह सुन मकान में उतरे, तो कितनी एक देर

के बाद बुढिया निहर बानी से उन पास आन बैठी, बा
तें करने लगी, इसमें दीवान के बेटे ने उससे पूछा तेरी
आलऔलाद और कुनबे में कौन कौन है, और क्यों क
र गुजरान होती है, बुढियाने कहा बेटा मेरा राजकी
खिजमत में बहुत अच्छी तरह से आसूदा है, और प
द्मावती जो राजकन्या है, वंही उसे दूध पिलाई हैं, इस
बुढापेके आने से घरमें रहती हूं, पर राजा मेरे खाने
पीने की खबर लेता है, मगर उस लडकी के देखने को
रोज एकवक्त जाती हूं, वहां से आनकर घरमें ही अ
पना दुखडा किया करती हूं। यह बात राजपुत्रने सुन
दिलमें खुश हो बुढिया से कहा कल जिसवक्त जाने ल
गे, तो एक सन्देसा हमारा भी लेती जाइयो। उसने क
हा बेटा कल पर क्या मौकुफ है, अभी मुझसे जो कुछ क
हो, तो मैं तेरा पैगाम पहुंचा दूं, तब उसने कहा तू इत
ना जाकर कह दे, कि जेठ सुदी पञ्चमी को तालब क
नारे जिस राजपुत्र को तुमने देखा था सो आ पहुंचा
है। इतनी बात के सुनते ही बुढिया लाठी हाथमें लि
ये राजमन्दिर को गई, वहां जाकर देखा कि राजकन्या
अकेली बैठी है, जब यह साम्हने पहुंची तो उसने स
लाम किया, यह असीस देकर बोली कि धिया ! बाल
कपन में तेरी खिजमत की और दूध पिलाया, अब भग
वान ने तुझे बडा किया, यह जो चाहता है, कि तेरी

जवानी का सुख देखु, तो मुझे भी चैन होवे । इसीतर ह की बातें महब्बत आमेज कर कहने लगी, कि जेठ सु दी पञ्चमी को तालव कनारे जिस कुंवरका तूने मन लिया है, सो मेरे घर आनकर बतारा है, उसने तुझे यह सन्देसा दिया है कि जो हमसे वचन किया था व ह अब पूरा करो, हम आन पहुंचे है और मैंभी यह कहती हूं कि वुह कुंवर तेरे ही जोग है जैसी तू रूप वती वैसाही वुह गुणवन्त है । ये सब बातें सुन खफा हो हाथों में चन्दन लगा वुढियाके गालों में तामाचा मारा, वुह कहने लगी कमबख्त ॥ मेरे घरसे निकल यह दिक हो उसीतरह से उठती बैठती कुंवर पास आई और सब अपना अहवाल कहा, राजकुमार सुन कर हक्का बक्का हो गया, तब दीवान का बेटा बोला म हाराज । कुछ फिक्र न कीजिये, यह बात आपके ध्यान में नहीं आई । फिर उसने कहा सच है, पर तू मुझे स मझा कि मेरे जीको चैन होवे, उसने कहा जो दशों अ ङ्गुलियां सन्दल की भरकर मुंहपर मारी तो उन्ने यह बताया, कि दशरोज चांदनीके हो चुके तो अंधेरीमें मिलूंगी, गरज दशरोजके बाद वुढियाने उसको खबर फिर आ कही, तब उसने केसर से तीन अङ्गुलिया भर उसके गालपर मारीं, और कहा निकल मेरे घरसे, आ खिर वुढिया लाचार होकर वहां से चली, और जो कुछ बीता था सो सब राजपुत्र से आकर कहा । यह

सुन्ते ही गमके दरियामें डुब गया, उसका यह अहवा ल देख फिर दीवानके बेटेने कहा अंदेशा न कर इस बात का मुद्दा कुछ और है। वुह बोला मेरी जीमें चैन है, मुझसे जलदि कहो, तब उसने कहा वुह उस हाल में है, जो महीने महीने औरत का होता है, इस लिये और तीन दिन का वअदा किया है, चौथे दिन वुह तु म्हे बुलायगी॥ गरज जब तीन दिन हो चुके तो बुढि याने उसकी तरफसे खैराफियत पुछी, तब उसने बुढिया को खफा हो पछ्म तरफ की खिडकी पास लाकर निका ल दिया, फिर यह अहवाल बुढियाने राजकुंवर से आकर कहा, वुह सुनकर उदास हुआ॥ इतने में दीवा न का पुत्र बोला, कि इस बातका ब्यौरा यह है, कि आ ज रातके वक्त तुमको उसी खिडकी की राह में बुला या है, यह सुनते ही निहायत खुश हुआ, गरज जब वु ह वक्त आया, उहे रङ्गके जोडे निकाल चुन बना पगडी यां बांध कपडे पहन हथियार सब सजा तै आर हुए, कि इस अरसे में दो पहर रात गुजर गई। उस वक्त ए क आलम सुन सान काथा, किये भी वहां से सुन सारे चुप चाप चले आते थे, जब खिडकी पास पहुंचे दीवा न का बेटा बाहर खडा रहा, और यह खिडकी के अ न्दर गया, देखता क्या है, कि राजकन्या भी वहीं खडी राह देखती है, कि इसमें इनदोनों की चार नजरें हुई तब राजकन्या हंसी, और खिडकी बन्दकर, राजकुंवर

को साथ ले रङ्गमहल में गई॥ वहां जाकर कुंवर देख ता क्या है कि जाबजा खब खब रोशन और सहेलि यां रङ्गरङ्ग की पोशाके पहने हाथ बांध बा अदब अप ने अपने रुतबेसे खडी है। एकतरफ सेज फूलोंकी बिछी है अपने अपने करीने से अतरदान पानदान गुलाब पाशें वगैरे चौघरे आरस्तः किये हुए धरे हैं और एक तरफ चोवा चन्दन अरग जा कस्तुरी केसर कटोरियों में भरा हुआ धरा है॥ कहीं अच्छी अच्छी माजूनें की रङ्गीन डिबियां चुनी हैं कहीं भांति भांति के पक वाने धरे है तमाम दर ओ दीवार न कश ओ निगारुं से आरास्तः और उनपर ऐसी सुरतें बनि हुई है कि हर एक देखते ही मोह आवे। गरज सारे ऐशत ओ तर ब के साज ओ सामान वहां है अजब समैं का आलम है कि जिसका कुछ बयान नहीं हो सकता॥ उसी मका नमें रानी पद्मावती ने राजकुंवर को ले जा बिठलायां, औ पांव धुलवा संन्दल बदन में लगा फुलोंके हार पह ना गुलाबछिडक पंखा अपने हाथसे झालने लगी इस में कुंवर बोला हम तुम्हारे देखनेसे ही ठंढे हुए इ तनी मिहनत क्या करती हो तुम्हारे ये नाजुक नाजु क हाथ पंखे के लाइक नहीं, पंखा हमें दो तुम बैठो॥ पद्मावती बोली कि महाराज आप बडी मिहनत करके हमारे वास्ते आये हैं हमें आप को खिजमत कर नी लाजिम है तब एक सहेलीने राणीके हाथ से पंखा

लेकर कहा यह हमारा काम है हम खिजमत करें औ
र तुम आपस में आनन्द करो। वे वहां पान खाने ल
गे, और इखति लात की बातें करने, कि इतने में भोर
हुई। राजकन्याने उसे छिपारखा, जब रात हुई तो
फिर बाहर ऐसे मशगूल हुए, इसी तरह से कितने
एक दिन बीत गये, राजकुंवर जब जाने का इरादा करे
तो राजकन्या जाने न दे। इसी तरह से एक महीना
गुजर गया, तब तो राजा बहुत घबराया और फिक्रमंद
हुआ, एकरोज की बात यह है, कि रातके वक्त अकेला
बैठा हुआ यह जीमें चिन्ता करता था, कि देश राज
पाट घर सब कुछ तो छूटा ही था, पर एक ऐसा दोस्त
हमारा कि जिसके बाइस से यह सुख पाया उस्से भी म
हीने भर से मुलाकात नहीं हुई, वुह अपने जीमें क्या
कहता होगा, और क्या जानिये उसपर कैसी गुजरती
होगी, इसी फिक्रमें बैठा हुआ था, कि इतने में राजक
न्या भी आन पहुंची, और उसको अहवाल देखकर पू
छने लगी, महाराज तुम्हें क्या दुख है, जो तुम ऐसे उ
दास बैठे हो, मुझे कहो, तब वुह बोला कि एक दोस्त
हमारा बहुत प्यारा दीवान का बेटा है, उसका कुछ अ
हवाल महीने भर से मालुम नहीं, वुह ऐसा चतुर प
ण्डित मित्र है, कि उसीके गुणों से मैंने तुझे पाया, औ
र उन्हीने तेरा सब भेद बताया, राजकन्या बोली महा
राज तुम्हारा चित तो वहां है, तुम यहां सुख क्या करो

गे, दूसरे बिहतर यह है कि मैं पकवन मिठाई सब कुछ तैयार करके भिजवाती हूं, आप भी सिधारिये उसको खिला पिला बहुतसी तसल्ली कर खातिर जमा से फिर आइये। यह सुन्तेही राजकुंवर वहां से उठकर बाहर आया, और रानीने विष मिलवा तरह बतरह की मिठाई बनवा कर भीजवाइ, कुंवर मंत्रीके पास आकर बैठा ही था, कि इतने में वुह मिठाई आन पहुंची॥ प्रधानके बेटेने पूछा महाराज। यह मिठाई किस तरहसे आई, राजपूत्र बोले मैं वहां तेरी चिन्तामें उदास बैठा था कि इसमें राणीने आ मेरी तरफ देखकर पूछा, उदास क्यों बैठे हो कुछ बेवरा उसका बताओ, फिर मैंने तेरे भेद चतुराई के सब उसे बयान किये, तब यह अहवाल सुनके उसने मुझे तेरे पास आनेकी इजाजत दी, और यह तेरे वास्ते भेजवाइ, जो तू इसे खायगा तो मेरा भी जी खुश होगा, तब प्रधान का बेटा बोला तुम मेरे वास्ते जहर लाये हो, इसीमें खेर हुई कि आपने नही खाइ, महाराज॥ एक बात मेरी सुनिये कि रण्डी अपने दोस्त के दोस्त को नहीं चाहती, आपने यह खूब न किया जो मेरा नाम वहां लिया। यह सुन कुंवर बोला ऐसी बात तुम कहते हो जो कभी किसू से नहो, अगर आदमी आदमी से न डरे पर भगवान से तो डरेगा। इतना कह उसने उस में से एक लड्डू कुत्तेके आगे डाल दिया, जोंही कुत्तेने खाया वैही

छटपटाके मरगया॥ यह तौर देख राजपुत्र अपने जी में गुस्से हो कहने लगा ऐसी खोटी रण्डीसे मिलना लायीम नहीं। आजतक तो मेरे दिलमें उसकी मुहब्बत थी पर अब मालूम॥ यह सुन दीवान का बेटा बोला महाराज॥ जो हुआ सो हुआ अब वुह बात किया चाहिये जिससे उसको अपने घर ले चलिये॥ राजपुत्र बोला भाई यह भी तुमहीं से होगा दीवान के बेटेने कहा आज एक काम कीजिये पर पद्मावतीके पास जाइये और जो कहुं सो कीजिये॥ पहले तो उसे जाकर बहुतसा इखलास प्यार करो जब वुह सो जावे तब उसका जेवर उतार यह त्रिसूल उसकी बाईं जांघमें मार वहां से तुरन्त चले आओ॥ यह सुन राजकुमार रातको पद्मावती पास गया और बहुतसी बातें दोस्ती की कर दोनो सो रहे लेकिन बातिन में यह काबू देखता था गरज जब राजकन्या सो गई तो उन्ने सारा गहना उतार लिया और बाईं जांघ में त्रिसूल मार अपने मकान को चला आया सारा अहवाल प्रधान के बेटे से बयान कर सब गहना उसके आगे रख दिया फिर वुह जेवर उठा राजकुमार को साथ ले योगीका भेस बना एक मसान में आ बैठ आप तो गुरु बना और उसे चेला ठहराकर उससे कहा तू बाजार में जाकर इस गहने को बेच अगर कोइ इसमें तुझे पकडे तो उसे मेरे पास ले आना॥ उसकी बात सुन राजपुत्रने जेवर को

ले शहर में आ मूलसिंह राजाकी ड्योढ़ीके एक सुना
र को दिखाया, उसने देखते ही पहचानकर कहा यह
राजकन्या की गहना है, सच कह तूने कहां पाया॥
यह उससे कह रहा था, कि दश बीस आदमी और भी
इकट्टे हो गया, गरज कोतवालने यह खबर सुन आद
मी भेज राजकुमार को मए जेवर और सुनार पकड़वा
मंगाया, और उस जेवर को देख उससे पूछा कि सच
कह यह तूने कहांसे पाया, तब उसने कहा कि मुझे
गुरूने बेचने को दिया है, पर मुझे मालूम नहीं, कि वे
कहां से लाये, तब कोतवाल ने उसके गुरुको भी पकड़
वा मंगाया, और दोनों को जेवर समेत राजाके हजुर
में लाकर तमाम अहवाल अर्ज किया। यह माजरा
सुनके राजा योगीसे पूछने लगा, कि नाथ जी यह ग
हना तुमने कहां से पाया, योगी बोला महाराज का
ली चौदश को रातको मैं मरघट में डाकिनी मंत्र सिद्ध
करने को गया था, जब वह डाकिनी आई तो मैंने उस
का जेवर उतार लिया और बाईं जांघमें उसको त्रिसु
ल का निशान कर दिया, इसतरह से यह गहना मेरे
हाथ आया है, यह बात राजा योगी से सुन महलमें
गया और योगी आसनपर। राजानें राणीसें कहा तू
पद्मावती को बाईं जांघमें देख, तो निशान है कि नहीं
और कैसा निशान है। राणीनें जाकर देखा तो त्रिसु
ल का दाग है॥ राजासे आकर कहा महाराज। तीन

निशान बराबर हैं पर ऐसा मालूम होता है गोया कि इसने त्रिशूल मारा है यह बात सुन बाहर आ राजाने कोतवाल को बुलाकर कहा जाओ योगी को ले आओ। कोतवाल हुकुम पाते ही योगीके लेनेको गया और राजा अपने मनमें चिन्ता करके कहने लगा कि अहवाल घरका और दिलका इरादा और जो कुछ नुकसान हो तो किसके आगे जाहिर करना मुनासिब नहीं कि इतने में कोतवाल ने योगी को ला हाजिर किया फिर योगी को राजाने कनारे लेजा पूछा कि गोसाईं जी धर्मशास्त्र में स्त्री के वास्तेक्या दण्ड लिखा है तब योगी बोला महाराज ब्राह्मण गौ स्त्री लडका और जो कोई अपने आसरे में हो अगर उनमें जिस किससे कुछ खोटा काम हो तो उनके वास्ते यह दण्ड लिखा है कि देश निकाला दीजिये। यह सुनके राजाने पद्मावती को डोलीमें सवार करवा एक जङ्गलमें छुडवा दिया फिर अपने मकान से राज कुमार और दीवान का बेटा दोनों घोडेपर सवार हो उस बनमें आ राणी पद्मावती को साथ ले दोनों अपने शहरको चले बाद चंद रोजके अपने बापके पास जा पहुंचे सब छोटे बडे को निहायत खुशी हुई और ये बाहम ऐश करने लगे। इतनी बात कह बैताल ने राजा बीर बिक्रमाजीतसे पूछा उन चारोंमें पाप किसको हुआ

जो तुम इस बात का न्याय न करोगे तो तुम नरक में पडोगे॥ राजा विक्रम बोला उस राजा को पाप हुआ, बैतालने कहा राजाको किसतरह से पाप हुआ, विक्रमने यह उसको जवाब दिया, कि दीवान के बेटेने तो अपने खाविन्द का काम किया, और कोतवालने राजाका हुकुम माना, और राजकुमार ने अपना मकसद हासिल किया, इससे यह पाप राजाको हुआ, कि बिना बिचारे उसे देश निकाला दिया, इतनी बात राजाके मुंहसे सुन बैताल उसी दरखत पर जा लटका॥ १॥

॥ दूसरी कहानी ॥

राजा देखे तो बैताल नहीं है फिर उलटा फिरा और उस जगह पहुंच, दरखत पर चढ उस मुरदे को बांध कांधे पर रखके ले चला, तब बैताल बोला, कि राजा दूसरी कथा यों है, कि यमुनाके तीर धर्मस्थल नाम एक नगर है, कि जहांका गुणाधिप, नाम राजा, और वहां केशव नाम ब्राह्मण है, कि वुह यमुनाके कनारे जप तप किया करता था, और उसकी बेटीका नाम मधुमावती वुह बडी खूब सूरत थी, जब ब्याहन योग हुई, तब उसके माता पिता भाई तीनों उसकी शादी की फिक्रमें थे, इत्तिफाकन् एक रोज उसका बाप किसी अपने जजमानके साथ शादीमें कहीं गया था

और भाई उसका एक रोज गांव में गुरुके यहां पढने गया कि पीछे उनके घरमें एक ब्राह्मण का लडका आया उसको माने उस लडकेका गुण रूप देखकर कहा मै अपनी लडकी की शादी तुझसे करूंगी और वहां ब्राह्मणने बेटेको बेटी देनी कबूल की और उसकेबेटेने जहां पढने गया था वहां एक ब्राह्मण से वचन हारा कि अपनी बहन तुझे दूंगा कितने दिनोंके पीछे दोनों उस दोनों लडकों को साथ ले आये और यहां तीसरा लडका आगेसे बैठा था एक का नाम त्रिविक्रम दूसरे का नाम वामन तीसरे का नाम मधुसूदन वे तीनों रूप गुण विद्या बैसमें बराबर थे उन्हों को देख ब्राह्मण चिन्ता करने लगा कि एक कन्या और तीन वर किसे दूं किसे न दूं और हम तीनोंने इन तीनों से वचनहारा है अजब तरह की बात पेश आई क्या कीजिये। इस फिक्र में बैठा था कि इतने में उस लडकी को सांपने डंसा वुह मर गई॥ यह खबर सुन के उसका बाप भाई वे तीनों लडके पांचों मिलकर बडी दौड धूपकर गुनी गारुडू जितने मंत्रसे विषके झाडनेवाले थे उन सबको लाये उन सभोंने उस लडकी को देखकर कहा यह जीवेगी नहीं पहला योंबोला कि पञ्चमी छट अष्टमी नवमी चौदश इन तिथों में सांपका काटा आदमी जीता नहीं दूसरा बो

ला शनीचर, मङ्गलवार, का डंसा हुआ भी जीता नहीं तीसरा बोला रोहिणी, मघा, अश्लेषा, विशाखा, मूला कृत्तिका, इन नक्षत्र का विष चढा हुआ उतरता नहीं । चौथा बोला इन्द्री अधर कपोल, गला, कोख, नाभी इन अङ्गों का काटा हुआ बचता नहीं । पांचवा बोला यहां ब्रह्मा भी जीया नहीं सकता, हम किस गिनती में हैं, अब आप उसकी गति कीजिये, हम बिदा होते हैं, यह कहकर गुनी तो चले गये और ब्राह्मण उस मुरदे को ले जा मसान में फेंक आप तो चला गया, फिर उसके पीछे उन तीनों जवानोंने यह किया, कि एक तो उनमें से उसकी जली हुई हड्डियों को चुन बांध फकीर हो बन बन की सैर को गया दूसरे ने उसकी राख की गठरी बांध वहीं झोंपड़ी बना रहने लगा, तीसरा योगी हो झोली कंथा ले देश विदेश फिरने लगा एक दिन किसु देशमें एक ब्राह्मण के घर भोजनके लिये गया, वुह गृहस्थी ब्राह्मण उसे देखके कहने लगा, अच्छा आज यहीं भोजन कीजिये यह सुनके वहां बैठ गया, जिसवक्त रसोई तैयार हुई, उसकों हाथ पांव धुला लेजा चौके में बिठा आप भी उसकें पास बैठ गया और उसकी ब्राह्मणी परोसन को आई, कुछ परोस गई कुछ परोसना बाकी था, कि इतने में उसकें छोटे लडकेने रोकर अपनी मांका आंचल पकडा, वह

छुडाती थी और लडका न छोडता था, और जों जों यह भुलाती थी वुह दूना दूना रोता और हट करता था इससे उस ब्राह्मणी ने खफा हो लडके को जलते चूल्हे में उठा कर फेंक दिया, वुह लडका जलकर खाक हो गया, यह अहवाल जब उस ब्राह्मणने देखा तो बिना खाये उठ खडा हुआ, तब वुह घरवाला बोला कि तू किसवास्ते भोजन नहीं करता, वुह बोला कि जिसके घरमें ऐसा राक्षस काम हो उसके घरमें किसत रह से कोई भोजन करे, यह सुन वुह गृहस्त उठकर एक और तरफ अपने घरमें गया, और संजीवनी विद्या की पोथी ला, उसमें से एक मंत्र निकाल जपकर लडके को जीला दिया ॥ तब वुह ब्राह्मण यह अजाइब देख अपने जीमें चिन्ता करने लगा, जो यह पोथी मेरे हाथ लगे तो मैं भी अपनी प्यारीको जीलाऊं यह अपने मनमें ठान, रसोई खावहीं रहा। गरज जब रात हुई तो कितनी एक देरके पीछे सबने ब्यालु किया और अपनी अपनी जगह जा लेटे उधर इधर की आपस में बातें करते थे, यह ब्राह्मण भी एकतरफ जाकर पडा रहा, लेकिन पडा पडा जागता था, जब उन्ने जाना कि बडी रात गई और सब सो गये, तब चुपका उठ आहिस्ते आहिस्ते उसके घर में पैठ वुह पोथी ले चल दिया और कितने दिनों में जिस मसान में कि उस ब्राह्मण की बेटी को जलाया था, वहां आन पहुंचा, उन दोनों

ब्राह्मणों को भी वहीं पाया कि आपस में बैठे हुए बा
तें करते हैं। उन दोनों ने भी उसे पहचान उसके पा
स आ मुलाकात की और पूछा कि भाई तुम देश बिदे
श तो फिरे यह कहो कि कोई बिद्या भी सीखी वुह बो
ला मैं ने मृत्य संजीवनी बिद्या सीखी है यह सुनते ही
बोले जो सीखे हो तो हमारी प्यारीको जी लाओ उ
सने कहा कि राख हाडका ढेर करो तो मैं जी ला दूं
उन्होंने राख हड्डियां इकट्ठी कर दीं तब उसने पो
थीमें से एक मंत्र निकाल जपा वुह कन्या जी उठी
फिर उन तीनों को काम देवने यह अंधा किया कि
आपस में झगड ने लगे। इतनी बात कहकर बैताल
बोला ए राजा यह बता कि वुह स्त्री किसकी हुई रा
जा बिक्रम बोला कि जो मंढी बांधकर रहा था वुह
नारी उसी की हुई बैताल बोला जो वुह हाड न रख
ता तो वुह किसतरह से जीती और दूसरा बिद्या न
सीख आता तो वुह क्यों कर उसे जी लाता राजाने
जवाब दिया कि जिसने उसकी हड्डियां रखी थीं वु
ह तो उसके बेटे की जागह हुआ और जिसने जीवदा
न दिया वुह गोया उसका बाप हुआ इससे वुह जोरू
उसी की हुई कि जोराख समेत झोंपडी बांध वहां र
हा यह जवाब सुनके बैताल फिर उसी दरखत में जा
लटका राजा भी उसके पीछे पीछे जा पहुंचा और उ

से बांध कांधेपर रख फिर ले चला ॥ २ ॥ ※—※※

॥ तीसरी कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा बर्द्वान नाम एक नगर है, उस में रूपसेन नाम एक राजा, एक रोज का इत्तिफ़ाक़ है, कि वुह राजा अपनी ड्योढ़ीके मुत्तसिल किसी मकान में बैठा था कि दरवाज़े के बाहार से कुछ ऊपरी लोगों की आवाज आने लगी, राजा बोला कि दरवाजे पर कौन है और क्या शोर हो रहा है इसमें दरवान ने जवाब दिया, महाराज आपने यह भली बात पूछी दौलतमन्द की ड्योढ़ी जान धनके लिये बहुतेरे आदमी आन बैठते हैं, और भांति भांति की बातें करते हैं उन्हीं लोगों का यह शोर है। यह सुन राजा चुप हो रहा, इतने में एक मुसाफ़िर दक्षिण दिशा से बीरबर नाम राजपूत चाकरी करने की आश किये राजा की ड्योढ़ी पर आया, दरवान ने उसका अहवाल मालूम करके राजासे कहा महाराज एक शख़्स हथयार बन्द चाकरी करने के आसरे पर आया है, सो दरवाजे पर खड़ा है महाराज की आज्ञा पावे तो वुह रूबरू आय, यह सुन राजाने फ़रमाया कि ले आ, यह उसे जाकर ले आया, तब राजाने पूछा ऐ राजपूत तेरे तईं रोज़ ख़रच को क्या कर दूं यह सुन के बीरबर बोला हज़ार तोले सोना मुझे रोज़ दो, तो मेरी गुज़रान हो रा

जाने पूछा तुम्हारे साथ लोग कितने हैं उसने कहा ए क स्त्री दूजा बेटा तीजी बेटी चौथा मैं पाञ्चवां हमारे साथ कोई नहीं उसकी यह बात सुन राजा की सभा के लोग सब मुंह फेर फेर के हंसने लगे पर राजा अ पने जीमें सोच करने लगा कि बहुत धन इसने किस वास्ते मांगा फिर आपही मनमें समझा, कि बहुत धन दिया हुआ किसी रोज सुफल होयगा, यह विचार क रके राजाने भाण्डारी को बुलाकर कहा, हमारे खजा ने से हजार तोले सोना इस बीरबर के तई रोज दि या करो यह परवानगी सुन बीरबरने हजार तोले सोना उस दिनको ले अपनी जगह ला दो हिस्साकर आधा तो ब्राह्मणों को बांटा और आधे को फिर दो बांटकर एक बखरा उससे अतिथी बैरागी फकीर स न्यासीयों को बांट दिया और बाकी जो एक हिस्सा र हा, उसका खाना पकवा गरीबों को खिला दिया बाकी जो कुछ रहा वुह आप खाया इसीतरह से हमेशः जो रु लडकों समेत अपनी गुजरान करता था लेकिन शा मको वक्त रोज ढाल तलवार ले राजाके पलङ्गकी चौकी में जा हाजिर रहता और राजा जब सोते से चौंकर पुकारता कि कोई हाजिर है तो यही जवाब देता कि बीरबर हाजिर है जो हुकुम इसीतरह राजा जब पुका रता तो यही जवाब देताकिफिर इससे जो कामकर माता
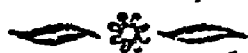
सोयही नशा खाता, इसीतरह धनके लालच से रातभ र सुचेत रहता, बल्कि खाते पीते सोते बैठते चलते फिरते आठपहर अपने खाविन्द की याद में रहता, री त यह है कि कोई किसुको बेचता है तो बिकता है पर चकरीया चाकरी करके अपने तई आप बेचता है, औ र जब बिका, तो ताबि अदार हुआ, जो परबस हुआ तौ वैसे सुख कहां, मशहूर है कैसा ही चतुर आकिल पण्डि त होय, लेकिन जिस वक्त अपने खाविन्द के सान्हने हो ता है तो डरके मारे गूंगे के बराबर चुप ही रहता है अम लखक तफावुत से है चैन से है, इसीवास्ते पण्डित लोग कहते हैं, कि सेवा धर्म्म करना योगधर्म से भी क ठिन है, एकरोज का जिक्र है, कि इत्तिफाकन रातके व क्त मरघट से रण्डी के रोने की अवाज आई, राजा सु नके पुकारा कोई हाजिर है, वीरवर सुनते ही बोला हाजिर जो हुकुम, फिर राजाने यों हुकुम किया जहां से औरत के रोने की आवाज आती है, वहां जाओ और उससे रोने का सबब पूछकर जल्द आओ, राजा यह उसे फरमा दिलमें कहने लगा कि जिस किसी को चाकर अपना आजमाना हो तो वक्त बे वक्त उसे काम को कहे अगर वह हुकुम उसका नशा खाये तो जानिये कामका है, और जो तकरार करे तो जानिये नाकारा

और इसी तरह से भाइयों को दोस्तों को बुरे वक्त में प रखिये, और स्त्री को नादरी में, जांचिये गरज यह हुकु म पाकर उसके रोने की आवज की धुनपर गया, और राजा भी उसका साहस देखने के लिये काले कपडे पह न कर पीछे पीछे बेताल्लुस चला, कि इतने बीरबर आ पहुंचा उस मरघट में जहां रण्डी रोती थी देखता क्या है, की एक औरत खूबर सूरत सिरसे पांवतलक गहने से लदी हुई डाढें मार रो रही है. कभी नाचती कभी कूदती कभी दौडती है आंखों में आसू एक नहीं. लेकि न सिर पीटपीटहाय हायकर जमीनपर पटकनिया खा ती है, उसका यह अहवाल देख बीरबरने पूछा तू क्यों इसकदर रोती पीटती है, तू कौन है और तुझपर क्या दुख है, तब वुह बोली कि मैं राज लक्ष्मी हूं, बीरबर ने कहा तू किस कारण रोती है, फिर उस ने अपनी अव स्था बीरबर से कहनी शुरू किया, कि राजा के घरमे शूद्र कर्म होता है, जिससे उसके घरमें अलक्षी आवेगी और मै उसके घरसे जाऊंगी, बाद एक महीने के राजा निपट दुख पाके मर जायगा, इस दुखसे रोती हूं, और मैंने उसकेघरमें बहुत सुख किया है, इसवास्ते यह पछ ताया है, और यह बात किसी तरहसे झुठ न होगी, फिर बीरबर ने पूछा उसका कुछ ऐसा भी इलाज है कि जिससे राजा बचे, और सौ बरस जीये वह बोली पूरब

और एक योजन पर देवी का मन्दिर है, जो तू उस देवी को अपने बेटे का शिर अपने हाथ से काटकर दे तो राजा सौ बरस इसी तरह से राज करे, और किसी तरह का खलल राजा को न होय, यह बात सुनते ही बीरवर अपने घरको चला, और राजा भी उसके पीछे हो लिया, गरज जब वुह घरमें आया तो अपनी जोरू को जगा सब अहवाल शहर बार कहा, उन्ने यह अहवाल सुन जगाया तो बेटे को पर बेटी भी जागी, तब उस औरत ने लडके से कहा, कि बेटा तुम्हारा सिर देने से राजा का जी बचता है, और राज भी कायम रहता है, यह सुन वुह बालक बोला माता एक तो आपकी आज्ञा दूसरे स्वामी का काज, तीसरे, यह देह देवता के काम आवे तो इससे अच्छी कोई बात दुनियां में नहीं है, मेरे नजदीक अब इस काम में देर करनी मुनासिब नहीं, मसल है कि पुत्र होवे तो अपने बसका, और काया निरोग, विद्या से लाभ, मित्र चतुर, नारी कुकुम बरदार, जो ये पांचबातें आदमी के अखितयार हो तो सुखका देनेवाली और दुखको दूर करनवाली है, अगर चाकर बेमरजी, और राजा बखील, दोस्त कपटी, और जोरू बेफरमान हो तो ये चार बातें आराम की दूर करने वाली और दुखकी देने वाली है, फिर बीरवर अपनी स्त्रीसे कहने लगा जो तु खुशीसे अपने लडके को दे तो मैं ले जा राजा के लिये देवी के आगे बल

ई वुह बोली की मुझे बेटा बेटी भाई बन्धु मा बाप किससे कुछ काम नहीं मेरी गती तुम्ही से है और ध र्मशास्त्र में भी योंही लिखता है कि नारी न दान से न व्रत से सुध होती नहीं लङ्गाडा लुला गुङ्गा बहरा अंधा काना कोढी कुबडा कैसा ही उसका खामी हो उसको उसी की सेवा करने से धर्म है अगर किसीतर ह का दुनियां में धर्म कर्म करे और खाविन्द का हु कुम न माने तो दोजक में पडे उसका बेटा बोला पि ता जिस आदमी से खाविन्द का काम होवे जगत में उ सीका जीना सुफल है और उसने दोनों जहान में भ ला है फिर उसकी लडकी बोली जो मां देवै बिष ल डकी को और बाप बेचे पुत को और राजा ले सर्व्व स्व छिनाय तो पनाह किसकी ले ऐसा कुछ ए चारों आपसमें बिचार करके देवीके मन्दिर को गये राजा भी छिपकर उनके पीछे चला जब बीरबर वहां पहुं चा तो मन्दिर में जा देवी की पुजाकर हाथ जोड क हने लगा हे देवी मेरे पुत्र के बल देने से राजा की सौ बरसकी उमर होय इतना कह एक खांडा ऐसा मारा कि लडके का सिर जमीनपर गिर पडा भाई का मर ना देख उस लडकी ने अपने गले में एक खड्ग मा रा तो रुण्ड मुण्ड जुदे हो कर गिर पडा बेटे बेटी को मुआ देख बीरबर की स्त्रीने तलवार अपनी गर्दन पर मारी कि धडसे सिर जुदा हो गया फिर

उन तीनों का मरना देख बीरबर अपने मनमें चिन्ता कर कहने लगा, कि अब लड़के भी मर गये, तो नौकरी किसके वास्ते करूंगा, और सोना राजा से ले किसे दूंगा, यह सोचकर एक शमसेर ऐसी अपनी गरदन पर मारी कि तन से सिर जुदा हो गया, फिर उन चारों का मरना देख राजानें अपने दिलमें कहा कि मेरे वास्ते इसके कुटुम्ब की जान गई, अब ऐसे राज करने को लानत है, कि जिसके लिये एकका सर्वनाश होवे, और एक राज करे, ऐसा राज करना धर्म्म नहीं है, यह विचारकर राजाने चाहा कि खांडा मार मरूं, इतने में देवीने आनके हाथ पकड़ा और कहा, कि पुत्र मैं तेरे साहस पर प्रसन्न हुई, जो तु मुझसे बर मांगे सो मैं दूं, राजाने कहा माता जो तू प्रसन्न हुई है, तो इन चारोंको जिला दे, देवीने कहा, यही होवेगा, और यह कहते ही भवानीने पाताल से अमृत ला चारों को जिला दिया, बाद उसके राजाने आधा राज अपना बीरबर को बांट दिया, इतनी बात कह बैताल बोला धन्य है उस सेवकको कि सवास्ते स्वामी के लिये अपने जीव और कुटुम्ब का दरद न किया, और धन्य है उस राजाको कि जिसने राज और अपने जीव का कुछ लालच न किया, ऐ राजा मैं तुमसे यह पूछता हूं, उन पांचों में किसका सत सरस हुआ, तब राजा विक्रमाजीत बोला कि राजा का सत अधिक हुआ, बैताल बो

खा किस कारण, तब राजाने जवाब दिया कि खाविन्द के वास्ते जी देना चाकर को उचित है, क्यों कि उसका यही धर्म है, लेकिन राजाने जो चाकर के लिये राज पाट छोड़ जानको तिनके के बराबर जाना इस बाइस से राजा का सत सिवाय हुआ, इतनी बात सुन बैताल फिर उसी समशानके दरखत में जा लटका ॥ ३ ॥
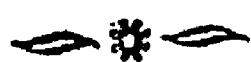
॥ चौथी कहानी ॥

राजा वहां जा फिर बैताल को बांधकर ले चला तब बैताल बोला कि ऐ राजा भोगवती नाम एक नगरी है वहां का राजा रूपसेन और चुड़ामन नाम एक तोता उसके पास है, एकदिन उस तोते से राजाने पूछा तू क्या क्या जानता है, तब सुगा बोला कि महाराज मैं सब कुछ जानता हूं, राजाने कहा जो तू जानता है, तो बतला कि मेरे बराबर सुन्दर नायका कहां है, तब उस तोते ने कहा महाराज मगध देश में मगधेश्वर नाम राजा है, और उसकी बेटीका नाम चन्द्रावती, तुम्हारी शादी उसके साथ होवेगी, वुह अति सुन्दर है, और बड़ी पण्डित, राजाने उस तोते से यह बात सुन, एक चन्द्रकान्त जोतिषी को बुलाकर, पूछा कि हमारा व्याह किस कन्यासे होवेगा, उसने भी अपने नजूमके इलमसे, मालूम करके कहा, चन्द्रावती नाम एक कन्या है, उसके

साथ तुम्हारी सादी होवेगी, यह बात राजाने सुन एक ब्राह्मण को बुलाया, सब कुछ समझा, राजा मगधेश्वर के पास भेजने के वक्त यह कहा, अगर हमारे व्याह की बात पक्की कर आवोगे तो हम तुम्हें खुस करेंगे यह बात सुन ब्राह्मण रुखसत हुआ, और वहां मगधेश्वर राजा की बेटी के पास एक मैना थी कि उसका नाम मदनमंजरी था, इसी तरह से उस राजकन्याने भी एकदिन मदनमंजरी से पूछा कि मेरे लाइक सौहर कहां है, तब सारि का बोली भोगवती नगरी का राजा रूपसेन है, सो तेरा पति होगा, गरज अब देखो एक का एक फरफतः हुआ था, कि चंदरोजके अरसे में वह ब्राह्मण भी वहां आ पहुंचा, और उस राजासे अपने राजा का संदेसा कहा, उसने भी उसकी बात मानी, और अपना एक ब्राह्मण बुलवा, उसे टीका और सब रसुम की चीजें सौंप उसी ब्राह्मणके साथ भेजा, और यह कह दिया कि तुम हमारी तरफ से जाकर बिनतीकर राजाको तिलक देके जल्दी चले आओ, जब तुम आओगे तब हम शादी की तैयारी करेंगे, अलकिस्सः ये दोनों ब्राह्मण वहां से चले, कितने एकदिनों में राजा रूपसेन के पास आन पहुंचे, और सब अहवाल वहां का कहा, यह सुन राजा खुश हो सब तैयारी कर व्याह करने को चला, बाद चंदरोज के उस देशमें पहुंच शादी कर दान दहेज ले राजा से बिदा हो अपने देशको चला, राज

कन्याने भी चलते वक्त मदनमंजरी का पिंजरा साथ ले लिया, कितने दिनों के पीछे अपने देशमें आन पहुंचे, और सुख से अपने मन्दिर में रहने लगे, एक दिन की बात है, की दोनों पिंजरे तोते मैनाके गद्दीके पास धरे हुए थे, की राजा राणी आपस में कहने लगे अकेले रहने से किसुका दिन नहीं कटता; इसमें बिहतर यह है की तोते मैनाकी बाहम शादीकर दोनोंको एक पिंजरे में रखिये तो येभी सुखसे रहें, आपसमें इस तौर की बातें कर एक बडासा पिंजरा मंगवा दोनों को उसमे रखा, चंदरोज के बाद राजा राणी आपसमें बैठे कुछ बातें करते थे कि तोता मैना से कहने लगा कि दुनिया में भोग असल है, और जि जगतमें पैदा होके भोग नहीं किया, उसका जनम नाहक गया, इसे तू मुझे भोग करने दे, यह सुनके सारिका बोली मुझे पुरुष की इच्छा नहीं, तब उसने पूछा किस लिये, मैना बोली कि पुरुष पापी अधर्मी दगाबाज स्त्री हत्या करनेवाले होतेहै, यह सुनके तोते ने कहा कि नारी भी दगाबाज झूठी बेवकुफ लालची, हत्यारी, होती है, जब इसतरह से दोनों झगडने लगे, तो राजाने पुछा तुम किसवास्ते आपसमें झगडते हो, मैना बोली महाराज पुरुष पापी स्त्री घातक करते है, इसवास्ते मुझे पुरुषकी चाह नहीं। महाराजमें एकबात कहतीहुं, आप सुनिये कि मर्द ऐसे होतेहैं। इलापुर नाम एक नगर और वहां

महाधन नाम एक सेठ था कि उसके औलाद न होती थी, वुह इस वास्ते हमेशः तीर्थ व्रत करता और नित्य पुराण सुनता ब्राह्मणों को बहुतसा दान दिया करता। गरज़ कितनी मुद्दत में भगवान की मरजी से उस साह के एक लडका पैदा हुआ। उन्ने बडी धूम से उसकी शादी की और ब्राह्मणों को भाटों को बहुत सा दान दिया, और भूखे प्यासे कङ्गालोंको भी बहुत कुछ दिया, जब कि वुह पांच बरस का हुआ तो उसे पढने को बिठाया, वुह यहां से तो पढने को जाता और वहां जाकर लडकों में जुआ खेला करता। बाद चन्दरोजके वुह साह मर गया, और यह मुख्तार हो, दिन को तो जुआ खेला करता, और रात को रण्डीबाजी। इसी तरह से कई बरस में अपना सारा धन खोलाचार हो देशसे निकल खराब होता हुआ चन्द्रपुर नगर में जा पहुंचा। वहां हेमगुप्त नाम एक साहूकार था, कि उसके बहुत दौलत थी, यह उसके पास गया और अपने बाप का नाम निशान बताया, वुह सुनते ही खुश हुआ, उससे उठकर मिला, और पूछा तुम्हारा आना क्यों कर हुया, तब यह बोला कि मैं जहाज ले एक द्वीपमें सौदागरी को गया था, और वहां जा उस मालको बेंच, और माल को भरती कर, जहाज ले अपने देश को चला, नागह ए

क ऐसा तूफान आया कि जहाज तबाह हो गया और मैं एक तख्ते पर बैठा रह गया सो बहता बहता यहां तलक आन पहुंचा हूं लेकिन शर्म आती है कि माल दौलत तो सब जाती रही अब मैं इस हालत से अपने शहर के लोगों को क्या मुंह जाकर दिखाऊं। गरज जब इसी तरहकी बातें इसने उसके आगे कही तब वुह भी मनमें बिचार ने लगा कि मेरा फिक्र भगवान ने घर बैठे ही मिटा दिया और ऐसा संयोग भगवान जी की कृपा से बन पडता है अब देर करनी मुनासिब नहीं। सबसे बिहतर यह है कि कन्या के साथ पीले कर दीजिये जो कुछ इस वक्त हो सो बिहतर है, और कल की किसे खबर है। ऐसा कुछ अपने जीमें मनसुबाः बांध सि ठानी पास आ कहने लगा कि एक सेठका लडका आया है जो तुम कहो तो रत्नावती का ब्याह उससे कर दें। वुह भी सुन खुश हो बोली कि साह जी ऐसा संयोग जब भगवान बनाता है तब बनाता है क्यों कि घर बैठे मन की कामना पूरी हुई इससे बिहतर यह है कि देर मत करो और जल्द पुरोहित को बुलवा लगन सुधवाय शादी कर दो तब उस सेठ ने ब्राह्मण को बुलवा शुभ लगन महूरत ठहराय कन्या दान कर बहुत सा दहेज दिया। गरज जब ब्याह हो चुका तो वहीं बाहम रहने लगे फिर कितने एक दिनों के पीछे साह की बेटी से उनने कहा हमें तुम्हारे

देशमें आये हुए बहुत दिन हुए, और अपने घर बार को कुछ खबर नहीं, इससे हमारा चित्त बहुत उदास रहता है, हमने सब अहवाल अपना तुमसे कहा, अब तुम्हें यह चाहिये कि अपनी मांसे इस तरह समझा कर कहो कि वे राजी हो हमें बिदा करें, तो हम अपने शहर को जावें, तुम्हारी इच्छा हो तो तुम भी चलो। तब उसने अपनी मां से कहा कि बालम हमारे अपने देश को बिदा हुआ चाहते हैं, अब तुम भी वह करो, कि जिसमें उनके जी को दुख न होवे, सिठानी ने अपने स्वामी के पास जाकर कहा, तुम्हारा दामाद अपने घर जाने को बिदा मांगता है, यह सुनकर साहकार बोला अच्छा बिदा कर देंगे, क्यों कि बिराने पुत पर कुछ अपना जोर नहीं चलता, जिस में उसको खुशी होगी वही हम करेंगे, यह कह अपनी बेटी को बुलाकर पुछा तुम अपनी बात कहो, ससुराल जाओगी या पीहर में रहोगी, इसमें लड़की ने शरमाके जवाब न दिया, उलटी फिर आई और अपने खाविन्द से आनके कहा, हमारे माता पिता कह चुके हैं, कि जिस में उनको खुशी होगी वुह हम करेंगे, तुम हमें मत छोड़ जाइयो, गरज उस सेठ ने अपने दामाद को बुला बहुत सी दौलत दे बिदा किया, और लड़की को भी डोली एक दासी समेत साथ कर दिया, तब ठग वहां से चला, जब एक जङ्गल में पहुंचा, उसने साहकी बेटी से कहा, यहां बहुत

डर है,जो तुम अपना सब गहना हमें उतार दो,तो हम अपनी कमर में बांध ले,फिर आगे जब शहर आवेगा तुम पहन लेना,उन्ने सुनते ही सब जेवर उतार दिया, और उस ने जेवर ले,कहारों को बिदाकर दासी को मार,कुए में डाल दिया,और उसको भी जोर से कुए में ढकेल सब गहना ले,अपने देशको चला गया,इतने में एक मुसाफिर उस राहमें आया,और रोने की आवाज सुनकर खडा हो अपने जीमें कहने लगा,कि इस जङ्गल में आदमी के रोने की आवज कहां से आई,यह विचार कर उस रोने की आवाज की ओर को चला कि एक कूआं नजर आया उसमें झांका तो देखता क्या है,कि एक स्त्री रोती है,तब उस औरतको निकाल अहवाल पूछ ने लगा,कि तू कौन है और किस तरह से इसमें गिरी,यह सुनके उसने कहा मैं हेमगुप्त सेठकी बेटी हूं,और अपने वालम के साथ उसके देश को आती थी,कि इसमें चोरोंने आ घेरा और मेरी दासी को मार मुझे कुए में डाल दिया,और गहने समेत मेरे शोहर को बांधकर ले गये,न उनकी मुझे खबर है,न मेरी उन्हें॥ यह सुन वुह बटोही उसें साथ लें आया। और उस सेठके द्वारे पर पहुंचाय। गया,यह अपने मां बापके पास गई,वे उसेदेखकर पूछनेलगे,कहु तेरी क्या गति हुई,उसनें कहा,हमें राहमें आनके चोरोंनेलूटाऔर दासीको मार कूए में डाल,मुझें एक अंधे कूए में ढकेल

दिया और मेरे शौहर को गहने समेत बांध के ले च
ले अब और धन मांगने लगे तब उसने कहा जो कुछ
था सो तुमने लिया अब मेरे पास क्या है आगे यह मु
झे खबर नहीं कि उसे मारा या छोडा, तब उसका बाप
बोला झिया तू फिक्र मतकर तेरा स्वामी जीता है भ
गवान चाहे तो थोडे दिनोंमें आन मिले क्यों कि चो
र धनके गाहक होते हैं जी के गाहक नहीं । गरज
उस साहने जो जो गहना उसका गया था उसके बद
ले और आभूषण देकर बहुत सा दिलासा दिलवरी
कि और वुह साहका लडका भी अपने घर पहुंच सब
जेवरको बेच दिन रात रण्डीबाजी करने लगा, और
जुआ खेलने लगा, यहां तलक कि सब रुपै तमाम हुए
तब रोटी को मुह ताज हुआ, आखिर जब निहायत
दुख पाने लगा, तो अपने मनमें एक दिन विचारा कि
सुसराल घर जाके, यह बहाना कीजिये, कि तुम्हारे
नवासा पैदा हुआ है उसकी बधाई देने को मैं आया
हुं यह बात अपने जीमें ठानकर चला, कई दिनमें व
हां आ पहुंचा। जब उसने चाहा कि घरमें पैठें साम्ह
ने से उसको स्त्रीने देखा, कि मेरा शौहर आता है, ए
सा न होकि अपने जीमें डरकर, फिर जावे इसमें उस
ने नजदीक आय कर कहा स्वामी तुम अपने जीमें
किसी बातकी परवा मतकरो मैंने अपने बाप से कहा
है कि चोरोंने आनके दासी को मारा और मेरा जेवर

उतरवा मुझे कुए में डाल मेरे खाविन्द को बांध ले ग ये, यही बात तुम भी कहियो, कुछ चिन्ता न करो घर तुम्हारा है, और मैं दासी हूं। यह कहकर वह घरमें च ली गई यह उस सेठके पास गया, उसने उठकर गले ल गा, सब अहवाल पूछा, जिस तरह उसको जोरू समझा गई थी, इसने उसी तरह से कहा, सारे घर में खुशी हुई, फिर सेठने उसे अश्नान करवा रसोई जिमाय बहुत सा निहोरा करके कहा, कि यह घर तुम्हारा है, आन न्द से रहो, यह वहां रहने लगा। गरज कितने एक दिनोंके बाद रातके वक्त वह साहको बेटी गहनापहने हुए उसके पास सोनेको आई, और सो गई, जब दो प हर रात हुई, उन्ने देखा, कि यह गाफ़िल सो गई है, तब एक छुरी ऐसी उसके गले में मारी, कि वुह मर गई और सारा गहना उसका उतार, अपने देशको राहली, इतनी बात कह, मैना बोली महाराज यह मैं ने अप नी आंखों से देखा, इसवास्ते मुझे मरद से कुछ काम नहीं, महाराज देखो तो पुरुष की जात ऐसी बाटपार होती है, कौन ऐसेसे दोस्तीकर अपने घरमें सांप पाले महाराज आप इसे विचारिये कि उस रंडीने क्या गुना ह किया था। यह सुनके राजाने कहा ए तोते रण्डी में ऐब क्या है तू मुझसे कह। तब वुह फोर बोला महाराज सुनिये॥

कंचनपुर एक नगर है वहां सागरदत्त नाम एक सेठ

उसके बेटेका नाम श्रीदत्त और एक नगर का नाम ज यश्रीपुर वहां का सोमदत्त नाम एक सेठ था, और उस की बेटीका नाम जयश्री, वुह उस सेठके बेटे को ब्या ही थी, और लड़का किसी मुलुक में सौदागरी के वा स्ते गया था, वुह अपने मां बाप के यहां रहती थी॥ ग रज जब उसे सौदागरी में बारह बरस गुजर गये। औ र वुह यहां जवान हुई, तो एक रोज सखी से कहने लगी ऐ बहिन मेरा जोबन योंही जाता है, संसार का सुख मैंने अब तलक कुछ नहीं देखा, यह बात सुनके सखीने उससे कहा, तू अपने जीमें धीरज धर भगवान चाहे तो तेरा शौहर जल्द आ निकलता है॥ इस बात को सुनकर गुस्से हो, अटारी पर चढ भरोखे से भांकी, तो देखती क्या है, कि एक जवान चला आता है, नज़ दीक आया तो इसकी और उसकी एका एक चार न ज़रें हुई, दोनों का दिल मिल गया, तब इसने अपनी स खीसे कहा, कि उस शकसको मेरे पास ले आ, यह सुन सखीने, उसे जाकर कहा, कि सोमदत्त की कन्या, ने तु म्हें एकान्त में बुलाया है, पर तुम मेरे घर आइयो, फि र अपने घरका पता उसको बता दिया, उसने कहा कि रातको मैं आऊंगा, सखीने यह सेठकी लड़की से आ कर कहा, कि उसने रातके वक्त आनेको कहा है॥ यह सुनके जयश्री ने सखी से कहा, कि तू अपने घरमें जा जब वुह आवे मुझे खबर करना तो मैं भी घरसे सुचि

त होके चलूंगी, सखी उसकी बात सुनके, अपने घर गई, द्वारे पर बैठके उसकी राह ताकने लगी, इतने में वुह आया इन्ने उसे अपनी डिह्रुडी में बिठाकर, कहा तुम यहां बैठो मैं जाकर तुम्हारी खबर करती हुं, और आकर जयश्री सेकहा, तुम्हारा प्रीतमने आन पहुंचा है। यह सुनके उन्ने कहा जरा ठहर आ घरके लोगसो आवें तो मैं चलूं, फिर कितनी एक देर बाद जब आधी रातका अमल हुआ, और सब सो गये, तब यह चुपकेसे उठकर उसकें साथ चली, और एक छिन में वहां आन पहुंची और वे इखतियार दोनोंने उसकें घर में मुलाकात की, जब चारघडी रात बाकी रही, यह उठकर अपनें घरमें आनकें चुप, चुपाती सो रही और वुह भी भोरकें वक्त अपनें घरको गया। इसी तरह से कितनें एक दिन बीत गयें, निदान उसका खाविन्द भी बिदेशसें अपनी सुसराल में आया, जब इसनें अपनें शौहर को देखा जीमें चिन्ता करकें सखी सें कहा, इस सोचमें मेरा जी है, क्या करूं किधर जाऊं मेरी नीद भूख प्यास सब बिसर गई, न ठण्डा रुचे है न गर्म, और जो कुछ अहवाल अपनें चित्तका था, सो सब कहा। गरज जो तो करकें दिन तो काटो, पर शामकें वक्त, जब उसका शौहर खालूकर चुका, तब उसकी सासुनें, एक ऊंचे चौबरे में सेज बिछवाकर, कहला भेजा, कि तुम वहां जाकर आरामकरो, और अपनी बेटीसेंकहा, कितू

आकर अपने सोहर की सेवा कर॥ वुह इस बातको सुन नाक भौं चढा चुपकी हो रही फिर उसको मांने डांट के उसके पास भेजा बेवस होके वहां गई और मुंह फेर पलङ्गपर लेट रही। वुह जों जों उससे ने हकी बातें करता था तों तों उसे जियादे दुख होता था फिर तरह बतरह के बस्त्र आभूषण जो जो हर एक मकान से उसके वास्ते वुह लाया था सो सब दिये और कहा कि इसे पहन तब तो उनने और खफा हो भवें ताने मुंह फेर लिया और यह भी लाचार हो सो रहा क्योंकि हारा मांदा राहका था पर उसे अपने यार की याद में नीन्द न आई। जब वुह समझी कि यह नींद से अचेत हुआ तब वुह होले होले उठ उसे सोता अंधेरी रात में निडर अपने दोस्त के मकान को चली कि राह में एक चोरने उसको देखकर अपने मनमें चिन्ता की कि यह औरत गहना पहने हुए आधी रातके वक्त अकेली कहां जाती है। यह बात अपने जी में कह उसके पीछे हो लिया। गरज जों तों यह अपने यार के मकान में पहुंची और वहां उसे सांप काट गया था वुह मुआ पडा था उननें जाना कि सोता है उसके त्रिरह की आग की जली हुई जो थी बे इख्तियार उसे लिपट कर प्यार करने लगी और चोर दूर से तमाशा देखन लगा। वहां एक पीपल के दरख्त पर एक पि

आप भी बैठा हुआ, यह तमाशा देख ता था, अचानक उसके मनमें आया, कि उसके बदन में पैठ, इससे भोग कीजिये, यह विचार कर उसके कालिब में आ, भोगकर आखिर, दांतोंसे उसकी नाक काट, उसी दरखत पर जा बैठा। चोर ने यह सब अहवाल देखा और वुह लाचार उसी रङ्ग ढङ्ग से चुह चुहाती हुई, सखीके पास गई और सब माजरा कहा, तब सखी बोली, कि तू अपने शौहर पास जल्द जा, कि आफताब तुलूअ न होने पावे और वहां जाकर डाढ मारके रोइयो, जो कोई तुझसे पूछे तो कहना कि इनने मेरी नाक काट ली है, यह सखी की बात सुनते ही, तुरन्त वा डाढे मार मार रोने लगी, इसके रोने की आवाज सुन, सारा कुटुम्ब के लोग आये, देखते क्या हैं, कि उसकी नाक न हो न कटी बैठी है। तब वे बोले कि ऐ निलज्ज पापी निर्दई मूढमति बिना अपराध किये इसकी नाक क्यों काटी, वुह भी यह सवांग देख, चिन्ताकर अपने जीमें कहने लगा, कि चञ्चल चितका काले सांपका शस्त्रधारी का दुश्मन का विश्वास न कीजीये और स्त्रिया चरित्र से डरिये। कवीश्वर क्या वर्णन नहीं कर सकता और योगी क्या कुछ नहीं जानता, मतवाला क्या कुछ नहीं बकता, स्त्री क्या नहीं कर सकती, सच है घोडे का ऐब बादल का गरजना स्त्रिया का चरित्र और पुरुष का भाग यह देवता भी नहीं जानते, आदमी का

तो क्या मकदूर है। इतने में उसके बापने कोतवाल को यह खबर दी वहां से प्यादे चबुतरे को आये और इसे बांध कोतवाल के पास लाये। कोतवाल ने राजा को खबर की राजाने उससे यह अहवाल बुलावा के पूछा तो उसने कहा मैं कुछ नहीं जानता और सेठकी लड़की से बुलाकर जो पूछा तो उसने कहा महाराज आप यह देख के मुझसे क्या पूछते हो फिर राजा ने उससे कहा तुझे क्या सजा दें यह सुनके बोला आप के न्याय में जो ठहरे सो कीजिये राजाने कहा इसे ले जाके सूली दो लोग राजा की आज्ञा पाके उसे सूली देने ले चले यह संयोग देखे वुह चोर भी वहां खड़ा तमाशा देखता था जब उसे यकीन हुआ कि यह नाहक मारा जाता है तब उसने दुहाई दी। राजा ने उसे बुलाकर पूछा तू कौन है वुह बोला कि महाराज मैं चोर हूं और यह बेगुनाह है नाहक इसका खून होता है आपने कुछ न्याय न किया। तब राजाने उसे भी बुलवाया और चोर से पूछा तू अपने धर्म से सच कह कि यह मुकदिमा किस तरह से है तब चोरने ब्योरे वार अहवाल कहा और राजा भी अच्छी तरह से समझा, निदान हरकारे भेज उस रण्डी का यार जो मुआ हुआ पड़ा था उसके मुंह में से नाक मंगवाके देखी तब जाना कि यह बे तकसीर है और चोर सच्चा है। फिर चोर बोला कि महाराज ने कोजा पालना और बदोंको

सभा देनी राजोंका बराबर धर्म चला आता है। इत
नी बात कहकर चूडामन तोता बोला। महाराज ऐसे
गुनों की पुरी नारियां होती है। राजाने उस स्त्री का
मुंय काला करवा सिर मुण्डवा गधे पर चढवा नगरी
के फेरे दिलवा छुडवा दिया। उस चोर को और साहूका
र बचे को बीडे दे रुखसत किया। इतनी कथा कह बै
ताल बोला ए राजा इन दोनों में से किसे जियादा पाप
हुआ। तब राजा बीर बिक्रमाजीत बोला कि स्त्रीको। फि
र बैताल बोला किस तरह से। यह सुनके राजा ने कहा
मर्द कैसाही दुष्ट क्यों न हो। पर उसे धर्म अधर्म का बि
चार रहता है। और स्त्री को धर्म अधर्म का कुछ ज्ञान
नहीं रहता। इससे नारीको बहुत पाप हुआ। यह बात
सुन बैताल फिर चला गया। और उसी दरखत पर जा
लटका। फिर राजा जा उसको पेड से उतार गठडी बांध
कांधेपर रख ले चला॥ ४ ॥ *—*—*—*

॥ पांचवीं कहानी ॥

बैताल बोला ए राजा उज्जैन नाम एक नगरी है और व
हां का राजा महाबल और उसका हरिदास नाम एक दू
त था। उस दूत को बेटी का नाम महादेवी। वुह अतिसुन्द
री। जब वुह बर योग हुई तो उसके पिताको चिन्ता हुई
कि इसका बर ढूंढ बिवाह कर दिया चाहिये। गरज एक
दिन उस लडकीने अपने बाप से कहा। कि पिता जी सब-

गुण जानता हो मुझे उसे दीजो। तब उसने कहा कि जो सब इल्म से वाकिफ होगा तेरी शादी मैं उसीके साथ कर दूंगा फिर एकदिन उस राजाने हरिदासको बुलाकर कहा कि दक्षिण दिशा में हरिचंद नाम राजा है उसके पास तुम जाकर मेरी तरफ से क्षेम कुशल पूछो और उनको क्षेम कुशलके समाचार ले आओ। यह राजा की आज्ञा पाय बिदा हो उस राजाके पास कितने एक दिनोंमें जा पहुंचा और उसे अपने राजा का सब संदेसा कहा और क्रमशः उस राजाके निकट रहने लगा गरज एक दिन की बात है कि उस राजानें इससे पूछा ऐ हरिदास अभी कलयुग का आरंभ हुआ कि नहीं तब उन्ने हाथ जोडकर कहा महाराज कलिकाल वर्त्तमान है क्यौं कि संसारमें झूठ बढा है और सत घट गया लोग मुंह पर बात मीठी कहते हैं और पेट में कपट रखते हैं धर्म जाता रहा पाप बढा पृथ्वी फल कम देने लगी राजा डांड लेने लगे ब्राह्मण लालची हुए स्त्रीयोंने लाज छोड दी बेटा बाप की आज्ञा नहीं मानता भाई भाई का इअतिबार नहीं करता मित्रसे मित्राई जाती रही खाविन्दों से वफा उठ गई सेवकोंने सेवा छोड दी और जितनी नालायक बातें थीं वे सब नजर आती हैं। जब राजासे यह सब कह चुका तब राजा उठकर महल में गया और यह अपने स्थान पर आनके बैठा कि इतने में एक ब्र

ह्मनेटा उसके पास आ कहने लगा, कि मैं तुझसे कुछ मांगने आया हूं। यह सुनके उन्ने कहा, मांग क्या मांगता है। उन्ने कहा कि अपनी बेटी मुझको दे, हरिदास बोला कि जिसमें सब गुण होंगे मैं उसको दूंगा, यह सुनके वुह बोला, कि मैं सब विद्या जानता हूं। फिर उसने कहा, कुछ अपनी विद्या मुझे दिखला, तो मैं जानूं कि तुझे विद्या आती है, तब उस ब्रह्मनेटे ने कहा, मैं ने एक रथ बनाया है, उस में यह सामर्थ है, कि जहां जानेका इरादा करो तहां वुह एक क्षण में ले पहुंचावे. तब हरिदासने कहा उस रथको फजरके वक्त मेरे पास ले आइयो। गरज वुह भोर को रथ ले, हरिदास पास आया, फिर ये दोनों रथपर सवार हो, उज्जैन नगरीमें आन पहुंचे, पर यहां इत्तिफाकन् उसके आने से पहले, किसी और ब्राह्मणके लडके ने, बडे बेटे से आकर कहा था, कि तू अपनी बहिन मुझे दे, और उसने भी यही कहा था, कि जो सब विद्या जानता होगा उसको दूंगा, और उस ब्राह्मणके पुत्रने भी कहा था, कि मैं सब ज्ञान विद्या जानता हूं। यह सुनके उसने कहा था, कि तुझे ही देंगे। एक और ब्राह्मणके पुत्रने उस लडकी की मा से कहा था कि तू अपनी बेटी हमें दे, उसने भी उसे यही जवाब दिया था, कि जो सब विद्या जानता होगा, उसीको अपनी लडकी दूंगी, उस ब्राह्मण के लडके ने भी कहा था, कि मैं संपूर्ण शास्त्र विद्या जा

नता हूं और शब्दबेधी तीर मारता हूं, यह सुनके उ
न्ने भी कहा था, कि मैंने कबुल किया तुझे ही दूंगी ॥
गरज इसीतरह से तीनोंवर आनके इकट्ठे हुए ॥ हरि
दास अपने मनमें चिन्ता करने लगा ॥ कि एक कन्या
और तीन वर किसे दूं किसे न दूं, इसी फिक्र में था,
कि रातको एक राक्षस आनके उस कन्या को उठाके
विंध्याचल पर्व्वत के ऊपर ले गया, कहा है कि बहुताये
त किसी चीज की अच्छी नहीं, अति रूपवती सीता
थी रावण ने हरी, राजा बलने अति दान दिया, सो
दलिद्र हुआ, रावण ने अति गर्व करके अपने कुलकी
छै की। गरज जब भोर हुई, और सब घरके लोगोंने
कन्याको न देखा, तब अनेक अनेक प्रकार की चिन्ता,
करने लगे, और यह बात वे तीनोंवर भी सुनके वहां
आये, उनमें एक ज्ञानी था, उससे हरिदास ने पूछा, ऐ
ज्ञानी तू बता कि वुह कन्या कहां गई, उनने घडी एक
में विचार करके कहा, तुम्हारी लडकी को राक्षस ने
पर्वत में ले जाके रखा है, इसमें दुसरा बोला कि राक्ष
स को मारके मैं उसे ले आऊंगा, फिर तीसरा बोला
हमारे रथपर सवार हो जाओ, और उस ले आओ,
यह सुनते ही वुह झट से, उसके रथपर सवार हो व
हां पहुंच, उस देवको मार तुरन्त उसे ले आया, और
तीनों आपस में झगडने लगे, तब उसके बापने मनमें
चिन्ता करके कहा, कि सबोंने इहसान किया है, किसे

दूं किसे न दूं। इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम उन तीनों में से वुह कन्या किसकी स्त्री हुई। राजा बोला वुह जोरू उसका हुई जो राचस को मार कर लाया। बैताल ने कहा सबका गुण बराबर है, किस तरह से वुह उसकी जोरू हुई राजाने कहा उन दोनों ने इहसान किया, इस्से उनको सवाब हुआ, और यह लडकर उसे मारके लाया है, इसवास्ते वुह इस की जोरू हुई। यह बात सुन बैताल फिर उसी दरखत में जा लटका और राजा भी वोंही जा बैताल को बांध कांधेपर रख उसी तरह ले चला ॥ ※ ※

॥ छठी कहानी ॥

फिर बैताल बोला ऐ राजा धर्मपुर नाम एक नगर है वहां का राजा धर्मशील और उसके मंत्रिका नाम अन्धक उसने एक दिन राजा से कहा महाराज एक मन्दिर बना उस में देवी को बिठा नित पुजा कीजिये कि इसका शास्त्र में बडा पुण्य लिखता है। तब राजा एक मन्दिर बनाया देवीके पदारथ शास्त्र की विधि से पुजा करने लगा, और बिन पुजा किये, जल भी न पीता था इसतरह से जब कितनी एक मुद्दत गुजरी तो एक रोज दीवान ने कहा, महाराज मसल मशहूर है, कि निपुतेका घर सुना मुरख का हृदया सुना और दरिद्रीका सब कुछ सुना है। यह बात सुन राजा देवीके मन्दिर में जा हाथ जोड स्तुति करने लगा कि हे देवी

तुझे ब्रह्मा विष्णु रुद्र इन्द्र आठ पहर सेवते हैं, और तू ने महिषासुर चण्ड मुण्ड रक्तबीज से दैत्यों को मार पृथ्वी का भार उतारा, और जहां जहां तेरे भक्त को बिपत पड़ी, तहां तहां जा तू सहाय हुई, और यही आस तक मैं तेरे द्वारपर आया हुं, अब मेरे भी मनकी इच्छा पूरीकर। इतनी स्तुति जब राजा कर चुका तब देवी के मन्दिर से आवाज आई, कि राजा मैं तुझ से खुश हुई, वर मांग जो तेरे मनमें है॥ राजा बोला हे माता, जो तू मुझसे खुश हुई तो मुझ को पुत्र दे। देवीने कहा राजा तेरा पुत्र होगा महाबली और बड़ा प्रतापी, तब तो राजाने चन्दन अक्षत फूल धूप दीप नैवेद्य देकर पूजा की, और इसी तरह से हर रोज पूजा करता था। गरज कितने दिनों के पीछे राजा के एक लड़का पैदा हुआ, राजाने बाजे गाजे से कुटुम्ब समेत जाकर देवी की पूजा की, इस अरसे में एक दिन का इत्तिफाक है कि किसी नगर से एक धोबी अपने दोस्त को साथ लिये इस शहर की तरफ आता था, कि देवी का मन्दिर उसे नजर आया॥ उसने दण्डवत करने का इरादा किया, इस में एक धोबी की लड़की अति सुन्दरी आती साम्हने से इसने देखी॥ उसे देख मोहित हुआ, और देवीके दरशन को गया, दण्डवत कर हाथ जोड़ उसने अपने मनमें कहा, हे देवी जो इस सुन्दरी

से मेरा बिवाह तेरी कृपासे हो तो मैं अपना सिर तु
झे चढाऊं, यह मन्नत मान दण्डवत कर दोस्तको साथ
ले अपने नगर को गया जब वहां पहुंचा तो उसके बि
रह ने यह संताया कि नींद भूख प्यास सब बिसर ग
ई। आठपहर उसी के ध्यान में रहने लगा, यह बुरी
हालत उसके दोस्तने देख उसके बाप से आ सब व्यो
रे वार कहा। उस का पिता भी यह सुनकर भैचक हो
रहा और अपने जीमें चिन्ताकर कहने लगा कि इस
की दसा देख ऐसा मालुम होता है जो उस कन्या से इ
सकी सगाई न होगी तो यह अपना प्राण त्याग करेगा
इससे बिहतर यह है कि उस लडकी से इसका व्याह
कर दीजिये कि जिससे यह बचे। इतना बिचार कर
पुत्रके मित्रको साथ ले उस गांव में पहुंच उस लडकी
के पिता से जाकर कहा मैं तेरे पास कुछ जाचने आया
हूं जो तू देवे तो मैं कहूं उनने कहा मेरे पास वुह प
दारथ होगा तो मैं दूंगा तुम कहो इस तरह से वचन
बन्दनकर कहा तू अपनी लडकी मेरे पुत्रको दे। य
ह सुनके उनने भी उसकी बात प्रमाण कर ब्राह्मणको
बुलवा दिन लगन महूरत ठहरा कर कहा तुम लड
के को ले आओ मैं भी अपनी लडकी के हाथ पीले क
र दूंगा। यह सुन वुय वहां से उठ अपने घर आ सब
सामान शादी का तैयार कर व्याहने को गया और व
हां जा बिवाह दे बेटे बहूको ले फिर अपने घर आया

और दुलहा दुलहन आपसमें आनन्दसे रहने लगे। फिर कितने दिनोंके बाद उस लडकी के पिताके यहां कुछ सुभकरम था सो वहां से नौता इनको भी आया ये स्त्री पुरुष तैयार हो अपने मित्र को साथ ले उस नगर को चले जब नगर के निकट पहुंचे तो देवी का मन्दिर नज़र आया तो उसे वुह बात याद आई तब उसने अपने जीमें बिचार कर कहा कि मैं बडा असत्यवादी अधर्मी हूं कि देवी से भी झूठ बोला इतनी बात अपने मन में कह उस दोस्त से कहा तुम यहां खडे रहो मैं देवी का दरशन कर आऊं और स्त्री को कहा तू भी यहां ठहर। येह जाह मन्दिर के पास पहुंच कुण्ड में स्नान कर देवी के सन्मुख जा करजोड नमस्कार कर खड्ग उठा गर्दन पर मारा कि सिर तन से जुदा हो भूई में गिरा गरज़ कितनी देर पीछे उसके मित्रने बिचारा कि इसे गये बडी देर हुई है अबतक फिरा नहीं चलकर देखा चाहिये और उसको स्त्रीको कहा तू यहां खडी रह मैं उसे शितावी से ढुंढके ले आता हुं यह कहकर देवीके मन्दिर में गया देखता क्या है कि धड से उसका सिर जुदा पडा है। यह हालत वहां की देख अपने मन में कहने लगा कि संसार बहुत कठिन जागह है कोई यह न समझेगा कि इसने अपनें हाथ से सीर देवी को चढाया है बल्कि यह कहेंगे कि इस की नारी जो अति सुन्दरी थी उसके लेनेके लिये मारकर

यह मकर करता है इससे यहां मरना उचित है पर सं सार में बदनामी लेनी खुब नहीं यह कह तालाव में नहा देवी के साम्हने आ हाथ जोड प्रणाम कर खांडा उठा गले में मारा कि रुण्ड से मुण्ड जुदा हो गया और यह यहां अकेली खडी खडी उन्ताकर राह देख देख निराश हो ढुंढती हुई देवी के मंदिर में गई। वहां जा के देखती क्या है कि दोनों मुए पडे हैं फिर इन दोनों को मुआ देख उन्ने अपने जीमें बिचारा लोग तो यह न जानेंगे कि आप से देवी को ये बल चढे हैं सब कहें गे कि रांड फाजिरः थी बदकारी करने के लिये दो नों को मार आई है इस बदनामी से मरना उचित है। यह सोचकर सरोवर में गोता मार देवीके सन्मुख आ सिर निवा दण्डवत कर तलवार उठा चाहे गर्दन में मारे कि देवीने सिंहासन से उतर उसका हाथ आ नके पकडा और कहा पुत्री बर मांग मैं तुझसे प्रस न्न हुई तब उन्ने कहा माता जो तु मुझसे खुश हुई है तो इन दोनों को जी दान दे फिर देवीने कहा इनके धडों से सिर लगा दे। इनने मारे खुशीके घबरा धड से सिर बदल के लगा दिये और देवीने अमृत ला छिडक दिया वे दोनों जीकर उठ खडे हुए और आपस में झगडने लगें यह कहें स्त्री मेरी और वुह कहे स्त्री मे री। इतनी कथा कह बैताल बोला कि ऐ राजा बीर बिक्रमाजीत इन दोनों में वुह स्त्री किसकी हुई राजाने

कहा धुन शास्त्र में इसका प्रमाण लिखता है कि नदी
यों में गङ्गा उत्तम है और पर्वतों में सुमेरु पर्वत श्रेष्ठ
है और वृक्षों में कल्पवृक्ष अङ्ग में मस्तक उत्तम है इस
न्याव से जिसका उत्तम अङ्ग है उसी की स्त्री हुई। इत
नी बात सुन बैताल फिर उसी दरखत में जा लटका
औरराजा भोजाउसे बांधकांधेपर रखकर ले चला ६।

॥ सातवीं कहानी ॥

फिर बैताल बोला कि ऐ राजा चंपापुर नाम एक नग
र है वहां का राजा चंपकेश्वर और राणी का नाम सु
लोचना और बेटी का नाम त्रिभुवन सुंदरी सो अति
सुंदरी है जिसका मुख चन्द्रमासा, बाल घटासे, आंखें
मृग की सी, भवें धनुष सी, नाक कीर की सि, गला कपो
त का सा, दांत अनार के से दाने, होठोंकी लाली कुंदु
री की सि, कमर चीते कीसी, हाथ पांव कोमल कमल
से, रङ्ग चंपेका सा, गरज उसके जोबन की जोत दिन ब
दिन बढ़ती थी जब वुह बालिगः हुई तो राजा राणी
अपने चित्त में चिन्ता करने लगे और देश देशके रा
जोंको यह खबर गई कि राजा चम्पकेश्वर के घर में ऐ
सि कन्या पैदा हुई है कि जिसके रूप को देखते ही सुर
नर मुनि मोहित हो रहते हैं। फिर मुल्क मुल्क के
राजोंने अपनी अपनी सूरतें लिखवा लिखवा ब्राह्मणों
के हाथ राजा चम्पकेश्वर के यहां भेजियों, राजाने ले
अपनी बेटी को सब राजोंकी तसवीरें दिखाई पर उ

सके मन में कोई न समाई, तब तो राजाने कहा तू स्व
यम्बर कर वुह बात भी उन्ने न मानी, और अपने बाप
से कहा, रूप बल ज्ञान जिस में ये तीनों गुण होंगे पि
ता उसे मुझे देना॥ गरज जब कितने एक दिन बीते
तो चारों देश से चार बर आये, फिर उन से राजाने
कहा अपना अपना गुण विद्या मेरे आगे जाहिर कर
कहो उनमें से एक बोला मुझ में यह विद्या है, कि एक
कपडा मैं बनाकर पांच लाखको बेचता हूं, जब उसका
मोल मेरे हाथ आता है तब उसमें से एक लाख ब्राह्म
णको देता हूं, दूसरा देवता को चढाता हूं तीसरा अप
ने अङ्ग लगाता हूं, चौथा स्त्रीके वास्ते रखता हूं, पांचवें
को बेचकर रुपै ले नित भोजन करता हूं, यह विद्या
दूसरा कोई नहीं जानता, और मेरा जो रूप है, सो
जाहिर है, दूसरा बोला मैं जल थल के पशु पंछी की
भाषा जानता हूं, मेरे बलका दूसरा नहीं, और सुन्दर
ताई मेरी आपके आगे है, तीसरे ने कहा मैं ऐसा शा
स्त्र समझता हूं कि मेरे समान दूसरा नहीं, और खुब
सूरती मेरी तुम्हारे रूबरू है। चौथे ने कहा मैं शस्त्र
विद्या में एकही हूं दूसरा मुझ सा नहीं शब्दबेधी ती
र मारता हूं और मेरा हुस्न जगमें रोशन है, आप भी
देखते ही हैं। यह चारों की बात सुन राजा अपने जी
में चिन्ता करने लगा, कि चारों गुणमें बराबर हैं, कि
से कन्या दूं यह सोचकर उसने बेटीके पास आ, चारों

का गुण बयान किया, और कहा मैं तुझे किसे दूं। यह सुनके वुह लाज की मारी नीची गरदनकर, चुप हो रही, और कुछ जवाब न दिया, इतनी बात कह बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम। यह स्त्री किसके योग है, राजा ने कहा जो कपड़ा बनाकर, बेचता है, सो जातका शूद्र है, और जो भाषा जानता है वुह जातका वैश्य है, जो शास्त्र पढ़ा है सो ब्राह्मण है, और शब्दबेधी तीर मारने वाला उसका सजाती है, यह स्त्री उसके लाइक है। इतनी बात सुन बैताल फिर उसी पेड़में जा लटका और राजा भी वहां जा उसे बांध कांधेपर रखकर ले चला॥ ७ ॥

॥ आठवीं कहानी ॥

तब बैताल ने कहा ऐ राजा मिथलावती नाम एक नगरी है वहां का राजा गुणाधिप। उसकी सेवा करने को दूरदेश से एक चिरमदेव नाम राजपुत्र आया, रोज उस राजाके दरशन को जाया करता लेकिन मुलाकात न होती थी, और जितना धन वुह लाया था सो बरस रोजके अरसे में सब बैठकर यहां खाया, और वहां घर उसका वैरान हो गया, एक दिन की बात है, कि राजा शिकार को सवार हुआ, और चिरमदेव भी उसकी सवारी के साथ हो लिया। इत्तिफाकन् राजा एक बन में जाकर फौज से जुदा हो गया और लोग सवारी के एक, और कहूं

ल में भटक गये लेकिन एक चिरमदेव ही राजाके पी
छे था निदान उसने ही पुकारकर कहा महाराज लो
ग सवारीके पीछे रह गये हैं और मैं आपके घोडेके सा
थ घोडा मारे चला आता हुं राजाने यह सुनके घोडे
को रोका कि इसमें यह बराबर आया राजाने उसे दे
खके पुछा तु किसवास्ते इतना दुर्बल हो रहा है तब
यह बोला जिस स्वामीके पास रहिये और वुह ऐसा
हो कि हजारों को पालता हो और अपनी खबर न
ले तो इसमें उसको कुछ दोष नहीं मगर अपने करम
का दोष है जैसे दिन को सारा जहान देखता है मगर
उल्लु को नजर नहीं आता इसमें गुनाह सुरज का क्या
है हैरत है मुझको कि अन्न मा के पेटमें रोजी पहुंचा
ई थी जब कि हम पैदा हुए और दुनिया की गिजाओं
के लाइक हुए अब वुह खबर नहीं लेता मालुम नहीं
कि सोता है या मरगया और अपने नजदीक माल
औ दौलत चाहनी कोसी बडे आदमी से कि देते वक्त
वुह मुंह बनावे और नाक भौं चढावे इसी जहर हला
हल खाकर मर जाना बिहतर है। और ये छः बातें
आदमीको हलका करती हैं एकतो खोटे नरकी प्रीति
दुसरे बिना कारण की हंसी तीसरें स्त्री सें बिबाद कर
ना चौथें असज्जन स्वामी की सेंवा पांचवें गधेंकी सवारी
छटें बिना संस्कृतकी भाषा और यें पांच चीज बिधाता
मनुषकें कर्ममें पैदा होतें ही लिखदेंता है एक तों आर

मत, दूसरे करम, तीसरे धन, चौथे विद्या, पांचवें जस, म
हाराज जब तक आदमी का पुण्य बढ़े होता है, तब उ
सके दास बने रहते हैं, और जब पुण्य घट जाता है,
तो बन्धु वैरी हो जाते हैं, पर यह एक बात मुकर्रर है,
स्वामी की सेवा करने से कभी न कभी फल मिल रह
ता है, निरफल नहीं रहता, यह सुन राजा ने उन सब
बातों को गौर कर उस वक्त कुछ जवाब न दिया, पर
उससे यह कहा कि मुझे भूख लगी है, कहीं से कुछ
खाने को ला, चिरमदेवने कहा महाराज यहां अन्न
भोजन न मिलेगा, यह कह जङ्गल में जा, एक हिरन
मार खाले दे चकमक निकाल, आग सुलगा, गोश्तके
कबाब भुन राजा को खूब सा खिला, आप भी खायेग
रज जब राजा का पेट भर चुका, तो उसने कहा ऐ रा
जपुत्र। अब हमें नगर को ले चलो, कि राह मुझे मा
लूम नहीं, उसने राजाको नगर में ला, उसके मन्दिर
में पहुंचा दिया, तब राजा ने उसकी चाकरी मुकर्रर क
र दी, और बहुत से उसे वस्त्र आभूषण दिया, फिर वुह
राजा की सेवा में हाजिर रहने लगा, गरज एक दिन
राजा ने किसी कामके लिये समुद्र के कनारे उस राज
पुत्र को भेजा, वुह जब कनारे पहुंचा तो उस ने एक दे
वीका मन्दिर देखा, उस में जा देवी की पूजा की, लेकिन
जब यह वहां से बाहर निकला तो वोंहीं उसके पीछे से

एक सुन्दरी नायका आ उससे पूछने लगी, ऐ पुरुष। तू किस लिये यहां आया है वृह बोला ऐश के लिये, आया हूं और तेरे रूप को देख मैं मफतून हुआ हूं। उसने कहा जो मुझ से कुछ इरादा रखता है, तो पहले इस कुण्ड में जाके अशनान कर, फिर उसके पीछे जो तू मुझे कहेगा सो मैं सुनेगी, यह सुन्ते ही वृह कपडे उतार तालाव में पैठ गोता मार निकल कर देखे तो अपने नगर में खडा है, इस अचंभे को देख तरसनाक हो लाचार अपने घर जा और कपडे पहन राजाके पास आ सब वृत्तान्त कहा, राजा ने सुन्ते ही कहा मुझे भी यह अचंभा दिखा, यह कहतेही सवारी मंगा दोनों सवार हो कर चले कितने दिनों के अरसे में सागर के किनारे आये उसी देवी के मन्दिर में जाकर पूजा की फिर राजा जब बाहर निकला तो वही नायका एक सखी साथ लिये, राजाके पास आन खडी हुई, और राजा का रूप देख, मोहित हो बोली, ऐ राजा जो मुझे आज्ञा दे सो करूं। राजाने उसे उत्तर दिया जो तू मेरा कहा करे, तो मेरे सेवक की स्त्री हो वुह बोली मैं तेरे रूप की आधीन हुई हूं, इस की जोरू किस तरह से होऊं। राजाने कहा अभी तो तूने मुझ से कहा, जो तू हुकुम करेगा सो मैं करूंगी और सज्जन जिस बात को कहते हैं, उसका निवाह करते हैं अपने वचन को पाल मेरे सेवक की जोरू हो यह सुनके वुह बोली

जो आपने कहा, सो मुझे प्रमाण है, तब राजा सेवक को गन्धर्व बिवाह कर दोनों को साथ ले अपने राज धाम में आया। इतनी बात कह बैताल बोला ए राजा बताओ स्वामी और सेवक में किसीका सत अधिक हुआ। राजा बोला सेवक का, फिर बैताल बोला कि जिस राजा ने ऐसी सुन्दरी स्त्री पा सेवक को दी, तिस राजा का सत अधिक न हुआ, तबराजा बीर बिक्रमा जीत ने कहा जिनका धर्म उपकार करना है, तिनके उपकार करने में अधिक क्या है और जो आपका जी हो परकाज करे सोई अधिक है, इस कारण सेवक का सत अधिक हुआ। यह बात सुन बैताल उसी तरवर पर जा लटका और राजा जा फिर उसे वहां से उतार कांधेपर रख ले चला ॥ ८ ॥

॥ नवीं कहानी ॥

बैताल बोला ए राजा। मदनपुर नाम एक नगर है वहां बीरबर नाम राजा था, और उसी देशमें हिरण्य दत्त नाम एक बनिया कि उसकी बेटीका नाम मदनसेना था, वुह एक रोज बसन्त ऋतु में, सखीयों को साथ लिये अपने बाग में वासे सैर ओ तमाशे को गई। इत्तिफाकन् उसके आने से पेश्तर, धर्मदत्त सेठ का बेटा सोमदत्त नाम अपने मित्रको साथ लिये बन बिहार को आया था, वहां से फिरता हुआ उस बाड़ी में आन पहुंचा, इसे देख मोहित होगया और अपने दोस्त से

कहने लगा भाई वुह कदाचित मुझसे मिले तो मेरा जीवन सुफल हो और जो न मिले तो इस दुनिया में जीना अवश है। यह अपने दोस्त से बातें कर विरह में व्याकुल था, बेइखतियार उसके पास जा उसका हाथ पकड़ के कहने लगा जो तू मुझसे प्रीत न करेगी तो मैं तेरे ऊपर अपना प्राण दूंगा। वुह बोली ऐसा मत करो जो इसमें पाप होगा, तब उन्ने कहा तेरे करिश्मे ने मेरे दिलको छेदा है और तेरी विरह की आग ने मेरे शरीर को जला दिया इस पीर से मेरी सुद्ध बुद्ध सब जाती रही है और मुझे इस वख्त इश्क के गलबे से धर्म अधर्म का लिहाज नहीं है पर जो तू मुझे बच न दे तो मेरे जीमें जी आवे॥ वुह बोली आजके पांचवें दिन मेरी शादी होगी तो पहले मैं तुझ से मिल आऊंगी, पीछे अपने शौहर के यहां रहूंगी, यह बच न दे सौगन्द खा वुह अपने घर को गई और यह अपने घर आया। गरज पांचवें दिन उसकी शादी हुई, खाविंद उसका व्याहकर उसे अपने घर ले आया, कितने एक दिनों के पीछे रातको वक्त उसकी दिवरानी जिठानी ने जबरदस्ती उसे उसके पतिके पास भेजा, वुह रङ्गमहल में जा चुप चाप एक कोने में बैठ रही। इस अरसे में उसके खसम ने जो देखा तो उसका हाथ पकड़ सेजपर बिठा लिया॥ गरज उन्ने जब चाहा कि गले लगाऊं तो उस ने हाथ से झिड़क दिया, और जो जो

उस साहूकार बच्चे से कौल करार हुआ था, सो सब ब यान किया॥ यह सुनके उसके खाविंद ने कहा, जो सच उसके पास जाया चाहती है तो जा। वुह अपने खा मी की आज्ञा पा उस सेठके स्थानको चली, राह में चोर ने उसे देख खुश हो इसके पास आकर कहा, कि तू दो पहर रातके समैं इस अंधेरे में ऐसे वस्त्र आभूषण पह नके अकेली कहां जाती है, वुह बोली जिस जगह मे रा प्रीतम प्यारा बसता है, यह सुन चोर ने कहा यहां तेरा सहायक कौन है, वुह कहने लगी धनुष बाण लि ये, मदन मेरा सहाय करने वाला साथ है॥ यह कह फिर चोरके आगे सारी अपनी अव्वल औ आखिर की कथा बयान करके कहा, कि मेरा सिंगार भङ्ग मत कर, मैं तुझे वचन दिये जाति हूं, वहां से जब फिरूंगी तब गहना तेरे हवाले करूंगी॥ यह सुनके चोरने अपने दिल में कहा, गहना देने को तो मुझे वचन दिये जा ति है, फिर क्यौं इसका सिंगार भङ्ग करूं॥ यह समझ कर उसे छोड दिया, आप वहां बैठा रहा, और यह व हां गई, कि जहां सोमदत्त पडा सोता था, जाते ही जो इसने उसे अचानक जगाया, तो वुह घबराकर उठा, और कहने लगा, तू देवकन्या है, कि ऋषि कन्या या नागकन्या है, सच कह तू कौन है, और मेरे पास कहां से आई है, वुह बोली कि मैं नरकन्या हूं, और हिरण्य दत्त सेठ की बेटी, मदनसेना मेरा नाम है, और तुझे

याद नहीं, जो उस उपवनमें तू जबरदस्ती मेरा हाथ पकड़के कसम को वजिद हुआ था, और मैंने बमूजिब तेरे कहने के यह सौगंद की थी, कि विवाहिता पुरुष को त्याग करके तेरे पास आ उंगी, सो मैं आई हूं, जो तेरी इच्छा में आवे सो कर॥ फिर उन्ने पूछा कि यह तूने वृत्तान्त अपने पतिके आगे कहा था, नहीं, इन्नें उत्तर दिया कि मैंने तमाम अहवाल कहा, और उन्ने सब दरियाफ्त करके मुझे तेरे पास विदा किया, सोमदत्त बोला॥ यह बात ऐसे है जैसे विना वस्त्र का गहना या विना घीके भोजन या बेगर सुर के गाना, यह सब एकसा है, इसीतरह मैले वसन तेजको हरें कुभोजन बलको कुभार्य्या प्राण को, कुपुत्र कुल को, हरे, और राक्षस खफा होता है, तो प्राणको लेता है, पर स्त्री हित और अनहित में दोनों तरह से दुख देनेवाली है स्त्री जो न करे सो थोड़ा, क्योंकि जो बात इसके मन में रहती है, सो जबान पर नहीं लाती, और जो जबान में है उसे जाहिर नहीं करती, और जो करती है सो कहती नहीं, स्त्रीको संसार में भगवान ने अजब कोई पैदा किया है, इतनी बातें कह उस सेठके बेटेने इसे जवाब दिया, कि मैं पराई औरत से इलाका नहीं रखता, यह सुनके फिर उलटी अपने घरको चली, राह में उस चोर से भेंट हुई, उसके आगे सब वृत्तान्त कहा चोर ने सुनके शाबाशी दे छोड़ दिया, अपने पतिके

निकट आई और उस्से तमाम अहवाल बयान किया/
पर उसके खाविन्द ने उसे प्यार न किया और कहा
कोयल का सुरही रूप है और नारी का रूप पतिव्रता/
और कुरूप मनुष का रूप बिद्या तपस्वी का रूप क्षमा/
इतनी कथा कह बैताल बोला हे राजा इन तीनों में
से किसका सत्त अधिक है राजा बिक्रमाजीत ने कहा
चोर का सत्त अधिक है बैताल ने कहा किस तरह रा
जाने कहा और पुरुष पर उसकी इच्छा देख खामी ने
छोडा राजा का डर मान सोमदत्तने छोडा और चो
र को छोडने का कुछ कारण न था इस्से चोर ही प्र
धान है। यह सुन बैताल फिर वृक्षमें जा लटका और
राजा भी वहां जा उसे दरखत से उतार बांध कांधेपर
रखफिर ले चला ॥ ९ ॥ ॥ दशवों कहानी ॥
बैताल बोला ऐ राजा। गौडदेश में बरधमान एक न
गर है और गुणशेखर नाम वहां का राजा था उसका
मंत्री एक सरावगी अभयचंद नाम था उसी के समझा
ने से राजा भी श्रावक धर्म में आया शिव की पूजा
बिष्णु की पूजा और गौदान भूमि दान पिण्ड दान जू
आ और मदिरा इन सब को मना किया नगर में को
ई करने न पावे और हाड गङ्गा में कोई न ले जावे/
और इन बातों की दीवान ने भी राजा से आज्ञा ले
डौंडी नगरमें फिरवादी कि जो कोई ये कर्म करेगा
उसका सरबस राजा छीन लें सजा दे शहरसे निकाल

देंगा। फिर एक दिन दीवान राजासें कहने लगा, कि महाराज धर्म का विचार सुनियें जो कोई किसुका जी लेंता है वुह और जन्म में उसका भी जी लेंता है, इसी पापसें संसार में अनेक मनुष का जीवन मरण नही छुटता। फिर फिर जनम लेंता हैं और मरता है, इस जगत में जनम पाकें धर्म बटोरना मनुष कों उचित है, दें खियें काम क्रोध लोंभ मोंह बस हो, ब्रह्मा विष्णु महादेंव किसुनें किसु तौर सें संसार में औतार लें लें आतें है; बल्कि उनसें गाय अच्छी है, जों राग द्वेंषमद क्रोध लोंभ मोंह सें रहित है और प्रजाकी रक्षा करे है और उसकें जों पुत्र होतें है वेंभी जगत कें जीवों कों बहुत तरह सें सुख दें पालतें हैं। इसें देंवता और मुनी सबगैां कों मानतें हैं इस लियें देंवताओं कों मानना अच्छा नही, इस जगत में गाय कों मानियें और हाथी सें ले का चुंटी और पशु पंछी नर तक हर एक जीकी रक्षा करना धर्म है। जहान में उसकें समान कोई धर्म नही जों नर बिरानें मांस कों खा अपना मांस बढातें हैं सों अन्तकाल में नरक भोंग करतें हैं, इसें मनुष कों उचित यह है कि जीकी रक्षा करें, जों लोंग कि बिराना दुख नही समझतें और गैरोंकें जी मार मार खातें हैं उनकी इस पृथ्वी में उमर कम होती है, और लुले लंगडें कानें अंधें बौनें कुबडें ऐसें अङ्ग हीन हो हो जन्म लेते हैं, जैसें पशुओं पंछी कें अङ्ग खातें हैं वैसें ही

अन्त अपने अङ्ग गवांते हैं, और मद पान करने से स
हा पाप होता है, इस मद मांस का खाना उचित न
हीं, इस तरह से दीवान राजा को अपने मत का ज्ञान
समझा ऐसा जैन धर्म में लाया, कि जो यह करता था
वही राजा करता था, और ब्राह्मण योगी जङ्गम से ब
डा संन्यासी दरवेश किसीको न मानता था, और इसी
धर्म से राज करता था, एक दिन कालके वस हो मर
गया, फिर उसका बेटा धर्मध्वज नाम गद्दीपर बैठा, औ
र राज करने लगा, एकदिन उसने अभैचंद दीवान को
पकडवा सिरपर सात चोटियां रखवा मुह काला करवा
गधेपर चढा, डौंडी बजवा नगरको फेर दिल वा, देश
निकाला दिया, और अपना राज निःकण्टक किया,
एकदिन वुह राजा वसन्त ऋतु में राणियों को साथ
ले, एक बाग को सैर को गया, उस बागमें एक बडा ता
लाव था, और उस में कंवल फूल रहे थे, राजा उस सरो
वर की शोभा देख कपडे उतार अशनान करने को उ
तारा। एक फूल तोड तीरपर आ राणीके हाथ में दे
ने लगा, कि इस में हाथ से वुह छुट कर राणीके पांव
पर गिरा, और उसकी चोट से राणी का पांव टुटगया,
तब राजा घबराकर एक बारगी बाहर निकल उसको
औषध करने लगा, कि इतने में रात हुई, और चन्द्रमा ने
प्रकाश किया, चांद की जोत पडते ही दूसरी राणी

के शरीर में फफोले पड़ गये, कि अचानक दूरसे किसी गृहस्ती को घरसें मूसल की आवाज आई, वोंहीं तीसरी राणीके सिर में ऐसा दर्द हुआ कि गश आ गई, इतनी बात कह बैताल बोला ऐ राजा इन तीनों में अति सुकुमार कौन है, राजाने कहा जिसके मुण्डमें पीर हो मूर्छा आई, सोई बहुत नाजुक है, यह बात सुन बैताल फिर उसी वृक्षमें जा लटका, और राजा वहां जा उसे उतार गठरी बांध कांधेपर रख ले चला।

॥ ग्यारहवीं कहानी ॥

बैताल बोला कि ऐ राजा। पुण्यपुर नाम एक नगर है तहां का बल्लभ नाम राजा था, और उसके मंत्री का नाम सत्यप्रकाश, उस मंत्री की स्त्री का नाम लक्ष्मी, उस राजाने एकरोज अपने दीवान से कहा, जो राजा हो कर सुन्दर स्त्री से ऐस न करे तो राज करना उसका निर्फल है, यह बात कह दीवान को राजका भार दे आप सुख से ऐस करने लगा, राज की चिन्ता सब छोड़ दी, और दीन रात आनन्द में रहने लगा। इत्तिफाकन् एक रोज़ वुह मंत्री अपने घर में उदास बैठा था, कि इसमें उसकी भार्य्या ने पूछा, स्वामी इन दिनों आपको बहुत दुर्बल देखती हूं, वुह बोला कि निश दिन मुझे राज की चिन्ता रहती है, इस्से शरीर दुर्बल हुआ है, और राजा आठ पहर अपने ऐश आराम में रहता है, वुह मंत्री की जोरू बोली, कि हे पति बहुत दिन

तुमने राज काज किया अब थोड़े दिनोंके लिये रा जासे बिदा हो तीर्थ यात्रा करो। यह बात उसकी सुन चुपका हो रहा फिर जब वहां से उठा तो वक्त दरबार के राजाके पास जा रुखसत ले तीर्थ यात्रा करने निक ला जाते जाते समुद्र तीर सेतबन्ध रामेश्वर जा पहुं चा वहां जाते ही महादेव का दर्शन कर बाहर निक ला था कि इत्तिफ़ाक़न् नज़र उसकी समुद्र की तरफ़ जा पड़ी तो क्या देखता है कि एक ऐसा कंचन का पेड़ उसमें से निकला कि जिसके ज़मुर्रद के पत्ते पुखराज के फूल मूंगे के फल निहायत खुशनुमा नज़र आया और उस दरख्त पर अति सुन्दर नायका बीन हाथ में लिये मधुर मधुर कोमल कोमल सुरों से बैठी गाती है। बाद एक घड़ीके वुह तरवर समुद्र में लोप हो गया, यह तमाशा संची वहां देख उलटा फिर अपने नगरमें आया, और राजाके पास जा दण्डवत कर हाथ जोड़ बोला महाराज मैं एक अचरज देख आया हूं राजा ने कहा बयान कर दीवानने कहा महाराज अगले समय कह गये हैं जो बात किसूकी अक़ल में न आवे, और कोई बावर न करे वैसी बात न कहिये पर यह मैं ने आंखों से प्रतत्त देखा इस्से मैं कहता हूं महारा ज जहां रघुनाथ जीने समुद्रपर पुल बांधा है उस जा गह देखता क्या हूं कि सागर में से एक सोनेका तरवर निकला कि ज़मुर्रद के पात पुखराज के फूल मूंगे के

फलों से ऐसा खूब लदा हुआ था, कि जिसका बयान नहीं हो सकता, और उस पर महा सुन्दरी स्त्री बीन हाथमें लिये, मीठे मीठे सुरोंसे गाती थी, पर एक घडी के बाद वुह पेड सिन्धु में छिप गया॥ यह बात राजा सुन दीवान को राज सौंप, अकेला समुद्रके कनारे को चला, कितने एक दिनों में वहां जा पहुंचा, और महा देव के दर्शन को मन्दिर में गया, जों पूजा कर बाहर आया, कि समुद्र से वही दरख्त नायका समेत निकला, राजा उसको देखतेही, सागर में कुद उसी तरवर पर जा बैठा। वुह राजा समेत पातालको चला गया॥ तब वुह नायका इसको देखके बोली, कि ऐ वीर पुरुष किस वास्ते तू यहां आया है, राजाने कहा, मैं तेरे रूपके लालच से आया हूं। उसने कहा जो तू काली चौदश के दिन मुझसे न मिले तो मैं तेरे साथ विवाह करूं रा जाने यह बात मानी तिसपर उसने वचन ले कर रा जाके साथ व्याह किया, गरज जब अंधेरी चतुर्दशी आ ई तो उसने कहा, ऐ राजा आज तू मेरे निकट मत रहो, यह सुनके राजा खड्ग हाथ में ले, वहां से उठा, और एक कनारे जा छिपकर देखता रहा, जब आधी रात हुई उस वक्त एक देव आया, और उसने आते ही इसे गले से लगाया। यह देखतो ही राजा खांडा ले के धाया, और कहा अरे राक्षस पापी मेरे साम्हने तु स्त्री को हाथ न लगा, पहले मुझ से संग्राम कर, और मुझे

तभी तक भय था, कि अबतक तुझे न देखा था, अब मैं निडर हूं। इतनी बात कह खांडा निकाल एक ऐसा हाथ मारा, कि धड़ से मुण्ड जुदा हो जमीन पर तड़फने लगा। यह देख वुह बोली कि ऐ बीरपुरुष तूने बड़ा उपकार किया, यह कह कर फिर कहा, कि न तमाम पहाड़ों में लाल होते हैं, न सब शहरों में सतवंत आदमी, न हरएक बन में चन्दन उपजता है॥ न हरएक हाथीके मस्तक में मोती होता है, फिर राजाने पूछा यह राक्षस किसवास्ते कृष्ण चतुर्दशी को तेरे पास आया था, वुह बोली मेरे पिता का नाम बिद्याधर है तिसकी मैं पुत्री हूं सुन्दरी मेरा नाम, और यह मुकर्रर था कि मुझ बिन मेरा बाप भोजन न करता, एक दिन भोजन की बिरियां मैं घर में न थी, तब पिता ने क्रोधकर मुझे सराप दिया, कि तुझे काली चौदश के दिन राक्षस आनके गले से लगाया करे, यह सुनके मैं बोली पिता सराप तो तुमने दिया, पर अब मेरे ऊपर कृपा कीजिये, उसने कहा एक महाबीर पुरुष आनकर जब उस राक्षस को मारेगा तब तू इस सराप से छुटेगी, सो मैं उस सराप से छुटी, और अब मैं अपने पिता को नमस्कार करने आऊंगी॥ राजा बोला जो तू मेरे उपकार को माने, तो एक बारी मेरे राजको चलके देख, पीछे अपने पिताके दर्शन को जाइयो। वुह बोली कि अच्छा जो आपने कहा सो मुझे कबूल, फिर राजा उसे साथ ले अ
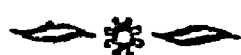
पनी राजधानी में आया शादियाने बजने लगे, सारी नगरी में खबर हुई, कि राजा आया तब घर घर बधाई मङ्गलाचार होने लगे। फिर तो तमाम नगर के मङ्गला मुखी आनके दरबार में मुबारकबादी देने लगे, राजा ने बहुत सा दान पुण्य किया, फिर कई एकदिन पीछे वुह सुन्दरी बोली, महाराज अब मैं अपने बापके यहां जाऊंगी। राजाने उदास हो कर कहा, कि अच्छा सिधारो। जब इसने राजा को उदास देखा तो कहा, महाराज मैं न जाऊङ्गी, राजा ने कहा किसवास्ते तू ने अपने बापके यहां का जाना मौकूफ किया, वुह बोली अब मैं मनुष की हो चुकी, और पिता मेरा गन्धर्व है, अब मैं जाऊं तो मेरा आदर न करेगा, इस लिये मैं नहीं जाती। यह सुन राजा बहुत खुश हुआ और लाखों रुपे का दान पुण्य किया, राजाके इस अहवाल के सुने से दीवान की छाती फटी और मर गया। इतनी बात कह बैताल बोला, ऐ राजा किस लिये वुह मंत्री मर गया, तब राजा बीर बिक्रमाजीत ने कहा, मंत्रीने देखा, कि राजा तो ऐस करने लगा और राज काजकी चिन्ता सब भुला दी, प्रजा अनाथ हुई, अब मेरा कहा कोई न मानेगा, इसी चिन्ता से वुह मर गया, यह सुन बैताल फिर उसी दरखतपर जा लटका। राजा फिर उसी तरह से कांधेपर रख कर उसको रवाना हुआ ॥ ११ ॥

॥ बारहवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा बीर विक्रमाजीत चूड़ापुर नाम एक नगर है, वहां का चूड़ामन नाम राजा था, जिसके गुरु का नाम देवस्वामी और उसके बेटे का नाम हरिस्वामी, वुह कामदेव के समान सुन्दर, और शास्त्रों में वृहस्पति की बराबर, और धन उसके कुबेर कासा॥ वुह एक ब्राह्मण की बेटी की नाम उसका लावन्यवती था, ब्याह लाया॥ उन दोनों में बहुत सी प्रीति हुई॥ गरज एक दिन गरमी के मौसिम में रातके वक्त चौबारे की छतपर दोनों गाफ़िल पड़े सोते थे इत्तिफाकन स्त्री के मुंहपर से ओढ़नी सरक गई॥ और गन्धर्व बिमान पर बैठा हवा में उड़ा हुआ कहीं जाता था, अचानक उसकी नजर इसपर पड़ी, कि वुह बिमान को नीचे लाया, और उस सोती को बिमान पर रखकर ले उड़ा, कितनी देर के पीछे ब्राह्मण भी सोते से उठा तो देखता क्या है, कि स्त्री नहीं, तब घबराया और वहां से उतर कर, तमाम घरको ढूंढा, जब इसे वहां भी न मिली तो सारी नगरी की गली गली कुचः कुचः ढूंढता फिरा, लेकिन कहीं उसे न पाया, फिर अपने जी में कहने लगा, कौन उसे ले गया और कहां गई॥ गरज़ जब कुछ बस न चल सका तो आखीर लाचार हो अफ़सोस करता हुआ घरको आया और वहां उसे फिर दुबारा भी ढूंढा और न पाया, जब उस बिन घर सूना नज़र आया,

तब निछायत बेचैनो और बेकली से वे इखतियार हो हाय प्राण प्यारी हाय प्राण प्यारी करके पुकारने लगा, फिर उसके बियोग से अति व्याकुल हो गृहस्थी छोड बैराग ले लङ्गोटो बांध भभूत मल, माला पहन, नगर तज तीर्थ यात्रा को निकला, नगर नगर गांव गांव तीर्थ करता हुआ, एक नगर में दो पहर के समें जा पहुंचा, जब भूख से निपट लाचार हुआ तो ढाक के पत्तों का दौना बना हाथ में ले एक ब्राह्मण के घर जा उस से कहा कि मुझे भोजन भिक्षा दो, गरज जब प्रोति के बस आदमी होता है तब उसे धर्म, जाते और खाने पीने का कुछ विचार नहीं रहता और निरादर हो जहां पाता है, तहां खाता है, जब उस ब्राह्मण से इसने भोख मांगो तब उसने इससे दौना ले घर में जा, खीर से भर ला दिया यह उस दौने को लिये तालाब कनारे आया, वहां एक बडका दरख्त था, उसको जडपर दौना रख सरोवर में मुंह हाथ धोने गया। उस दृक्ष की जड से एक काला नाग निकल उस दौने में मुंह से गरल डाल चला गया, और वुह दौना तमाम जहर से भर गया कि इसने यह भी हाथ मुंह धोकर आया, पर उसे यह अहवाल मालूम न था, और भुख भी निहायत लगी थी, आते ही खीर खाई, और वोंही उसे बिष चढा, फिर इसने उस ब्राह्मण से जाकर कहा, कि तैंने मेरे तई बिष दिया, और मैं अब इससे मरूंगा। इतना कह

घूमकर गिरा, और मर गया। फिर उस ब्राह्मण ने दूसे मूआ देख, अपनी ब्याही स्त्री को घरसे निकाल दिया, और कहा ब्रह्महत्यारी तू यहां से जा। इतनी बात सुन बैताल बोला कि ऐ राजा इनमें से ब्रह्महत्या का पाप किसे हुआ, राजाने कहा सांपके मुहमें तो विष होता ही है इससे उसे पाप नहीं, और ब्राह्मण ने भुखा जानके भिक्षा दी थी, उसे भी पाप नहीं और उस ब्राह्मणी ने स्वामी की आज्ञा से भीख दी थी उसे भी पाप नहीं, और उसने भी अन जाने खीर खाई तौभी से उसे भी पाप नहीं। गरज इनमें से जिसको कोई पाप लगावे वही पापी है, यह सुन बैताल फिर उसी तरवर पर जा लटका और राजा भी जा उसे उतार बांध कांधे पर रख वहां से चला॥ १२ ॥

॥ तेरहवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा चन्द्रहृदय नाम नगरी है और उस जगह का रणधीर नाम राजाथा उसकी नगरी में धर्मध्वज नाम एक सेठ था, और उसकी बेटी का नाम शोभनी, पर अति सुन्दरी, जवानी उसकी दिन बदिन बढती थी और रूप उसका पल पल अधिक होता था, इत्तिफाकन उस नगरी में रातों को चोरी होने लगी, जब चोरों के हाथ से महाजनों ने बहुत दुख पाया तब इकठे हो राजा के निकट जाकर सबने कहा, महा

राज चोरोंने नगर में बज्जत जुलुम किया है हम इस शहर में अबरह नहीं सकते, राजाने कहा, खैर जो ज्ञआ सो ज्ञआ, लेकिन अब आगे दुख न पाओगे, मैं उसका जतन करता ज्ञं, यह कह राजा ने बज्जत से लोग बुलवा चौकी को भेज दिये, और चौकी पहरे का ढब उनको बता दिया, और ज्ञकुम किया कि जहां चोरों को पावो बिना पूछे मार डालो, लोग रातको नगरको रख वाली करने लगे, इसपर भी चोरी होती थी, तब फिर सारे साहूकार इकठे हो कर राजा के पास आये, और अर्जकी महाराज आपने पहरु ए भेजे तौभी चोर न कम ज्ञए, और रोज चोरी होती है, राजाने कहा इस वक्त तुम रुखसत हो, आज की रात से नगर की चौकी देने मैं निकलूंगा, यह सुनके राजासे बिदा हो, वे अपने अपने घर गये, और जिस वक्त कि रात ज्ञई राजा अकेला ढाल तलवार ले प्यादा नगरी की रक्षा करने लगा, इसमें आगे जाके देखे तो एक चोर सान्हने से चला आता है, राजा उसे देखकर पुकारा तू कौन है, वुह बोला कि मैं चोर ज्ञं, तू कौन है, राजाने कहा, मैं भी चोर ज्ञं, । यह सुन वुह खुश होके बोला, आओ मिलकर चोरी करने चलें, यह बात आपसमें ठहरा राजा और चोर बातें करते ज्ञए एक महल्ले में पैठे, और कितने एक घरों में चोरी कर माल मताओ ले नगर के बाहर निकल एक कुए पर आये, और उस

में उतर पातालपुरी में जा पहुंचे वुह चोर राजा को दरवाजे पर खडाकर धन दौलत अपने मन्दिर में ले गया इतने में उसके घरमें से एक दासी निकली वुह राजा को देख के कहने लगी महाराज तुम कहां इस दुष्टके साथ यहां आये खैर इसमें है कि वह जाने न हीं पावे और तुम से जहां तक भागा जाय तहां तक भागो नहीं तो वुह आतेही तुम्हें मार डालेगा राजा ने कहा मैं तो राह नहीं जानता किधर को जाऊं फिर उस चेरीने वाट दिखा दी और राजा अपने म न्दिर को आया गरज दूसरे दिन राजाने सब अपनी सैना साथ ले उस कुए की राह पातालपुरी में जाकर चोर का तमाम घर बार घेर लिया और वुह चोर कि सी और राह से निकल उस नगरी का मालिक जो देव था उसके पास गया और अर्ज की कि एक राजा मेरे मारने को घर पर चढ आया है या तुम मेरी इ स समें सहाय करो नहीं तुम्हारी पुरीका बास छोड और नगर में जा बस्ता हूं यह सुन राक्षस ने खुश हो कर कहा तू मेरे लिये खाने को लाया है मैं तुझ से ब हुत खुश हुआ यह कहकर जहां राजा कटक लिये हवेली घेरे हुए था वहां वुह देव आ आदमियों को और घोडों को खाने लगा और राजा उस देव की सूर त देखकर भागा और जिन लोगों से भागा गया वे तो बचे और बाकियों को देवने खाया। गरज राजा अके

सा भागा जाता था कि चोरने आकर ललकारा, तू रज
पूत होकर लड़ाई से भागता है, यह सुन्तेही राजा फि
र खड़ा हुआ, और दोनों सन्मुख हो युद्ध करने लगे,
निदान राजा उसे बसकर मुसकें बांध, नगर में लेआया,
फिर उसको निहलवा धुलवा अच्छे अच्छे बस्त्र पहरा
एक ऊंटपर बिठला ढंढोरीया साथ कर सारी नगरीकें
फेरने कों भेजा, और सूली उसकें वास्तें खडी करनें का
हुकुम किया, इससें शहर कें लोगों में से जो उसें देखता
था सो कहता था, कि इसी चोरनें तमाम नगर लूटा है,
और अब इसें राजा सूली देगा, जब कि उस धर्मध्वज सें
ठ की हवेली कें नीचें वह चोर गया था, तब उस सेठ
की बेटीनें ढंढोरें की आवाज सुन अपनी दासी सें पूछा,
यह काहे की ढोंडी बाजती है, वह बोली जो चोर इस
नगर में चोरी करता था, उसे राजा पकड लाया हैं, अ
ब सूली देगा यह सुनके देखनें को वह भी दौडी, आई,
चोरका रूप जोवन देख तें ही मोहित हो गई, और अ
पनें बापसें आकर कहा तुम इस समै राजाके पास जा
ओ, और उस चोर को छुडा लाओ। सेठ बोला कि जिस
चोरनें राजाका तमाम नगर लुटा है और जिसकें लियें
सारा कटक काटा गया उसे मेरे कहें से क्यों कर छोडेगा,
फिर उसनें कहा, जो तुम्हारें सर्वस्व दियें सें भी राजा
उसें छोडें तो तुरन्त तुम उसें छुडा लाओ, और जो
वुह न आवेगा तो मैं भी अपनी जान दूंगी, यह सुन सेठने

राजासे जाकर कहा, महाराज पांचलाख रुपये मुझसे लोजीये, और इस चोर को छोड दीजिये, राजा बोला इस चोरने सारा नगर मुसा, और तमाम लशकर इसके सबब से गारत हुआ, इसे मैं किसी तरह से न छोडूंगा, जब राजाने उसकी बात न मानी लाचार फिर यह अपने घर को आया, और अपनी बेटी से कहा जितना कहने का धर्म था उतना मैंने कहा, लेकिन राजाने न माना, इतने अरसे में चोर को नगरी के फेरे दिलवाकर शुली पास ला खडा किया, और चोरने उस बनियेकी बेटीका अहवाल जो सुना पहले खिलखिलाकर हंसा, फिर डकरा डकरा रोने लगा, इतने में लोगों ने उसे शुलीपर खेंच लिया, और बनिये की बेटी उसके मरने की खबरपाकर सती होने के लिये उसी जगहपर आई, चिता बनवा उसमें बैठ उस चोरको शुली से उतार उसका सिर गोदमें रख जलने को बैठी, चाहे कि उससे आग दिलवावे इत्तिफाकन् वहां एक देवी का मन्दिर था, उसमें से तुरन्त देवी निकल कर बोली, ए पुत्री मैं तुष्ट हुई तेरे साहस पर, तु बर मांग, वुह बोली माता जो तु मुझ से तुष्ट हुई है, तो इस चोर को जीदान दे, फिर देवी बोली इसीतरह से होवेगा, यह कहकर पातालसे अमृत ला चोर को जिला दिया॥ इतनी कथा कह बैताल ने पुछा ए राजा बताओ कि चोर पहले किस कारण हंसा, और पीछे किस लिये रोया,

राजाने कहा जिसवास्ते हंसा वुह बाईस में जानता हूं और जिस लिये रोया वुह भी मुझे मालुम है सुन बैताल चोरने जोमें बिचारा यह जो मेरे वास्ते अपना सर्वस्व राजाको देतीहै अब इसका मैं क्या उपकार करूं गा यह समझ कर वुह रोया फिर अपने मन में बिचारा कि मरने के समैं उसने मुझ से प्रीति की भगवान की गति कुछ जानी नहीं जाती कुलघने को दे लक्ष्मी कुल हीन को देवे बिद्या मुरख को दे सुन्दर स्त्री पहाड़ पर बरषावे बरषा ऐसी ऐसी बातें सोचकर हंसा॥ यह सुन बैताल फिर उसी पेड़पर जा लटका राजा फिर वहां गया और उसे खोल गठरी बांध कांधेपर रख ले चला॥ १३ ॥ ॥ चौदहवां कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम कुसनावती नाम एक नगरी है वहां का सुविचार नाम राजा जिसकी बेटी का नाम चन्द्र प्रभा जब वुह बरजोग हुई तब एक दिन बसन्तरुतु में सखीयों को साथ ले बाग की सैरको चली वहां जनाने के बंद ओबस्तु से पहले एक ब्राह्मणका लड़का बरस बीस एक का अति सुन्दर मनस्वी नाम कहीं से फिरता हुआ उस बागमें आ एक दरखतके नीचे ठंडी छांवा पाकर सो रहा था। राजाके लोगोंने आ उस बाडी में जनाने का बंद ओबस्त किया पर इत्तिफाक से उस ब्रह्मनेटे को किसीने न देखा और वुह उस दरखत के नीचे सोता रहा और राजकन्या अपने लोगों

समेत बागमें दाखिल हुई। सहेलियों के साथ सैर श्रो तमासा देखती हुई कहां आति है कि जहां वुह वृक्ष नेटा सोता था, इसका वहां पहुंचना कि वुह भी लोगों के पांवके आहट से उठ बैठा, दोनों की चार नजरें हुई और कामदेव के ऐसे बस हुए कि उधर ब्राह्मणका लडका मुर्छा खा भुमि पर गिरा और इधर बेसुध हो रा जकन्या के पांव कांपने लगे पर वोहीं उसे सखियों ने हाथों हाथ थांभ लिया, निदान चंडोल में लिटा घर को ले आई और यहां ब्राह्मणका लडका ऐसा बेसुध पडा था कि अपना तन मनकी कुछ खबर न रखता था इस अरसे में दो ब्राह्मण शशी और मुलदेव नाम कांव रू देशसे विद्या पढे हुए वहां आ निकले, मुलदेव ने उस ब्राह्मणके लडके को पडा देखकर कहा, ए शशी ऐसा बेसुध यह क्यों पडा है, वुह बोला नायका ने भौं की कमान से नैन के तीर मारे हैं इस्से यह बेसुध पडा है, मुलदेवने कहा इसे उठाया चाहिये। उसने कहा तुम्हें उठाने से क्या दरकार है, उसने शशी का कहना न माना और उसे पानी छिडक कर उठाया और पुछा कि तेरी क्या दशा हुई है, वुह ब्राह्मण बोला दुख उस्से कहिये जो दुखको दुर करे और जो सुनके दुर न कर सके उस्से कहना क्या हासिल, वुह बोला अच्छा तु अपनी पीर हमारे आगे कह हम दुर करेंगे, यह सु

नके वुह बोला कि अभी राजकन्या सखियों को साथ लिये आई थी सो उसके देखने से मेरा यह गति हुई है जो वुह मिलेगी तो मैं अपना जीव रखूंगा नहीं तो प्राण तजूंगा तब वुह बोला हमारे स्थान पर चल उसको मिलने का हम यत्न कर देंगे और नहीं तो तुझे बहुत सा धन देंगे। तब मनचली बोला कि संसार में भगवानने बहुत रत्न पैदा किये हैं पर स्त्री रत्न सबसे उत्तम है और उसी के लिये मनुष धन की इच्छा करते हैं जब नारी को त्यागा तो धन लेके क्या करेंगे जिन को हसीन औरत मुयस्सर न हो उनसे संसार में पशु भले हैं धर्म का फल है धन और धन का फल है सुख और सुख का फल है नारी और जहां नारी नहीं तहां सुख कहां यह सुनके मूलदेव बोला जो तू मांगेगा सो दूंगा। तब उसने कहा ए ब्राह्मण मुझे वोही कन्या दिला दे फिर मूलदेव ने कहा अच्छा तू हमारे साथ चल तुझे वोही कन्या दिला देंगे। गरज बहुतसी तसल्ली कर उसे अपने घर ले गया और वहां जाकर दो गुटके बनाये एक गुटका उस ब्राह्मण को देकर कहा जब इसे मुंह में रखेगा तब तू बारह बरस की कन्या हो जायगा और जिस वक्त तू इसे मुंह से निकाल लेगा तो पुरुष ज्यों का त्यों हो जायगा और कहा तू अपने मुंह में रख। उसने जो अपने मुंह में रखा तो बारह बरस की कन्या हो गया और दूसरे गुटके

को जो इसने मुंहमें रखा तो आप अस्सी बरसका डो
करा बन गया, और उस कन्याको लिये हुए राजाके य
हां गया। राजाने ब्राह्मण को देख दण्डवत कर आसन
बैठने को दिया और एक आसन उस लड़की को भी
तब ब्राह्मणने एक श्लोक पढ अशीश दी कि जिस की
शोभा त्रिलोकी में फैल रही है और जिन्ने बौना हो
बलि को छला और जिन्ने बंदर साथ ले समुद्र का
पुल बांधा, और जिन्ने पर्वत हाथ पर रख इन्द्र से
ब्रज के ग्वाल बाल बचाये, सोई बासुदेव तुम्हारी रक्षा
करे। यह सुनकर राजाने पूछा महाराज आप कहां
से पधारे, मधुदेव ब्राह्मण बोला कि गङ्गा पार से मैं आ
या हूं, और वहीं मेरा घर है, और मैं अपने बेटे की
बहू को लेने गया था, पीछे मेरे गांव में भागड़ पड़ी सो
मैं नहीं जानता कि ब्राह्मणी और मेरा पुत्र भाग कहां
गये, और अब मैं इस को साथ लिये हुए उन्हें जिस तू
रह ढूंढूंगा, इससे बिहतर यह है कि आपके पास इस
छोड़ जाता हूं जबतक कि मैं न आऊं तबतक इसे य
त्न से रखना। यह बात ब्राह्मणकी सुन राजा अपने
चित्तमें चिन्ता करने लगा कि अति सुन्दर तरुण स्त्री
को मैं किस तरह रखूं और जो नहीं रखता तो यह
ब्राह्मण सराप देगा, मेरा राज भङ्ग हो जायगा, यह अ
पने जीमें राजा विचारकर बोला महाराज जो आपने

आज्ञा की कबुल है। फिर राजाने अपनी पुत्री को बु
लाकर कहा, बेटी इस ब्राह्मण की बहू को अपने पास
ले जाके बहुत यत्न से रखो, और सोते जागते खाते पी
ते चलते फिरते छिन भर इसे अपने पास से जुदा मत
कीजो। यह सुन राजकन्या उस ब्राह्मण की बहूका
कर धर अपने मन्दिर में ले गई, रात के समैं दोनों ए
क से जपर सोई, और आपसमें बातें करने लगी, बातें
करते करते ब्राह्मण की बहू बोली, किए राजकन्या
तू किस दुख के मारे अति दुर्बल हो रही है, सो मुझ
से कह राजपुत्री बोली, एक दिन बसन्त ऋतु में सखि
यों को साथ ले मैं बाग की सैरको गई थी, और वहां
एक ब्राह्मण अति सुन्दर कामदेव के समान मैंने देखा,
और उसकी मेरी चार नजरे हुई, उधर वुह बे होश
हुआ, और इधर मैं बेसुध हुई, तब सखियां मेरी अव
स्था देख घर को ले आई, और उसका नांव ठांव मैं कुछ
नहीं जानती मेरी आंखों में उसकी सूरत समा रही
है, और मुझें खाने पीने की भी कुछ रुच नहीं, इसी पी
र से मेरे शरीर की यह दशा हुई है, यह सुन के वुह
ब्राह्मण की बहू बोली जो तेरे प्रीतम को तुझसे मि
ला दूं तो तू मुझे क्या दे राजकन्या बोली कि सदा ते
री दासी हो रहुंगी यह सुनके वुह गुटका अपने मुंह
से निकाल फिर पुरुष हो गया, और यह उसे देखके स
रमाई फिर उस ब्राह्मण के लडके ने गन्धर्व बिवाह की

रीत से उसके साथ अपना ब्याह किया और इसेप्रः उ
सीतरह रातको मर्द होता और दिन को रण्डी बना
रहता, निदान छः महीने पीछे राजकन्या को गर्भ रहा,
एकदिन का जिक्र है कि राजा सारे कुटुम्ब को साथ
ले कर दीवान के घर शादी में गया, वहां मंत्री के बेटेने
उस स्त्री भेषधारी ब्राह्मण के लड़के को देखा, देखते
ही आशिक हो गया, और अपने एक मित्रके आगे क
हने लगा जो यह नारी मुझे न मिलेगी तो मैं अपना
प्राण तजुंगा। इस अरसे में राजा नौता खा कुंवर समे
त अपने मन्दिर को आया, पर मंत्रीके पूत को उसके वि
रह की डाह से निपट कठिन अवस्था हुई, और अन्न
पानी छोड़ दिया। यह गति देख उसके मित्रने जा मंत्री
से कहा, और दीवानने यह अहवाल सुन आ राजासे
कहा, महाराज उस ब्राह्मण की बहूकी प्रीति में मेरे बे
टे की बुरी हालत है खाना पीना छोड़ दिया है, जो
आप कृपा करके ब्राह्मण की बहूको मुझे देवें तो उस
की जान बचे, यह सुन राजा क्रोधकर बोला, अरे मूर्ख
ऐसी अनीति करना राजाओं का धर्म नहीं है सुन तो
एक मनुष की थाती हो और बिना आज्ञा उसको दूस
रे को देना उचित है, जो तू मुझसे यह बात कहता है;
यह सुनके प्रधान निरास हो अपने घर को आया, पर
उस लड़के का दुख देखकर उसने भी अन्न जल छोड़ दि
या, जब कि तीन दिन दीवानको बिन दाने पानीके गुज

रे तब तो सब कारबारियों ने एकठे होकर राजासे आ-
अर्ज की, कहा राज मंत्री का पुत्र अब तब हो रहा है,
और उसके मरने से दीवान भी न बचेगा, और दीवान
के मरने से राज काज न चलेगा, बिहतर यह है कि जो
हम अर्ज करें सो कबूल हो, यह सुनके राजा ने आज्ञा
दी कि कहो। तब उन में से एक अव्वल बोला, महाराज
उस बूढे ब्राह्मण को गये हुए बहुत दिन हुए, कि फिरा
नहीं भगवान जाने मर गया यां जीता है, इस से उचित
यह है कि उस ब्राह्मण की बहूको मंत्री के बेटे को दे, अ
पना राज काइम रखिये, और कदाचित वुह आया तो
गांव धन दीजेगा, अगर इसपर राजी न होगा तो उस
के लडके का ब्याह कर बिदा कीजेगा। यह बात सुन
राजाने उस ब्राह्मण की बहूको बुलाकर कहा, तू मे
रे मंत्री के पुत्र के घर जा, वुह बोली कि स्त्रीका धर्म
नष्ट होता है, पति रूप पाके, और ब्राह्मण का धर्म
जाता है राजाकी सेवा करने से, और गाय खराब हो
ती है दूरकी चराई से, और धन जाता है अधर्म पने से
इतना कह फिर बोली, जो महाराज तुम मुझे मंत्री के
बेटे को देते हो, तो उससे यह बात ठहरा दीजिये, कि
जो कुछ उससे मैं कहूं सो वुह करे, तब मैं उसके घर जा
ऊंगी, राजा बोला कहो कि वुह क्या करे, उन्ने कहा म
हाराज मैं ब्राह्मणी और वुह मंत्री इससे बिहतर यह है,
कि वुह पहले सब तीर्थयात्रा कर आवे, तब मैं उसके साथ

घर करूं। यिह बात सुनके राजाने मंत्रीके बेटे को बुला कर कहा पहले तू तीर्थयात्रा कर, आ तब उस ब्राह्मनी को तुझे देवेंगे। राजा की बात सुन दीवान के बेटे ने कहा महाराज वुह मेरे घर जा बैठे, तो मैं तीर्थ को जाऊं। यिह बात सुन राजाने उस ब्राह्मनी से कहा जो तुम पहले उसके घर में जाके रहो, तो वुह तीर्थ यात्रा को जाय, लाचार हो राजा के कहने से ब्राह्मनी उसके घर में जा रही, तब प्रधान के पुत्रने अपनी नारी से कहा तुम दोनों निहायत प्यार इखलास से बाहम एकजा रहना, और आपस में किसी तरहका झगडा लडाई न करना, और बिराने घर कभी न जाना इतनी सीख दे वुह तो तीर्थ यात्रा को गया, और इधर उसकी बहू सौभाग्य सुंदरी नाम ब्राह्मन की बहू को अपने साथ ले एक बिछौने पर रातको लेटी कुई बातें इधर उधरकी करने लगी। कितनी एक देर के बाद उस दीवान के पुत्र की बहूने यिह बात कही ऐ सखी। इस वक्त तो मैं इश्क से जली जाती हूं, पर मतलब मेरा किस तौर सेहासिल हो, दूसरी बोली कि अगर तेरा मतलब को मैं बरलाऊं तो तू मुझे क्या दे, उन्ने कहा सदा तेरे आगे हाथ जोडे आज्ञाकारी रहूं। तब इन्ने अपने मुंह से गुटके को निकाल पुरुष बनगया। हसे थः इसी तरह रात को मर्द बनता, और दिन को रंडी, फिर तो इन दोनों में बडी प्रीति हुई। गरज़ इसी तर

ह से छः महीने बीते, और मंत्री का पुत्र आ पहुंचा, उधर लोग उसके आने की खबर सुन मंगलाचार करने लगे, और इधर ब्राह्मन की बहू ने गुटका मुंह से निकाल मर्द बन खिडकी की राह महल से निकल अपनी राह ली, फिर कितनी एक देर में उस मूलदेव ब्राह्मन के पास पहुंचा, कि जिस ने इसे गुटका दिया था, और उस से सब अपनी आदि अंत की अवस्था कही, तब मूलदेव ने तमाम अहवाल सुनकर गुटका इससे ले अपने साथी शशी नाम ब्राह्मन को दिया, और दोनों गुटके अपने अपने मुंह में रखलिये, एक बूढा बन गया और दूसरा बीस बरष का, फिर ये दोनों राजा के यहां गये,। राजा ने देखतेही दंडवत कर, इनके बैठने को आसन दिये, और इन्होंने भी असीस दी, राजा ने इनकी कुशल छेम पूछ मूलदेव से कहा, कि इतने दिन तुम्हें कहां लगे, ब्राह्मन बोला महाराज। इसी पुत्र के ढूंढने को गया था, सो इसे खोजकर आपके पास ले आया हूं, अब इसकी बहू को दो तो मैं बहू बेटे को अपने घर ले जाऊं,। तब राजा ने ब्राह्मन के आगे, वुह सब वृतान्त कह सुनाया,। ब्राह्मन ने सुनतें ही अति कोपकर राजा से कहा, यिह कौन सा व्योहार है, जो तुमने मेरे बेटे की बहू, और को दी, अच्छा जो तुमने चाहा सो किया पर अब मेरा सराप लो,। तब राजा बोला कि हे देवता तुम क्रोध मत करो, जो तुम कहो,

सो मैं करूं। ब्राह्मन बोला अच्छा जो तू मेरे सराप से डरकर मेरा कहा करता है तो तु अपनी पुत्री मेरे लडके को ब्याह दे। यिह सुन राजाने एक जोतषी को बुला शुभ लगन मुहूर्त ठहराय अपनी पुत्री उस ब्राह्मन को लडके से ब्याह दी फिर यिह वहां से राज कन्या को दान दहेज समेत ले राजा से बिदा हो अपने गांव में आया। यिह खबर सुन वुह सनखी ब्राह्मन भी वहां आ उस से झगडने लगा कि मेरी स्त्री मुझे दे। अग्नि नाम ब्राह्मन बोला कि मैं दस पंचोंमें ब्याहकर लाया हूं यिह स्त्री मेरी उसने कहा कि इसे तो मेरा गर्भ रहा तेरी किस तरह से यिह नारी होगी और आपस में बिवाद करने लगे मूलदेव ने इन दोनों को बहुत समझाया लेकिन किसूने उसका कहना न माना॥ इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा बीर बिक्रमाजीत। कहो वुह भार्या किस को हुई राजाने कहा वुह स्त्री अग्नी ब्राह्मन की हुई। तब बैताल बोला गर्भ उस ब्राह्मन का जोरू इसको किस तरह से हुई राजाने कहा कि उस ब्राह्मन का पेट रखवाया हुआ तो किसूने मालूम न किया और इन्ने दस पंचों में बैठके शादी की इस लिये इसी की जोरू ठहरी और वुह लडका भी इसी को क्रिया कर्मका अधिकारी होगा यिह बात सुन बैताल उसी रूख में जा लटका फिर राजा गया और बैताल को बांध कांधे पर रख ले चला॥ * ~ * ~ *

॥ पंद्रहवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा हिमाचल नाम एक पर्वत है तहां गंधर्वोंका नगर है, और वहां का राज जीमूतकेतु करता था। एक समैं उसने पुत्रके अर्थ कल्पवृक्ष की बहुत सी पुजा कि, तब कल्पवृक्ष खुश हो बोला, ऐ राजा तेरी सेवा देख मैं सतुष्ट हुआ, जो तु चाहे सो वर मांग, राजाने कहा, कि एक पुत्र मुझै तु दे, जो मेरा राज और नाम रहे। उन्ने कहा होंगा, कितने दिनोंके बाद राजाके बेटा हुआ, उसे ऐसाही निहायत खुशी हुई और बहुत सा दान पुन्य कर ब्राह्मनों को बुला उसका नाम करन किया, ब्राह्मनों ने उसका नाम जीमुतवाहन धरा, जब कि वुह बारह बरष का हुआ, तब शिव की पुजा करने लगा, और सब शास्त्र पढके बडाही ज्ञानी ध्यानी साहसी सुर वीर धर्मात्मा पंडित हुआ, उस समैं उस को बराबर कोइ न था, और जितने उसके राजमे लोग थे, वे सब अपने अपने धर्म मे समाधान थे, जब वुह जवान हुआ, तो उन्ने भी कल्पवृक्ष की बहुत सेवा की, तब कल्पवृक्ष ने प्रसन्न हो उससे कहा, जिस बात की तुझे इच्छा हो सो मांग, मैं तुझे दुंगा। फिर जीमुतवाहन बोला जो तुम मुझ से प्रसन्न हुए हो तो मेरी सब रैयत का दरिद्र दुर करो, और जितने लोग मेरे राज में हैं, सबमाल औ दौलत से बराबर हो जावैं। तब कल्पवृक्ष ने वर

दिया सब लोग धनसे ऐसे आसूदा हुए कि कोई किसी
का हुक्म न मानता था और कोई किसी का काम न
करता जब उस राजाके लोग ऐसे हो गये तब जो भाई
बन्धु उस राजाके थे वे आपस में विचार करने लगे कि
बाप बेटा तो दोनों धर्म के बस हुए और लोग इनका
हुकुम नही मानते इससे उत्तम यह है कि इन दोनों
को पकड के कैद कीजिये और राज इनका छीन ली
जिये गरज राजा तो उन्हों की तरफ से ग़ाफ़िल था
और उन्होंने आपस में मनसुबा बांध फ़ौज ले राजा
का मन्दिर जा घेरा जब यह खबर राजाको पहुंची त
ब राजाने अपने बेटे से कहा अब क्या करें राज कुमा
र बोला महाराज। आप यहां बिराजिये आपके धर्म
से अभी जाके उन्हें मार लेता हूं। राजाने कहा ऐ पु
त्र यह शरीर अनित्य है और धन भोन अस्थिर है ज
ब आदमी जन्मा तो मृत्यु भी उसके साथ है इससे अब
राज छोड धर्म काज किया चाहिये ऐसे शरीर के का
रण और इस राजका वास्ते महापाप करना उचित न
हो क्यों कि राजा युधिष्ठिर भी महाभारत करके पी
छे पछताये थे। यह सुन उसके बेटेने कहा अच्छा रा
ज अपना गोतियों को दीजिये और आप चलके तप
स्या कीजिये यह बात ठहरा भाई भतीजों को बुला
वा राजा दे दोनों बाप बेटे मलया चल पर्वत के ऊप

र गये और वहां आ कुटी बना रहने लगे, जीमूत वाह
न से और एक ऋषी के बेटे से दोस्ती हुई, एक दिन उ
स पर्बत के ऊपर राजा का बेटा और ऋषी का बेटा सै
र के वास्ते गये, वहां एक भवानी का मन्दिर नजर आ
या, उस मन्दिर में एक राजकन्या बीन लिये हुए देवी
के आगे गा रही थी, उस कन्या को और जिमूतवाहन
की चार नजरें हुई और दोनों की लगन लग गई पर
राजकन्या मन मार लाजकी मारी अपने घरको पधा
री और इधर यह भी उस ऋषिके बेटे की शरम के
मारे अपने स्थान पर आया, वह रात उन दोनों गुल
उजारों को निहायत बेकली से कटी, सुबह के होते
ही उधर से राजकन्या देवी के मन्दिर को गई, और इ
धर से राजकुमार ने भी जाते ही देखा कि राज क
न्या गाती है तब इसने उसकी सखी से पूछा यह कि
सकी कन्या है सखीने कहा यह मलयकेतु राजाकी पु
त्री है मलया वती इसका नाम, और अभी कुमारी है,
यह कह फिर सखी ने इस राजपुत्र से पूछा, कहो सुन्द
र पुरुष तुम कहां से आये हो, और तुम्हारा क्या नाम
है। यह बोला, बिद्याधरों का राजा जीमूतकेतु नाम
तिसका मैं सुत हूं, और जीमूत वाहन मेरा नाम, राज
के भङ्ग होने से पिता पुत्र हम यहां आन के रहे
हैं, फिर सखीने ये बातें सुन कर सारी राज कन्या से क
हीं, यह सुन अपने जीमें बहुत दुख पाय घर को आई,

और रातको चिन्ता करके सो रही पर यह दशा इस
को देख सखी ने वृह वृत्तांत इसकी माके आगे ज़ाहि
र किया राणी ने सुनकर राजा के आगे बयान किया
और कहा महाराज पुत्री आपकी बरजोग हुई है इस
का वर क्यों नहीं ढूंढते। यह सुनके राजाने अपने
जीमें चिन्ताकर उसी समै मित्रावसु नाम अपने पुत्र
को वुलाकर कहा, बेटा अपनी बहिन का वर ढूंढ ला
ओ तब वृह बोला, कि महाराज गन्धर्व का राजा जी
मूतकेतु नाम तिसका पुत्र जीमूत बाहन नाम राज छो
ड़ पिता पुत्र दोनों सुना है कि यहां आये हैं। यह सु
न मलयकेतु राजाने कहा यह पुत्री जीमूत बाहन को
दूंगा, इतना कह बेटे को आज्ञा दी, कि पुत्र जीमुतवा
हन राजकुमार को राजा के बापसे जाकर वुला ला
ओ। यह राजा का हुकुम पाकर उसी मकान पर गया,
और वहां जाकर उसके पितासे कहा अपने पुत्र को
हमारे साथ कर दो, कि हमारे पिताने कन्या दान देने
को बुलाया है यह सुन के राजा जीमुतकेतु ने अपने
बेटे को साथ कर दिया और वृह यहां आया फिर म
लयकेतु राजाने उसका गन्धर्व बिवाह कर दिया। जब
कि इसकी शादी हो चुकी तब दुलहन को और मित्रा
बसु को अपने स्थान पर ले कर आया, फिर इन तीनों
ने राजा को दण्डवत की और राजाने भी उन्हें आशी
स दी वृह दिन तो योंही गुज़रा, लेकिन दूसरे दिन

सुबह को उठते ही दोनें राजकुमार उस मलयागिर पर्वत पर फिरने को गये, वहां जाकर जीमूत बाहन क्या देखता है कि एक सुफ़ैद ढेर ऊंचा सा है, तब इसने अपने साला से पूछा भाई यह धोला २ ढेर कैसा नज़र आता है, वुह बोला पाताल लोक से करोडें नाग कुमार यहां आते हैं, तीन्हें गरुड़ आनके खाता है, यह उन्हीं के हाड़ोंका ढेर है, यह सुनके जीमूत बाहन ने सालेसे कहा मित्र तुम घर जाके भोजन करो क्यों कि मैं इस समैं अपनी नित्यपुजा करता हूं कि मेरे पुजा करने का अब वक़्त हुआ है। यह सुनके वह तो गया, और जीमुत बाहन आगे को जो बढा तो रोने की आवाज़ आने लगी उसी आवाज़ की धुनपर चला चला वहां जो पहुंचा तो क्या देखता है कि एक बुढिया दुख से व्याकुल हो रोती है, उसके पास जाके पुछा ऐ माता तु किस कारण रोती है तब वह बोली कि शंखचुड नाम एक नाग जो मेरा बेटा है तिस की आज बारी है। उसे गरुड आके खा जावेगा इस दुख से मैं रोती हूं। इसने कहा हे माता मत रो तेरे पुत्र के बदलें मैं अपना प्राण दुंगा बुढिया बोली बेटा ऐसा मत कीजियो तुही मेरा शंखचुड है यह कहतीथी कि इतनें मे शंखचूड भी आन पहुंचा और उसनें सुनकें कहा ऐ महाराज मुझसे दरिद्री बहुतसे पैदा होता हैं और मरतें हैं पर आपसे धर्मात्मा दयावन्त संसार में घड़ी घडी पैदा नहीं होते इस

से आप मेरे पलटे अपना जीन दीजिये क्योंकि आ
पके जीते रहने से लाखों आदमियों का उपकार हो
गा और मेरा जीना मरना दोनों बराबर है तब जीमू
तवाहन बोला कि यह सत पुरुषों का धर्म नहीं है जो
मुंह से कहकर न करें तू जहां से आया है वहीं को
जा। यह सुनके शंखचूड़ तो देवीके दर्शन को गया औ
र आकाश से गरुड़ उतरा। इतने में राजकुमार देख
ता क्या है पांव तो उसके चारचार बांस बराबर हैं औ
र ताड़सी लम्बी चोंच पहाड़ के समान पेट फाटक की
मानन्द आंखें और घटा से पर एका एकी चोंच पसा
रे राजपुत्र पर दौड़ा पहले तो राजपुत्र ने अपने तई
बचाया पर दूसरी बेर वुह चोंच में रख इसको ले उ
ड़ा और चक्कर मारने लगा इतने में एक बाजुबंद कि
उसके नगपर राजा का नाम खुदा हुआ था वुह खुल
कर लोहू भरा राजकन्याके सन्मुख गिरा वुहउसको देख
कर मूर्छा खा गिर पड़ी। जब एक घड़ी के बाद चेती
तो उसने सब वृत्तान्त अपने माता पिता को कहला
भेजा वे यह बिपता सुनकर आये गहना रुधिर भरा
देख रोये और तीनों आदमी ढूंढने को निकले तो
रस्ते में इन्हें शंखचूड़ भी मिला और उनसे बढ कर अ
केला वहां गया जहां राजकुमार को देखा था और
पुकार पुकार कहने लगा ऐ गरुड़ छोड़ दे छोड़ दे यह
तेरा भक्ष नहीं है शंखचुड़ मेरा नाम है मैं तेरा भक्ष

हूं। यह सुनके गरुड़ घबराकर गिरा और अपने जी में सोचा कि ब्राह्मण या क्षत्री मैंने खाया यह क्या किया फिर इस राजपुत्र से कहने लगा ऐ पुरुष सच्च कह किस लिये अपना जी देता है राजकुमार बोला ऐ गरुड़ वृक्ष छाया करते हैं औरों के ऊपर और आप धूप में बैठे फुलते फलते हैं पराए वास्ते अच्छे पुरुषों का और वृक्षों का यही धर्म है जो यह देह और के काम न आवे तो इस शरीर से क्या प्रयोजन है मसल मशहूर है कि जों जों चन्दन को घिसते हैं त्यों त्यों दूनी दूनी सुगन्ध देता है और गन्ने को जों जों छोल २ काट काट टुकड़े टुकड़े करते हैं त्यों त्यों वह अधिक अधिक स्वाद देती है जों जों कञ्चन को जलाते हैं त्यों त्यों अति सुन्दर रंगीला होता है उत्तम लोग जो हैं सो प्राण जाने से भी अपना सुभाव नहीं छोड़ते उन्हें किसीने भला कहा तो क्या और बुरा कहा तो क्या दौलत रही तो क्या जो न रही तो क्या अभी मरे तो क्या और बाद मुद्दत के मरे तो क्या जो मनुष्य न्याव की राहसे चलते हैं कुछ हो और राहपर पांव नहीं रखते क्या हुआ जो मोटे हुए या दुबले गरज जिसके शरीर से उपकार न हो उसका जीना निष्फल है और बिराने अर्थ जिनका जीव है उन्हीं का जीना सुफल है यों तो कुत्ता कौवा भी अपना जी पालता है जो ब्राह्मण गौ मित्र स्त्री की खातिर बल्कि बेगाने वा

ले जी देते हैं सो निश्चय सदा बैकुण्ठ बास करते हैं गरुड़ बोला जग में सब अपनी जानकी रक्षा करते हैं और अपना जी दे दूसरे के जी को बचाने वाले संसार में बिरलेही होते हैं यह कह गरुड़ बोला बर मांग मैं तेरे साहस पर सन्तुष्ट हुआ यह सुनके जीमूतवाहन ने कहा हे देव जो तुम मेरे ऊपर प्रसन्न हुए हो तो अब नागों को न खाओ और जो खाये हो उन्हें जिला दो। यह सुन गरुड़ ने पाताल से अमृत लाकर सांपों के हाडोंपर छिड़का कि फिर वे जी उठे और इस से कहा ए जीमूतबाहन मेरे प्रसादसे तेरा गया हुआ राज फिर तुझे मिलेगा यह बर दे गरुड़ अपने स्थानपर गया और संखचूड़ भी अपने धाम को और जीमूतबाहन भी वहांसे चला कि राहमें उसका ससुर और सास और स्त्री मिली फिर उन समेत अपने बाप के पास आया और यह अहवाल सुनके उसके चचा और चचेरे भाई बल्कि सारे कुटुम्ब के लोग मिलने को आये और पांवों पड़ इन्हें ले जा राजपर बिठाया इतनी कथा कह बैताल ने पूछा ए राजा इनमें से सत किसका अधिक हुआ राजा बीर बिक्रमाजीत बोला शंखचुड़ का। बैताल ने कहा किस तरह से राजाने कहा गया हुआ शंखचुड़ फिर जीव देने को आया और गरुड़ के खाने से इसे बचाया बैताल बोला कि जिसने पराये लिये अपनी जान दी उसका सत क्यों न अधिक हुआ

राजाने कहा जीमूतबाहन जातका चची है उसे जी देने का अभ्यास हो रहा हैं दूसरे उसे जान देना कुछ कठिन मालुम दो यह सुन बैताल फिर उसी पेड में जा लटका और राजा वहां जा उसे बांध कांधेपर रख ले चला ॥ १५ ॥ ※—※—※—※—※—※

॥ सोलहवी कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा बीरबिक्रमाजीत चन्द्रशेखर नाम एक नगर है कि वहा का रहने वाला रतन दत्त सेठ था उसकीएकबेटीथी उसकी नाम उन्मादिनीथी जबवुह यौवनावती हुई तब उसके बाप ने वहां का राजा से जाकर कहा महाराज मेरे घर में एक कन्या हैं जो आप उसको चाह हो तो लिजिये नहीं मैं और किसी को दूं यह सुन राजाने दो तीन प्राचीन दासों को बुलाकर कहा इस सेठ की पुत्री के लक्षण जाके देख आओ। वे राजाकी आज्ञा से सेठके घर आये और उस लडकी का रूप देख सभी मोहित हुए इसे ऐसा जाया अंधेरे घर का उजाला आंखे मृगकी सी चोटी नागिन सी भवें कमानसी नाक कीर की सी बत्ती सी मोति की सी लडी होठ कंदुरी की मानन्द गला कपोत का सा कमर चीते की सी हाथ पांव कोमल कमल से चन्द्रमुखी चम्पावरणी हंसगमनी कोकिलबैनी जिसकेरूप को देखइन्द्रकी अपसरा भी लज्जाय इसप्रकारकीसुंदरी सब सुलक्षण भरी देख उन्होंने आपसमेंबिचारकियाऐसीजो

नारी राजा के घरमें आयगी तो राजा उसका अधीन होयेगा, और राज काज की चिन्ता कुछ न करेगा, इस से बिह तर यह है, कि राजासे कहिये वुह कुल घरकी हैं, आपके जोग नहीं, यह विचारकर वहां से राजाके पास आकर, उन्होंने यह निवेदन किया, महाराज उस कन्या को हम ने देखा वुह आपके लाइक नहीं, यह सुनके राजाने सेठ से कहा, मैं ब्याह न करूंगा, । फिर सेठने अपने घर आ क्या काम किया, कि बलभद्र जो राजा का सेनापति था, उसके साथ अपनी पुत्री का बिवाह कर दिया, वुह उसके घरमें रहने लगी, एक दिन का जिक्र है कि राजाकी सवारी उस राहसे निकली और वुह भी उस समैं सिंगार किये, अपने कोठे पर खड़ी थी इत्तिफाकन् राजाकी और उसकी चार नजरें हुई, राजा अपने मनमें कहने लगा, यह देवकन्या है या अपछरा है, या नरकन्या है। गरज उसका रूप देख मोहित हो गया, और वहां से निपट बेकरार हो अपने मन्दिर को आया, उसका मुंह देख द्वारपाल बोला, महाराज आपके शरीर में क्या बिथा है राजाने कहा आज मैंने आते हुए बाट में एक कोठेपर सुन्दर स्त्री देखी है, मैं नहीं जानता हूं कि वुह हूर या परी या इनसान है, कि उसके रूपने एक बारगी मेरा मन मोह लिया, इससे बिकल हूं, यह सुनके दरबान ने अर्ज

की महाराज उसी सेठ की लडकी है जो आपका से नापति बलभद्र है वुह उसे ब्याह लाया है, राजाने कहा मैंने जिन लोगों को लक्षण देखने भेजा था उन्होंने हमसे छल किया यह कह राजाने चोपदार को फरमाया उन्हें जल्दी ले आवो राजाकी यह आज्ञा पा चोपदार उन्हें बुला लाया गरज जब वे राजाके सन्मुख आये तो राजाने कहा मैंने जिस लिये तुम्हें भेजा था और जो मेरी इच्छा थी सो तुमने न की बल्कि अपने जीसे एक बात झूठी बनाकर मुझे उत्तर दिया और आज मैंने अपनी आंखों से उसे देखा वुह ऐसी सुन्दर नारी सब गुण पूरी है कि इस समें उससी मिलनी कठिन है यह सुनके उन्होंने कहा महाराज जो आप फरमाते हैं सो सच्च हैं पर हमने उसे कुलक्षणी जिसवास्ते हुजुर में अर्ज किया था सो वुह मुद्दा आप सुनिये आपसमें हमने यह बिचारा ऐसी सुन्दर नारी जो महाराज के घरमें जायगी तो महाराज देखते ही उसके बस होंगे और राज काज सब छोड देंगे तो राज भङ्ग होगा इस भय से हमने ऐसा बनाकर कहा था यह सुनके राजाने उनसे तो कहा कि तुम सच्च कहते हो पर उसकी याद में राजाको निपट बेचैनी थी और सब लोगोंपर राजाकी बेकरारी जाहिर थी कि इतने में बलभद्र भी आ पहुंचा और उन्ने हाथजोड राजाके साम्हने खडे होकर अर्जकी हे पृथ्वीनाथ मैं आपका दासवुह

आप की दासी और उसके हेत आप इतना कष्ट पावें इससे महाराज आज्ञा दीजिये कि वुह हाजिर होय यह बात सुन राजा निहायत क्रोध करके बोला बिरानी स्त्री के पास जाना बड़ा अधर्म है यह बात क्या तूने मुझसे कही क्या मैं अधर्मी हूं जो अधर्म करूं बिरानी स्त्री माता की समान है और बिराना धन माटी बराबर सुनो भाई जैसा आपना जो आदमी समझे वैसा ही सबका जी समझे फिर बलभद्र बोला वुह मेरी दासी है जब मैंने और को दी फिर बिरानी स्त्री क्यों कर हुई राजाने कहा जिस कामके करने से संसार में कलङ्क लगे सो काम मैं न करूंगा। फिर सेनापति ने अर्ज किया महाराज उसे मैं घर से निकाल और अगर उसे बेश्या कर आपके पास लाऊंगा तब राजा ने कहा जो तू सती नारी को बेश्या करेगा तो मैं तुझे बड़ा दण्ड दूंगा यह कह राजा उसकी याद में चिन्ता कर के दशदिन में मर गया फिर बलभद्र सेनापति ने अपने गुरु से जाकर पूछा मेरा स्वामी उन्मादिनी के कारण मूआ अब मुझे क्या करना उचित है सो आज्ञा कीजिये उसने कहा सेवक का धर्म यह है स्वामीके पीछे अपना भी जि दे यह सुनके बलभी वहां गया जहां राजाके तई जलाने को ले गये थे जितनी देर में राजाकी चिता तैयार हुई उसने भी असनान पूजा से फरागत की और जब चितामें आग दी तब यह भी चिताके पास

गया। और सूरज के साम्हनें हाथ जोडकर कहने लगा, ऐ सूरज देवता मैं मन वचन कर्म करके यही कामना मांगताहूं कि जन्मजन्म इसी स्वामीकोपाऊं, और तेरा गुण गाऊं, इतना कह दण्डवतकर आगमें कुद पडा, यह खबर सुन उन नादिनी अपने गुरुके पास गई, और उससें सब कहके पूछा, महाराज स्त्रीका धर्म क्या है, उसनें कहा, माता पितानें जिस के तई अपनी कन्या दी, उसी को सेवा करनेसें वुह कुलवती कहलाती है, और धर्मशास्त्र में ऐसा लिखता है कि जो नारी अपनें स्वामी को जीतें तप व्रत करती है, वुह अपनें स्वामी को उमर कम करती है, और अन्तकाल को नरक में पडती है, पर उत्तम यह है कैसाही स्वामी हीन हो, उसी को सेवा करनें सें इसकी मुक्ति होती है, और जो नारी स्मशानमें सती होनें की कामना कर जितनें पांव अमीनपर रखती है, उतनें अश्वमेध यज्ञ करनें का फल होता है, इस में कुछ सन्देह नहीं, और सती होने के समान नारीको कोई धर्म नहीं। यह सुन दण्डवत कर अपने घर को आई, और स्नान ध्यान कर बहुत सा दान ब्राह्मणो को दे चिता पास जा, एक परि क्रमाकर बोली कि ऐ नाथ मैं तेरी दासी जन्म जन्म हूं, इतना कह यह भी आगमें जा बैठी और जल गई, इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा इन तीनों में किस का सत अधिक हुआ, राजा बीर बिक्रमाजीत नें कहा उस

राजा का बैताल ने कहा किसतरह राजा बोला से नापति की दी हुई स्त्रीको छोड़ा और उसीके वास्ते जान दी पर धर्म रखा स्वामीके लिये सेवक को जी देना उचित है और पतिके लिये स्त्री का सती होना लाजिम है इस कारण राजा का सत अधिक हुआ। बैताल इतनी कथा सुन उसी तरवर में जा लटका राजा भी पीछे पीछे जा फिर उसे बांध कांधेपर रखलेचला। १६

॥ सतरहवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा उज्जैन नगरी का महासेन नाम राजा था और वहां का बासी देवशर्म्मा ब्राह्मण जिसके बेटेका नाम गुनाकर वुह बड़ा ज्वारी हुआ यहां तलक की जो कुछ उस ब्राह्मण का धन था सो जूए में हार दिया तब सारे कुनबेके लोगोंने गुनाकर को घर से निकाल दिया और उससे कुछ बन न आया लाचार होकर वहां से चला तो कितने दिनों में एक शहर में आया वहां देखता क्या है कि एक जोगी धूनी लगाये हुए बैठा है उसे दण्डवत कर यह भी वहां बैठ गया जोगीने इससे पूछा तू कुछ खायगा इसने कहा महाराज देोगे तो क्यों न खाऊंगा जोगी ने एक आदमी की खोपरी में खाना भरके इसे ला दिया इसने देख कर कहा इस कपाल का अन्न मैं न खाऊंगा। जब इन्ने भोजन न किया तब जोगीने ऐसा मंत्र पढा कि एक यक्षनी

हाथ जोड आनके हाजिर हुई और बोली महाराज जो आज्ञा हो सो करूं जोगीने कहा इस ब्राह्मण के अच्छा भोजन दे। इतना सुनने उसने एक अच्छा सा मन्दिर बना उस में सब सुखके सामान रखके इसे यहां से अपने साथ ले गई। और एक चौकी पर बैठा भांति भांतिके व्यञ्जन और पकवान थाल भर भर उसके रूबरू रखे। उसने मन मानता जो भाया सो खाया। और इसके बाद पानदान उसके सन्मुख रख दिया। और केसर चन्दन गुलाब में घिसकर उसके बदन में लगाया। फिर अच्छे २ वस्त्र सुगन्धों से बासकर पहना फूलों की माला गले में डाल वहां से पलङ्गपर ला बिठाया। कि इतने में सांझ हुई। और यह भी अपनी तैयारी कर सेजपर आ बैठी। और उस ब्राह्मण ने सारी रैन सुख चैन से काटी। जब भोर हुई वुह यक्षनी अपने स्थानपर गई। और इसने जोगीके पास आनकर कहा कि स्वामी वुह तो चली गई। अब मैं क्या करूं। जोगी बोला वुह विद्याके बल से आई थी। और जिसे विद्या आती है। उसके पास रहती है। इसने कहा महाराज। यह विद्या मुझे दो तो मैं साधुं। तब जोगीने एक मंत्र उसको दिया। और कहा कि इस मंत्र को चालीस दिन आधी रातके समैं जलमें बैठ एकचित्त होके साध। इसी तरह से यह साधने को जाया। करता। और अनेक अनेक तरह के भय नजर आते। पर यह किसूसे न डरता। जब कि वुह मुद्दत

हो चुकी तो इसने जोगी से आकर कहा कि महाराज जितने दिन आपने कहेथे मैं साध आया उसने कहा कि इतने दिन अब आगमें बैठकर साध इसने कहा महाराज एकबेर अपने कुटुम्ब से मिल आऊं फिर आके साधूंगा यह जोगीसे कह बिदा हो अपने घर को आया और कुनबे के लोगोंने इसे जो देखा तो गले लगा लगा रोने लगे और इसके बाप ने कहा ए गुणाकर इतने दिनों तू कहां था और किसवास्ते घरको बिसारा। ए पुत्र ऐसे कहा है जो पतिव्रता स्त्रीको छोडके जुदा रहता है और जवान नारीको पीठ देता है या जो जिसे चाहता है वुह उसे नहीं चाहता वुह चण्डाल के समान होता है और ऐसे कहा है गृहस्थी धर्म बराबर कोई धर्म नहीं और घरवाली को बराबर कोई संसार में सुख देने वाली नहीं और जो माता पिता की निन्दा करते हैं सो अधम नर हैं और उनकी गति मुक्ति कभी नहीं होती ऐसा ब्रह्माने कहा है। तब गुणाकर बोला कि यह शरीर रक्त और मांसका बना हुआ है सो कीडों की खान है और सुभाव इसका यह है कि एकरोज इसकी खबर न लीजे तो दुर्गन्ध आती है जो ऐसे शरीर से प्रीति करते हैं सो मूरख हैं और जो इससे हित नहीं करते वे पण्डित हैं और इस शरीर का यही धर्म है कि बार बार जनम लेता है और मरता है ऐसे शरीर का क्या भरोसा कीजे इसे

बहुतेरा पवित्र कीजे पर यह पवित्र नहीं होता, जैसे मलका भरा घडा ऊपरके धोने से पाक नहीं होता और कोयले को कोई बहुतेरा धोवे पर वुह धौला नहीं होता, और जिस शरीर में मलके सोत सदा बहा करें वुह किस तरह से शुद्ध हो। इतना कह फिर बोला कि किसकी मा किसका बाप किसकी जोरू किसका भाई इस संसार की यही रीतहै कि कितने आते हैं और कितने जाते हैं, जो यज्ञ और होम के करनेवाले हैं सो आगको ईश्वर जानते हैं, और जो कम अक्ल हैं से प्रतिमा कर भगवानको मानते हैं, और योगी लोग अपने घटमें ही हरि जानते हैं ऐसे गृहस्थी धर्म को मैं न करूंगा, बल्कि योगाभ्यास करूंगा, इतना कह उसने घरसे बिदा ले योगीके पास आ आगमें बैठ मंत्र साधा पर यक्षिनी न आई, तब योगीके पास गया और योगीने उससे कहा कि विद्या तुझे न आई, फिर इसने कहा हां महाराज न आई। इतना किस्सा कह, बैताल बोला कि ऐ राजा कहो किस कारण उसे विद्या न आई राजा बोला कि वुह साधक दुचित्त हुआ, इस लिये न आई और ऐसे कहा है कि एक चित्त होने से मंत्र सिद्ध होता है और दुचित्त होनें से नहीं होता, और ऐसे भी कहा है कि जो दान से हीन हैं, तिन की कीर्त्ति नहीं होती, और जो सतसे हीन हैं, उन्हें लाज नहीं जो न्याव से हीन हैं, तिन्हें लक्ष्मी नहीं मिलती

और जो ध्यान से हीन हैं उन्हें भगवान नहीं मिलता । यह सुन बैताल ने कहा कि जो साधक मंत्र सिद्ध करने के लिये आगमें बैठा वुह किसतरह दुचित्ता हुआ, राजाने कहा कि मंत्र साधने की बिरियां जब वुह अपने कुटुम्ब से मिलने गया उस समें जोगीने क्रोध कर अपने मन में कहा कि ऐसे दुदिले साधक को मैंने बिद्या क्यों सिखाई इस लिये उसे विद्या न आई और ऐसे कहा है कि मनुष कितना ही परा क्रम करे पर कर्म उसके साथ रहता है और कितना ही काम अपनी बुद्धि से करे पर कर्मका लिखा ही मिलता है यह सुन कर बैताल फिर उसी दरख्त पर जा लटका, और राजा भी उसके पीछे ही जा उसे बांध कांधे पर रख ले चला । १७ ॥

॥ अठारहवीं कहानी ॥

बैताल बोला कि ऐ राजा कुवलपुर नाम एक नगर है, वहां के राजा का नाम सुदर्श और उस नगर में धनाक्षी नाम एक सेठ भी रहता था, उसकी पुत्री का नाम धनवती था, छोटी उमर में उसकी शादी एक गौरीदत्त नाम बनिये से कर दी कितने दिनों के पीछे एक लड़की उसके हुई नाम उसकी मोहनी रखा, जब वुह कई एक बरस की हुई, तब उसका बाप मर गया, और उस बनिये के भाई बंदों ने, उसका सरबस छीन लि

था, वुह लाचार हो अपनी बेटी का हाथ पकड़ अंधे
री रातके समें, उस घरसे निकल अपने मा बापके घर
को चली॥ थोड़ी एक दूर जाकर राह भूल एक मरघ
ट में जा निकली; वहां एक चोर सूलीपर टंगा हुआ
था, अचानक इसका हाथ उसके पांव से लगा, वुह बो
ला कि इस समें मुझे किसने दुख दिया। तब यह बोली
मैंने जानकर तुझे दुख नहीं दिया मेरी तकसीर माफ
कर उसने कहा दुख और सुख कोई किसुको नहीं दे
ता जैसा बिधाताकर्म में लिख देता है वैसाही भुगतता
है, और जो मनुष कहते हैं यह काम हमने किया, सो
निपट निरबुद्धि हैं, क्यों कि मनुष करमके तागे में बंधे
हुए हैं, वुह जहां जहां चाहता है तहां तहां खैंच ले
जाता है, बिधाता की बात कुछ समझी नहीं जाती,
क्यों कि मनुष अपने मन में कुछ विचारते हैं, और वु
ह कुछ और कर देता है यह सुन धनवती बोली ऐ
पुरुष तू कौन है उसने कहा मैं चोर हूं, तीसरा दिन
सूलीपर मुझ को हुआ है, और जान नहीं निकली; य
ह बोली किस कारण। उसने कहा कि बिन ब्याहा हूं,
अगर तू अपनी कन्या मुझे ब्याह दे, तो करोड़ अशर
फी दूं, मशहूर है कि पाप का मूल लोभ और ब्याध का
मूल रस, और दुख का मूल नेह, जो इन तीनों को छो
ड़े सो सुखसे रहे, पर ये हर किसूसे छूट नहीं सकते।
अन्तकाल लालच के मारे, धनवती ने कन्या देने को

इच्छा की और पूछा मैं यह चाहती हूं कि तेरे पुत्र हो पर किसतरह से होगा उसने कहा कि यह जिस समै जवान होगी इस ग्राम में एक सुन्दर ब्राह्मण को बुलाकर पांच सौ मोहर दे उसके पास रखियो इसतरह से इसके बेटा होगा यह सुनके धनवतीने लडकी को सूली के गिर्द चार फेरे दे शादीकर दी तब चोरने उससे कहा कि पूरब तरफ इन्दारे कुएके पास एक बडका दरख्त है उसके नीचे वे अशर्फियां गडी हुई हैं तू जाके ले यह कहकर उसकी जान निकल गई यह उधर को चली और वहां पहुंच कर उसमें से थोडी अशर्फियां ले अपने मा बाप के घर आई उनसे यह वृत्तान्त कह उनको अपने साथ स्वामीके देशमें लाई फिर एक बडी सी हवेली बना उसमें रहने लगी और वुह लडकी दिन बदिन बढती है जब वुह यौवनावती हुई एकदिन सखीओं साथ ले कोठेपर खडी बाट निहार रही थी कि इस में एक जवान ब्राह्मण उस गैल में आ निकला और यह उसे देख कामके वश हो सखी से बोली कि ऐ आली। इस पुरुष को तू मेरी माके पास ले जा यह सुन वुह ब्राह्मण को उसकी माके पास ले आई वुह उसे देख कर बोली कि हे ब्राह्मण मेरी बेटी जवान है जो तू इस के पास रहेगा तो मैं पुत्र के निमित्त सौ अशरफी तुझे दूंगी यह सुनके उसने कहा मैं रहूंगा वे बातें करते थे कि इत ने में सांझ

हुई, उसे इच्छा भोजन दिया, और उसने ख्याल किया सबब यह है कि भोग आठ प्रकार का है, एक सुगन्ध दूसरे वनिता, तीसरे वस्त्र, चौथे गीत, पांचवें पान छठे भोजन, सातवें सेज, आठवें आभूषण, ये सब वहां मौजूद थे, गरज जब पहर रात आई, उसने रङ्गमहल में आ, उसके साथ सारी रैन, आनन्द से काटी, जब भोर हुई, वह अपने घर गया, और यह उठके अपनी सखियों के पास आई, तब उनमें से एकने पूछा कि कहो रातको दोस्तके साथ क्या क्या खुशियां कीं, उसने कहा जिसवक्त कि मैं उसके पास जा बैठी थी, मेरे जी में, एक धडका सा मालूम हुआ था, जब कि उसने मुसकुराके मेरा हाथ पकड लिया, मैं उसके बस हो गई, और मुझे कुछ खबर न रही, कि क्या हुआ, और ऐसे कहा है कि एक नामी, दूसरे सूरमा, तीसरे चतुर, चौथे सरदार पांचवें सखी, छठे गुणवान, सातवें स्त्री रचक हो ऐसे पुरुष को नारी इस जन्म में तो क्या उस जन्म में भी नहीं भूलती। हासिल यह है कि उसी रात इसे गर्भ रहा, जब कि दिन पुरे हुए एक लडका पैदा हुआ, छठी की रातको उसकी माने सुपने में देखा, कि एक जोगी जिसके सिर पर जटा माथेपर चांद उज्जल भभुत मले धौला जनेऊ पहने श्वेतकंवलके आसनपर बैठा, सफेद सांपों को सेलीपहने, मुण्डमाल गलेमें डाले एक हाथ में खप्पर दूसरे में त्रिशूल लिये हुए महा

भयावनी सूरत बनाये उसके सोंही आ कहने लगा कि
कल आधी रातके समैं एक पिटारे में हजार मोहरका
तोडा और इस लडके को बन्दकर राजद्वार पर रख
आ यह देखती ही उसकी आंख खुल गई और फजर
हुए अपनी माके आगे इसने सब वृत्तान्त कहा । यह
सुनके दूसरे दिन उसकी मा उसीतरह पिटारे में उस
लडके को बन्दकर राजा के दरवाजे पर रख आई।
और इधर राजाने ख्वाब देखा कि दश भुज पांच शिर
हर एक शिर में तीन तीन आंखें और हर एक शिर
पर एक एक चार दांत बडे बडे त्रिशूल हाथ में लिये
अति डरावनी सूरत इसके साम्हने आनके बोला कि
ऐ राजा तेरे द्वारपर एक पिटारा रखा है उसमें जो
लडका है उसे तू ले आ वही तेरा राज रखेगा यह
सुनते ही राजाकी आंख खुल गई तब रानी से सब
अहवाल कहा फिर वहां से उठ दरवाजे पर आ देखा
कि पिटारा धरा है जोंही पिटारे को खोलकर देखा
तो उसमें एक लडका और हजार अशरफी का तोडा
है उस लडके को आप उठा लिया और द्वारपाल से
कहा कि इस तोडे को उठा ला फिर महलमें जा लड
के को रानी की गोदमें दिया इतने में प्रभात हुआ रा
जाने बाहर आ पण्डितों से और जोतिषीयों को बुला
के पूछा कि कहो इस लडके में राज लक्षण क्या है त
ब उन पण्डितों में से एक सामुद्रिक जान्ने वाला शास्त्र

ण बोला कि महाराज इस लडकेमें तीन लक्षण तो प्रत्य
क्ष देखते हैं। एक तो बड़ी छाती दूसरे के चौड़ा ललाट, तीस
रे बडा चिहारा। सिवाय इनके, महाराज बत्तीस लक्षण
पुरुषके जो कहे हैं, सो सब इसमें हैं, इस्से निसन्देह रहि
ये यह राज करेगा। यह सुन राजाने प्रसन्न हो मोति
यों का हार अपने गले से उतार उस ब्राह्मण को दिया,
और सब ब्राह्मणों को बहुत सा दान दे हुकुम किया,
कि इस लडके का नाम रखो। तब पण्डितोंने कहा महा
राज आप गठजोडा बांध बैठिये, महाराणी गोदमें ल
डका ले बैठे, और सब मंगली लोगोंको बुलाकर, मङ्ग
लाचार करवाओ। तब हम शास्त्र की रीत से नाम कर
ण करें यह सुन राजाने दीवान को आज्ञा दी, कि जो
ये कहे सो करो, दीवानने लडके के होने की उसी वक्त
नगरमें ढांडी खुशी की फिरवा दी, यह सुनके सब मङ्ग
लामुखी हाजिर हुए, और घरघर से बधाई आने लगी,
राजाके मन्दिर में आनन्द के बाजन बाजने लगे, औ
र मङ्गलाचार होने लगे, फिर राजा राणी गोदमें लड
के को ले, चौकमें आ, बैठे और ब्राह्मण वेद पढने लगे,
उन ब्राह्मणों में से एक जोतिषीने शुभ घडी लग्न मुहू
र्त बिचार उस लडके का नाम हरदत्त रखा। फिर वुह
दिन बदिन बढने लगा; निदान नौ बरसकी उमर में
छः शास्त्र और चौदह विद्या पढकर पण्डित हुआ। इस
में भगवान का चाहा यु हुआ, कि उसका तो बाप मर

गया वुह राजगद्दी पर बैठा और धर्म राज करने ल
गा कई एक बरस के पीछे एक दिन वुह राजा अपने
मन में चिन्ता करने लगा कि मैंने मा बाप के यहां ज
न्म लेके उनके निमित्त क्या किया मसल है कि जो दया
वन्त होते हैं वे सब पर दया करते हैं वोही ज्ञानी हैं
और उन्ही को बैकुण्ठ होता है और जिनका मन सुद्ध
नहीं तिनका दान पुजा तप तीर्थ करना शास्त्र सुन्ना
सब वृथा है और जो श्रद्धा हीन डिंभ समेत श्राद्ध कर
ते हैं तिन का निष्फल होता है और पितर उनके निरा
स जाते हैं॥ यह बात राजाने सोच समझकर बिचारि
कि अब पितृ कर्म किया चाहिये फिर राजा हरदत्त ग
या में गया और आकर अपने पितरों का नाम ले फल
गु नदी के कनारे पिण्ड देने लगा कि उस नदी में से ती
नों के हाथ निकले यह देख अपने जीमें घबराया कि
मैं किसके हाथ में दूं और किसके हाथ में न दूं । इ
तनी कथा कह बैताल बोला कि ए राजा बिक्रम उन
तीनों में से किसे पिण्ड देना उचित था तब राजाने क
हा चोर को॥ फिर बैताल बोला किस कारण तब कहा
उसने कि ब्राह्मण का बीज तो मोल लिया गया औ
र राजाने हजार अशरफी ले के पाला इस वास्ते उन
दोनों को पिण्डका अधिकार न हुआ इतनी बात सुन
फिर बैताल उसी दरखतपर जा टंगा और राजा उसे
वहां से बंधकर ले चला॥

॥ उन्नीसवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा चित्रकूट नाम एक नगर है त
हां का रूपदत्त नाम राजा।एकदिन अकेला सवार हो,
शिकार को गया सो भुला हुआ।एक महाबन में जा
निकला।वहां जाके देखता क्या है कि एक बड़ा सा ता
लाव है उसमें कंवल खिल रहे हैं और भांति भांति के
पंछी कलोलें कर रहे हैं।तालाव के चारों ओर दृक्षों
की घनी घनी छांव में ठंढी ठंढी हवा सुगन्धों के साथ
आ रही है यह भी धूप का तैंसा हुआ था।घोडे को ए
क दरखत से बांध,जीनपोश बिछाकर बैठ गया।घडी
एक बीती थी,कि एक ऋषिकन्या अति सुन्दर यौवनव
ती वहां पुष्प लेने को आई।उसे फूल तोडते हुए देख
राजा अति कामके बस हुआ।जब वुह फूल तोड अपने
स्थानको चली तब राजा बोला कि यह तुम्हारा कैसा
आचार है कि हम तुम्हारे आश्रम में अतिथ आये
और तुम हमारे सेवा न करो।यह सुनके वुह फिर
खडी हुई तब राजाने कहा कि ऐसे कहते हैं कि उत्त
म बरण के घर जो नीच बरण भी अतिथ आवे तो
वुह भी पूजनीय है और चोर हो या चंडाल शत्रु
हो या पितृघातक पर जो वुह भी अपने घर आवे
तो उसको भी पूजा करनी उचित है क्यों कि अतिथ
सबका गुरु है इस तरह से जब राजाने कहा तब वुह
खडी हुई फिर तो दोनों आंखें लडाने लगे। इस में

वुह मुनि भी आ पहुंचा, राजाने उस तपस्वी को देख प्रणाम किया और उन्ने आशीर्वाद दिया, कि चिरंजीव रहो, इतना कह उसने राजासे पूछा, कि यहां किस कारण आये हो, उसने कहा महाराज शिकार करने आया हूं, वुह बोला किस लिये तू महा पाप करता है। ऐसा कहा है, कि एक जन पाप करता है, और अनेक जन उसके पाप का फल भुगते हैं, राजाने कहा कि महाराज मुझ पर कृपा करके धर्म अधर्म का विचार कहो। तब वुह मुनि बोला सुनिये महाराज। कि जो जीव तृण जल खा बनवास करते हैं, तिन के मारने से बड़ा अधर्म होता है, और पशु पंछी मनुष के प्रतिपाल करने का बड़ा धर्म है, और ऐसा कहा है, कि जो भयमान और शरण आये को निर्भय कर देते हैं सो महादान का फल लेते हैं, और ऐसा कहा है, कि चमा बराबर तप नहीं, और सन्तोष समान सुख मित्रता तुल्य धन नहीं और दया सम धर्म। और जो नर अपने धर्म में सावधान है, और धन, गुण, विद्या, यश, प्रभुता, पा अभिमान नहीं करते और जो अपनी स्त्री से सन्तुष्ट हैं, और सत्यवादी हैं, सो अंत काल मुक्ति गति पाते हैं, और जो जटाधारी वस्त्र हीन निरायुध को हनते हैं, वे लोग अन्त समैं नरक भोग करते हैं, और जो राजा रैयत के दुख दाइयों को नहीं दण्ड देता वुह भी नरक भुगता है, और जो राजराणी या मित्र

को स्त्री या कन्या या आठ नौ महीने की गर्भिनी से भोग करते हैं सो महा नरक में पडते हैं। ऐसा धर्मशास्त्र में कहा है। यह सुन राजाने कहा। आज तक नादानी से जो पाप किया सो किया। फिर भगवान ने चाहा तो मैं न करूंगा। राजा के इस कहने से मुनिने प्रसन्न होके कहा। कि जो तू बर मांगो सो मैं दूं। तुझसे बहुत सन्तुष्ट हुआ। तब राजाने कहा। कि महाराज, जो तुम मुझपर तुष्ट हुए तो अपनी कन्या मुझे दो। यह सुनके मुनिने अपनी पुत्री राजाको गन्धर्व बिवाह की रीत से ब्याह दी और आप अपने स्थान को गया। फिर राजा ऋषिकन्या को ले अपने नगर की तरफ चला। कि रस्ते में करीब आधी दूरके सूरज अस्त हुआ, और चन्द्रमा उदै। तब राजा एक दरखत घना सा देख उसके नीचे उतर घोडा उसको जडसे बांध आप जीनपोश बिछा दोनों सो रहे। फिर दोपहर रातके समें एक ब्राह्मराक्षस ने आ राजा को जगाकर कहा। कि हे राजा मैं तेरी स्त्रीको खाऊंगा। राजाने कहा। ऐसा मत कर जो तू मांगेगा सो मैं दूंगा। तब राक्षस ने कहा। कि ऐ राजा जो तू सात बरसके ब्राह्मणके लडके का सिर काटकर अपने हाथ से मुझे दे तो मैं इसे न खाऊं। राजाने कहा ऐसेही मैं करूंगा। पर आजके सातवें दिन तू मेरे नगर में आइयो। मैं तुझे दूंगा। इसीतरह से राजाको बचन बंदकर राक्षस अपने स्थान को गया। और भोर हुए। राजा भी अपने महल में आ दाखिल हुआ। संचीने

सुन के बहुतसो भांदो को, और आके भेट दी, और रा
जाने मंत्री से वुह वृत्तांत कहकर पूछा कि सातवें दिन
राक्षस आवेगा, कहो उसका यत्न क्या करें मंत्रीने कहा
महाराज आप किसी बातकी चिन्ता न कीजे भगवान
सब भला करेगा॥ इतना कह मंत्रीने सवामन कंचन
का एक पुतला बनवा उसमें जवाहिर जडवा एक छक
डेपर रखवा चौराहे में खडा करवाकर उसके रखवा
लों से कहा, कि जो कोई इसके देखने को आवे यही
उससे कहो, कि जो ब्राह्मण अपने सात बरस के लड
के का राजा को सिर काटने दे सो इसे ले, यह कह
कर चला आया, फिर लोग जो उसके देखने को आते
थे, उससे चौकीदार यही कहते थे, दो दिन तो योंही
बीते, पर तीसरे दिन उसी नगरका एक दुर्बल सा ब्रा
ह्मण कि जिस के तीन बेटे थे, वुह यह बात सुन, घर से
आ ब्राह्मणी से कहने लगा, कि एक पुत्र अपना राजा
को बलिके वास्ते दें तो सवामन सोने का पुतला, जडा
ऊ घर में आवे, यह सुन ब्राह्मणी बोली कि छोटे ल
डके को मैं न दूंगी, ब्राह्मण ने कहा बडे को मैं न दूं
गा, यह बात सुन मझिले ने कहा, कि पिता मेरे तईं
दीजे, उसने कहा अच्छा फिर ब्राह्मण बोला कि संसा
र में धन ही मूल है और धन हीन को सुख कहां,
और जो दरिद्री हुआ उसका संसार में आना वृथा है,
इतना कह मझिले लडके को ले जा चौकीदारों को
दे उस पुतले को अपने घर ले आया, और इधर उन

लडके को लोग मंत्रीके पास ले आये, फिर जब सात दिन बीत गये वुह राक्षस भी आया, राजा ने चन्दन, अक्षत, फुल, धुप, दीप, नैवेद्य, फल, पान, वस्त्र, ले, उसकी पुजा की, और उस लडके को नहला, खड्ग हाथमें लें बलि देनेंको खडा हुआ, इसमें वुह लडका पहले हंसा पीछें रोया, इतन में राजानें खड्ग मारा कि सिर जुदा हो गया, सच है, जो ज्ञानी कह गयें हैं स्त्री संसार में दुख कि खान है, और बिनती का घर। साहस को गिरानें वाली और मोक्ष को करनें वाली धर्म को हरनें वाली ऐसी जो विष की जड हो उसें उत्तम किन्हें कहा है, और ऐसा कहा है कि आपदा कें लियें धन रखियें, और धन देकें स्त्री की रक्षा कीजें, और धन स्त्री देकें अपनें जी को बचाइयें॥ इतनी कथा कह बैताल बोला कि हे राजा मरनें कें समैं आदमी रोता है, तु इसकी हकीकत बता कि वुह हंसा क्यों, राजानें कहा यह बिचारकें वुह हंसा कि बालकपन में माता रक्षा करती है, और बडें हुऐं सें पिता पालता है, समैं असमैं रैयतकी राजा सहाय करता है, संसारका यह रीत है औार मेरा यह हाल है, कि माता पितानें धनकें लोभ से राजा को दिया, और यह खड्ग लियें मारनें को खडा है और देवताको बलि की इच्छा है, दया किसको भी न आई, यह सुन बैताल उसी पेडपर जा लटका और राजा भी वोंही झपटके पहुंचा और उसे बाध काधेपर रख ले चला॥

॥ बिसवीं कहानी ॥

बैताल बोला कि ऐ राजा विशालपुर नाम एक नगर है वहां के राजा का नाम बिपुलेश्वर उसके नगर में एक बनिया था तिसका नाम अर्थदत्त और उसकी बेटी का नाम अनङ्गमञ्जरी शादी उसकी कंवलपुर के सुमी नाम बनियेसे कर दीथी कितने एकदिनों पीछे वुह बनिया समुद्र पार बनिज को गया और यहां जब यह जवान हुई तब एकदिन अपने चौबारे पर खडी हुई रस्ते का तमाशा देखती थी कि इसमें एक ब्राह्मनेटा कमलाकर नाम चला आता था इन दोनों की चार नज़रें हुई और देखते ही मोहित हो गये फिर घडी एक पीछे सूरत संभाल ब्रह्मनेटा बिरह से व्याकुल हो अपने दोस्त के घर गया और यहां यह भी उसकी जुदाई की पीरसे निपट बेचैनी में थी कि इतने में सखीने आनके उठाया पर इसे कुछ अपनी सुध न थी फिर उसने गुलाब छिडका और खुशबोइयां सुघाईं कि इसमें उसे होश आया और बोली कि ऐ कामदेव महादेव ने तुझे ज्वलाकर भस्म किया तिसपर भी तू अपनी खुटाई से नहीं चुकता और बिन अपराध अबलाओं को आनके दुख देता है। ये बातें कर रही थी कि सांझ हुई और चांद नजर आया तब चांदनी की तरफ देख के बोली कि हे चन्द्रमा हम सुन्ते थे कि तुम्हें अमृत है और किरनों की राह से अमृत बरसाते हो सो आज मेरे पर तुम भी बिष बरसाने लगे फिर सखी से

कहा कि यहां से मुझे उठाकर ले चलो। कि मैं चांदनी से ज्वाली मरती हूं, तब वुह उसे उठाकर चौबारे पर ले गई और कहा तुझे ऐसी बातें कहते लाज नहीं आती। तब उन्ने कहा कि ऐ सखी मैं सब जानती हूं, पर मन्मथ ने मुझे मारके निर्लज्जी किया। और मैं धीरज बहुत तेरा करती हूं। पर बिरह की आगसे जों जों जलती हूं। त्यों त्यों मुझे घर बिष सा नजर आता है, सखी बोली कि तू खातिरजमा रख, मैं तेरा सब दुःख दूर करूंगी। इतना कह सखी अपने घर गई, और इन्ने अपने जीमें विचारा कि इस शरीर को उसके कारण तजूं, और फिर के जन्म ले उससे मिल सुखभोग करूं, यह कामना कर गले में फांसी डाल चाहे कि खैंचे इतने में सखी आ पहुंची। और उसने झट उसके गले से रस्सी निकालकर कहा, जीने से सब कुछ है, मरने से कुछ भी नहीं। वुह बोली कि ऐसे दुख पाने से मरना भला है, सखीने कहा, कि एक घड़ी सुसता, कि मैं उसे जाकर ले आती हूं, इतना कह, वहां गई जहां कमलाकर था, फिर उसे छिपके देखा, तो वुह भी बिरह से व्याकुल हो रहा है, और उसका मित्र गुलाब के पानी से चन्दन घिस घिस उसके बदन में लगाता है, और केले के कोमल कोमल पातों से पवन कर रहा है, तिसपर भी बिरह की आगसे वह घबराकर जलाही जला पुकारता है, और मित्र से कहता है, कि जहर ला दे मैं अपने प्राण त्याग करूं, इस कष्ट से छुटूं। इसका यह

अवस्था देख उसने अपने जी में कहा, कैसा ही साहसी पण्डित चतुर बिवेकी धीर मनुष्य हो पर कामदेव उसे एकचण में बेकल कर देता है, इतना अपने मनमें बिचार सखीने उस्से कहा ऐ कमलाकर तेरे तईं अनङ्गमञ्जरी ने कहा है, कि तू आके मुझे जी दान दे, इन्ने कहा यह तो उन्ने मुझे जी दान दिया। इतना कह उठ खड़ा हुआ, और सखी इसे अपने साथ लिये हुए उसके पास गई, यह वहां आके देखे तो वुह मुई हुई पड़ी है, फिर उन्ने भी एक आह का अनरः मारा कि उसके साथ इसका दम निकल गया, और अब सुबह हुई उसके घरके लोग इन दोनों को मरघट में लेगये और चिता चुनकर उन्हें रख के आग लगाई थी कि इसमें उसका खाविन्द भी पर देश से मरघट की राह आ निकला, तब लोगोंके रोने की आवाज सुनकर यह वहां गया, तो क्या देखता है की इसकी स्त्री परपुरुष के साथ जलती है। यह भी बिरह से व्याकुल हो उसी आग में ज्वलके मर गया यह खबर नगर के लोग सुनके आपस में कहने लगे कि ऐसा अचरज न आखों देखा न कानों सुना। इतना कथा कह बैताल बोला कि ऐ राजा इन तिनों में से कौन सा अधिक कामी हुआ, राजा बोला कि उसका खाविन्द अधिक कामी हुआ, बैतालने कहा किस कारण राजाने कहा जिन्ने आपनी नारीको और के अर्थ मुई देख क्रोध त्याग कर उसका प्रेम में मगन हो जी दिया, वुह अधिक कामी हुआ, यह बात सुन बै

ताल फिर उसी दरखत पर जा लटका राजा भी वोंही जा उसे बांध कांधेपर रख ले चला ॥ २० ॥

॥ इक्कीसवीं कहानी ॥

बैताल बोला ए राजा। जयस्थल नाम नगर वहां का वर्धमान नाम राजा उसके नगर में विष्णुस्वामी नाम एक ब्राह्मण उसके चार बेटे एक जवारी दूसरा कसबी बाज तीसरा छिनाल चौथा नास्तिक एक दिन वुह ब्राह्मण अपने बेटेको समझाने लगा कि जो कोई जूआ खेलता है उसके घरमें लक्ष्मी नहीं रहती यह सुन वुह जवारी अपने जीमें बहुत दिक हुआ और फिर उन्ने कहा कि राजनीति में ऐसे लिखता है कि जवारी को नाक कानकाट देश से निकाल देना इसी लिये उत्तम है कि और लोग जूआ न खेलें। और जवारी के जोरू लडकों को घरमें होते भी घरमें न जानिये, क्यों कि नहीं मालुम किस वक्त हार दे और जो वेश्याके चरित्रो पर मोहित होते हैं सो अपने जीको दुख दिखाते हैं और कसबी के वश में हो सरबस अपना दे अन्त को चोरी करते हैं और ऐसे कहा है कि जो नारी आदमी के मनको एक घडीमें मोह ले ऐसी नारीसे ज्ञानी दूर रहते हैं और अज्ञानी उससे प्रीतकर अपना सत, शील जप आचार बिचार नेम धर्म सब खोते हैं और उसको अपने गुरुका उपदेश भला नहीं लगता और ऐसे कहा हैं कि जिसने अपनी लाज खोई दूसरे को वुह कब बेहुरमत करने से डरता है और मसल है

कि जो बिलाव अपने बच्चेको खाताहै सो चुहेको कब छोडेगा। फिर कहने लगा कि जिन्हों ने बालकपन में विद्या न पढ़ी, और जवानी में काम से आतुर हो जौ बन के गर्व में रहे, सो बृद्धकाल में पछता कर हिरस की आगमें जलते हैं। यह बात सुन उन चारों ने आपस में विचारकर कहा कि विद्याहीन पुरुषके जीने से मरना भला है दूसरे उत्तम यह है कि बिदेश में जाकर विद्या पढ़िये। यह बात आपस में ठान वे एक और नगर में गये और कितनी एक मुद्दत के बाद पढ़के पंडित हो अपने घरको चले, राह में देखते क्या हैं कि एक कञ्जर मुए हुए शेर की हड्डी चमड़ा जुदाकर गठड़ी बांध चाहे कि ले जाय, इस में उन्हों ने आपस में कहा कि आओ अपनी अपनी विद्या आज मावें यह ठहरा एक ने उसे बुलाकर कुछ दिया, और वुह मोट ले उसे बिदा किया और रस्ते से कनारे हो उस मोट को खोल एकने सारी हड्डियां जावजा लगा मंत्र पढ़ छींटा मारा कि वे हाड लग गये, दूसरे ने इसी तरह से उन हड्डियों पर मास जमा दिया, तीसरे ने इसी भांती से मांस पर चाम मिढ़ा दिया, चौथे ने इसी रीत से उसे जिला दिया, फिर वुह उठतेही इन चारों को खा गया। इतनी कथा कह वैताल बोला ए राजा उन चारों में कौन अधिक मूरख था, राजा बिक्रम ने कहा

जिसने उसे जिला दिया वोही बड़ा मूर्ख था और
ऐसा कहा है कि बुद्धि बिना विद्या विद्वान को न
हीं बल्कि विद्या से बुद्धि उत्तम है और बुद्धिहीन इसी
तरह मरते हैं जैसे सिंह के जिलाने वाले मुए यह सु
न बैताल उसी दरख्त पर जा लटका फिर राजा उसी
तरह बांध कांधे पर रख ले चला ॥ २३ ॥

॥ बाईसवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा विश्वपुर नाम नगर वहां का
विदग्ध नाम राजा उसके नगर में नारायण नाम ब्रा
ह्मण था वह एक दिन अपने मनमें चिन्ता करने लगा
कि मेरा शरीर वृद्ध हुआ और मैं दूसरे की काया में
पैठने की विद्या जानता हूं इससे बिहतर यह है कि
इस पुरानी देह को छोड़ और किसू जवान के शरीर
में जाके भोग करूं । जब वह यह अपने जीमें विचार
कर चुका और एक लड़के शरीर में पैठने लगा, तो प
हले रोया और पीछे हंसा फिर उस में पैठके अपने घ
रमें आया लेकिन इसके सारे कुटुम्ब के लोग उसके ग
रतब से वाकिफ थे फिर उनसे आके कहने लगा कि मैं
अब योगी हुआ इतना कहके पढ़ने लगा । आशा
के सरोवर को तृष्णा के जलसे भरा तिस में मन को
रख इन्द्रियों को निश्चल करे सो योगी चतुर कहावे
और यह गति संसार के लोगों की है कि जब मरते मु
ख छिपे दांत गिर गये हैं काढ़े से फिरे तो भी तृ

क्या नहीं मिटती और इसी तरह से काल चला जा
ता है दिन हुआ रात हुई बरस हुआ महीना हुआ
बालक हुआ बूढा हुआ और कुछ नहीं मालूम कि
मैं कौन हूं और लोग कौन हैं और कौन किस लिये
किसुका सोग करता है एक आता है एक जाता है औ
र अन्तकाल सब जो आने वाले हैं इनमें से एक न र
हेगा अनेक अनेक अङ्ग हैं और अनेक अनेक मन
हैं और अनेक २ मोह हैं भांति भांतिके पाषण्ड आत्मा
ने रचे हैं पर बुद्धिवान इनसे बचे आशा और तृष्णा
को मार सिर मुण्डा हाथमें दण्ड कमण्डल ले काम क्रो
ध को मार जोगी हो नङ्गे पांव तीर्थ तीर्थ डोलते फिर
ते हैं सो मोक्ष पदार्थ पाते हैं और यह संसार सुपने
की तरह है इस में किसको खुशी कीजिये और किस
का गम और केलेके गाभे की तरह संसार है इसमें सा
र कुछ नहीं और धन जोबन विद्या का जो गर्व करते
हैं सो अज्ञान हैं और जो जोगी हो कमण्डल हाथ में
ले बार बार भीख मांग दूध घी चीनी से अपने शरीर
को पुष्टकर कामातुर हो स्त्री से भोग करते हैं सो अप
ना जोग खोते हैं इतना पढकर वुह बोला कि अब मैं
तीर्थयात्रा करूंगा यह बात सुन उसके कुटुम्ब के लोग
बहुत खुश हुए इतनी कहानी कह बैताल बोला ऐ रा
जा किस कारण वुह रोया और किस कारण हंसा तब
राजाने कहा कि बालक पन का मा का प्यार और ज

वालो का सुख याद कर और इतने दिनों उस देह के रखने के मोह से रोया और अपनी विद्या सिद्ध करके नई काया में पैठके खुशीसे हंसा। यह बात सुन बैताल उसी पेडपर जा लटका फिर राजा उसी तरह से बांध कांधे पर रख ले चला ॥ २२ ॥

॥ तेईसवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा। धर्मपुर नाम नगर वहां का धर्मध्वज नाम राजा उसके शहरमें गोविन्द नाम ब्राह्मण चारों वेद छवों शास्त्र का जाननेवाला था और अपने धर्म कर्म में सावधान और हरिदत्त सोमदत्त यज्ञदत्त ब्रह्मदत्त उस के चार बेटे थे, बडे पण्डीत बडे चतुर, और अपनें बापको आज्ञामें सदा रहतें थें॥ कितनें एक दिन पीछें उसका बडा बेटा मर गया, और वुह भी उसकें दुख सें मरनें लगा तिस समैं वहां कें राजा का पुरोहित विष्णुशर्मा आनकर उसें समझानें लगा कि यह मनुष जिस समैं माके गर्भ में आता हैं प हले वहीं दुख पाता हैं दूसरे जवानी सें कामका बस हो प्रीतम के वियोग से दुःख सहता हैं, चौथे वुढा हो अपने शरीरके निरबल होने से जीयत सें पडता है गरज सं सारसें जन्मलेनेसें दुखबहुत होते हैंऔर सुख थोडाक्यों कि यहसंसार दुखका मूलहै अगर कोईदरखतकीफुनङ्ग पर जा चढें या पहाडकी चोटी पर जा बैठें या पानी में छिपरहे या लोहे कें पिञ्जरे सें घुस रहे या पाताल में जा

छिपे तोभी काल नहीं छोड़ता और पण्डित मूरख धन
वान निर्धन ज्ञानी अज्ञानी बलवान निरबल कैसाही
कोई होवे पर यह सर्व भक्षी काल किसू को नहीं छो
ड़ता तमाम सौ बरस की मनुष की आर बल है तिस
में से आधी तो रात में जाती है और आधी की आ
धी बाल और वृद्ध अवस्था में शेष जो रही सो विवाद
वियोग शोग में गुजरती है और जी जो है पानी की
तरङ्ग की तरह चंचल है इससे इस मनुषको सुख कहां
और अब कलियुग के समैं सत्यवादी मनुष मिलने दु
र्लभ हैं और दिन बदिन देश उजड़ते हैं राजा लोभी
होते हैं पृथ्वी मन्द फल देती है चोर दुराचारी पृ
थ्वी में उपाध करते हैं और धर्म तप ब्रत संसार में थो
ड़ा रहा है राजा कुटिल ब्राह्मण लालची लोग लोगा
ई के बस हुए स्त्री चंचल हुई पिताकी निन्दा पुत्र कर
ने लगे और मित्र शत्रुता और देखो जिसका मामा क
न्हैया और पिता अर्जुन तिस अभिमन्यु को भी काल
ने न छोड़ा और जिस समैं मनुष को यम ले जाता है
लक्ष्मी उसके घरमें रहती है और मा बाप जोरू लड़
का भाई बन्धु कोई काम नहीं आता भलाई बुराई
पाप पुण्य ही साथ जाता है और वोही कुनबेके लोग
उसे मरघट में ले जा जला देते है और देखो इधर रा
त बितीत होती है उधर दिन आता है इधर चांद अ
स्त होता है उधर सूरज उदय। ऐसेही जवानी जाती

हैं बुढापा आता है इसी तरह से काल बीता चला जा ता है पर यह देखकर भी इस मनुष को ज्ञान नहीं हो ता और देखो सत्ययुग में मान्धाता ऐसा राजा कि जि सने धर्मके यशसे सारी पृथ्वी को छा दिया था और त्रेता में श्रीरामचन्द्र राजा कि जिसने समुद्र का पुल बांध लङ्का सा गढ तोड रावण को मारा और द्वापर में युधिष्ठिर ने ऐसा राज किया कि जिसका यश अब तक लोग गाते हैं परकाल ने उन्हें भी न छोडा और आकाश के उडनेवाले पंछी और समुद्र के बहनेवाले जीव समैं पाय वे भी आपत्य में आ पडते हैं इस संसा र में आके दुख से कोई नहीं छुटा इसका मोह करना वृथा है इस्से उत्तम यह है कि धर्म काज कीजिये इस तरह से जब बिष्णुशर्मा ने समझाया तब उस ब्राह्म ण के जीमें आया कि अब पुण्य काज कीजिये यह मन में उसने सोचकर अपने बेटों से कहा कि मैं यज्ञ कर ने बैठता हूं तुम समुद्र से जाकर कछुआ ले आओ अ पने बाप की आज्ञा पा एक धीवर से जाकर उन्होंने कहा कि एक रुपैया ले और कच्छप पकड दे उसने लिया और पकड दिया तब उनमें से बडे भाई ने म झले से कहा तू उठा ले उन्ने छोटे से कहा भाई तू उ ठा ले उसने कहा कि मैं इसे न छुऊंगा मेरे हाथ में दुर्गन्ध आवेगी और मैं भोजन करने में चतुर हूं मझ ला बोला कि मैं नारी रखने में चतुर हूं बडे ने कहा

कि मैं सेजपर सोने में चतुर हूं। इसतरह तिनों विवाद करने लगे और कछुए को वहीं छोड़ झगड़ते हुए राजाके द्वारपर आ द्वारपाल से कहा, कि तीन ब्राह्मण फरियादी आये हैं, यह जाके तू राजासे कह, यह सुन के दरवान ने राजा को खबर दी राजाने बुलाकर पूछा कि तुम किसवास्ते आपस में झगड़ते हो, तब उनमें से छोटा बोला कि महाराज मैं भोजन चतुर हूं, मझले ने कहा कि पृथ्वीनाथ मैं नारी चतुर हूं, बड़े ने कहा कि धर्मावतार मैं, सेज चतुर हूं, यह सुन राजाने कहा कि अपनी अपनी परीक्षा दो, इन्होंने कहा बहुत अच्छा, राजाने अपने रसोइयेको बुलाकर कहा, कि भांति भांति के व्यञ्जन और पकवान बना २ इस ब्राह्मणको अच्छी तरह भोजन करवाओ। यह सुन रसोइयेने आ रसोई तैयार कर उसे भोजन चतुर को ले आ थालपर बिठाया चाहे कि वुह ग्रास उठा मुंह में दे कि इसमें दुर्गन्ध आई उसे छोड़ हाथ धो राजाके पास आया, राजाने पूछा कि तूने सुख से भोजन किया, तब उसने कहा कि महाराज अन्न में दुर्गन्ध आई मैं ने भोजन न किया। फिर राजाने कहा दुर्गन्धका कारण कह उसने कहा, महाराज मरघट की भूमि के चांवल थे, मुरदे की बू उसमें से आती थी, इस कारण न खाया, यह सुनके राजाने अपने भण्डारीको बुलाकर पूछा अरे ये किस गांवके चांवल थे, उसने कहा महाराज शि

बपुद्र के राजाने कहा वहां के किसान को बुलाओ, तब भण्डारीने उस गांवके जमींदारको हजुर में बुलावा हाजिर किया. राजाने उस चौधरी से पूछा कि ये चांवल किस भूमिके हैं, उसने कहा कि महाराज समसान के हैं, यह सुनके राजाने उस ब्राह्मण के लडके से कहा कि तू सच भोजन चतुर है। फिर नारी चतुर को बुलवा एक मकान में पलङ्ग बिछवा सब खुशी के सामान रखवा एक अच्छी स्त्रीको बुलवा उसके पास रखवा दिया, और वे दोनों आपस में लेटे हुए, बातें करने लगे॥ राजा छिपके झरोखे से देखने लगा, और उस ब्राह्मण ने चाहा कि उसका श्वासः ले इसमें उसके मुंह की बास पा मुंह फेर सो रहा। राजाने यह चरित्र देख अपने मन्दिर में जाकर आराम किया, भोरके समै उठ दरबार में आ उस ब्राह्मण को बुलाके पूछा कि हे ब्राह्मण आजकी रात तूने सुखसे काटी. उसने कहा महाराज, सुख न पाया, फिर राजाने कहा किस कारण, ब्राह्मण ने कहा उसके मुंह से बकरी की गन्ध आती थी, इससे जीव मेरा बहुत बेचैन रहा, यह सुन राजाने कुटनी को बुलाकर पूछा कि इसे तु कहां से लाई थी और यह कौन है, उसने कहा यह मेरा बहिन की बेटी है, जब तीन महीने की थी तब इसकी मा मर गई और मैंने इसे बकरी का दूध पिला पिला कर पाला है। यह सुन राजाने कहा सच तू नारी चतुर है

फिर सेज चतुर को अच्छे अच्छे बिछौना करवा पलङ्ग
पर सुलवाया,प्रभात हुए राजाने उसे बुलाकर पूछा
तू रातभर सुख से सोया,उस ने कहा महाराज रातभर
नींद न आई राजाने कहा किस कारण । उसने कहा
महाराज इस सेज की सातवीं तह में एक बाल है,वुह
मेरी पीठ में चुभता था,इससे नींद न आई यह सुन
राजाने उस बिछौने की सातवीं तहमें देखा तो एक
बाल निकला तब उस्से कहा कि तू सच सेज चतुर
है। इतनी बात कह बैताल ने पूछा उन तीनों में कौ
न अति चतुर है राजा बीर बिक्रमा जीत ने कहा को
सेज चतुर है,यह सुन बैताल फिर उसी दरखत परजा
लटका राजा भी वोहीं जा उसे बांध कांधे पर रख
ले चला ॥ २३ ॥

॥ चौबीसवीं कहानी ॥

बैताल नेकहा ए राजा कलिङ्ग देश में एक यज्ञशर्मा
नाम ब्राह्मण तिसकी स्त्रीका नाम सोमदत्ता अति रूप
वती थी,वुह ब्राह्मण यज्ञ करने लगा,इसमें उस
स्त्रीके एक सुंदर लडका हुआ,जब वुह पांच बरष का
हुआ,तब बाप उसका शास्त्र पढाने लगा,बारह बरस
की उमर में वुह सब शास्त्र पढके बडा पण्डित हुआ,औ
र सदा अपने बाप की सेवा में रहने लगा,कितने एक
दिन बीते वह लडका मर गया,उस के शोकसे माता

पिता चिल्ला चिल्ला रोने लगे, यह खबर पासारे कुनबे के लोग आये, और उस लडके को अरथी में बांध कर स्मशान में ले गये, और वहां जा बसे देख देख आपस में कहने लगे देखो मुएपर भी सुन्दर लगता है, इसी तरह से बातें करते थे, और चिता चुनते थे, कि वहां एक जोगी भी बैठा तपस्या कर रहा था, यह बात सुन, वुह अपने जी में बिचारने लगा, कि मेरा शरीर अति दृद्ध हुआ, जो इस लडके के शरीर में पैठूं तो सुख से जोग करूं, यह सोचकर उस लडके के शरीर में पैठकर करवट ले रामकृष्ण कह, ऐसा उठ बैठा जैसे कोई सोते से उठ बैठे, यह देख तमाम लोग अचंभे में हो अपने अपने घर आये, और उसके बापको यह अचरज देखने राग हुआ, पहले हंसा पीछे रोया, इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम कह वुह क्यों हंसा और क्यों रोया, तब राजाने कहा जोगी नें इसके शरीर में जाते देख और यह बिद्या सिखकर हंसा, और अपने शरीर के छोडने के मोह से, रोया कि एक दिन इसी तरह मुझे भी अपना शरीर छोडना पडेगा, यह सुन बैताल फिर उसी दरखत पर जा लटका, और राजा भी पीछे जा उसे बांध कांधे पर रख ले चला। २४॥

॥ पचीसवीं कहानी ॥

तब बैताल बोला ऐ राजा दक्षिण दिशा में धर्मपुर नगर है वहांके राजा का नाम महाबल, एक समैं उसी

देश का एक और राजा फौज ले चढ आया, और उस का नगर आन घेरा, कितने एक दिनों लडता रहा, अ ब सेना इसकी मिल गई, और कुछ कट गई, तब लाचा र हो, रात के वक्त राणी को बेटी समेत साथ ले, जङ्ग ल में निकल गया, जब कई एक कोस बनमें पहुंचा तो प्रभात हुआ, और एक गांव नजर आया, तब राणी और राजकन्या को एक पेड तले बिठ ला, आप गांव की तरफ खाने का कुछ सामान लेने चला था, कि इस में भीलों ने आन घेरा, और कहा हथियार डाल दे, यह सुनके राजाने तीर मारना शुरू किया, और उध र से उन्होंने, इसतरह एक पहर लडाई रही, और कितने एक लोग भी उन्होंके मारेगये, इतने में एक तीर राजाके कपाल में ऐसा लगा, कि भैराके गिर पडा, औ र एकने आ राजा का सिर काट लिया, जब राणी और राजकन्या ने राजा को मुआ देखा, तो रोती पी टती उलटी बनको चली, इसी तरह से कोस दो एक चल मांदी होके बैठी, और अनेक अनेक भांति की चिन्ता करने लगी, इस में चन्द्रसेन नाम राजा और उ सका बेटा दोनों सिकार खेलते हुए, उसी जङ्गल में आ निकले, और दोनों के पांव के चिन्ह देख, राजाने अपने पुत्र से कहा, कि इस महाबन में आदमी के पांव के निशान कहां से आये, राजपुत्र ने कहा, महाराज यह चरण चिन्ह स्त्रीकी है, पुरुष का पांव ऐसा छोटा

नहीं होता राजाने कहा रुच्च ऐसा कोमल चरण पुरु
षका नहीं होता फिर राजपुत्र ने कहा इसी रस्ते गई
हैं राजाने कहा कि चलो इस बनमें ढूंढे जो मिले तो
जिसका यह बड़ा पांव है सो तुझे दूंगा और दूसरी
मैं लूंगा॥ इस तरह से आपस में बचन बन्द हो आगे
जा देखे तो दोनों बैठी हुई हैं उन्हें देख खुश हो मुवा
फिक करार के अपने अपने घोड़ेपर बैठा घर ले आ
ये राणी को राजकुंवर ने रखा और राज कन्याको
राजा ने इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा बि
क्रम उन दोनों के लड़कों का आपस में क्या नाता हो
गा यह सुन राजा अज्ञान हो चुप रहा फिर बैताल
खुश हो बोला कि ऐ राजा मैं तेरा धीरज और साह
स देख अति प्रसन्न हुआ पर एक बात मैं कहता हूं सो
तू सुन कि जिसके शरीर के रोम समान कांटों के औ
र देह काठ सी और नाम शांत शील सो तेरे नगर में
आया है और तुझे उसे मेरे लेने को भेजा है आप बै
ठा मरघट में मंत्र जगा रहा है और तुझे मारा चाह
ता है इसलिये मैं जाना देता हूं कि जब वुह पूजा कर
चुकेगा तब तुझ से कहेगा कि ऐ राजा तू अष्टांग दण्ड
वत कर तब तू कहियो कि मैं सब राजाओंका राजा हूं
और सब राजा आनके मुझे दण्डवत करते हैं मैंने आ
जतक किसुको दण्डवत नहीं की और मैं नहीं जानता
आप गुरु हैं मुझे कृपाकर सिखादिजिये तो मैं करूं ज

न वुह दंडवत करे तब ऐसा खड्ग मारियो कि सिर जु
दा हो जाय, तब तू अखंड राज करेगा, और जो यह
तू न करेगा तो वुह तुझे मार अचल राज करेगा, इत
नी बात राजा को चेताय बैताल उस मुरदे के काबि
ल से निकलकर चला गया, और कुछ रात रहते वुह
मुरदा ला, राजाने जोगी के आगे रख दिया, जोगीने
उसको देखकर खुश हो, राजा की बहुत सी बडाई की,
फिर मंत्र पढ उस मुरदे को जगा होम कर बल दिया
और दक्षिण की तरफ बैठ जितना कुछ वहां सरञ्जाम
तैयार किया था, सो अपने देवता को चढा दिया, और
पान फूल धूप दीप नैवेद्य दे पूजाकर राजासे कहा कि
तू दंडवत कर, तेरा बडा तेज प्रताप होगा, और अष्ट
सिद्धि नौ निद्धि सदा तेरे घरमें रहेगी, यह सुन राजा
ने बैताल की बात याद कर, हाथ जोड निपट अधीन
ता से कहा, कि महाराज मैं प्रणाम करने नहीं जान
ता, पर आप गुरु हैं, जो कृपा करके सिखाइये तो मैं क
रूं, यह सुन जोगीने ज्यों ही दंडवत करने को सिर
झुकाया, त्यों ही राजाने, एक खड्ग मारा कि सिर
जुदा हो गया, और बैताल ने आन फूलों का मेंह बर
साय ऐसा कहा है, कि जो अपने तईं मारा चाहे उस
के मारने से अधर्म नहीं, उस समै राजा का साहस दे
ख इन्द्र समेत सब देवता अपने अपने विमानों पर बै
ठ वहां जै जै कार करने लगे, और राजा इन्द्रने प्रसन्न

हो राजा बीर विक्रमाजीत से कहा कि बर मांग तब राजाने हाथ जोडकर कहा महाराज यह कथा मेरी संसार में प्रसिद्ध हो इन्द्रने कहा कि जबतक चांद सूरज पृथ्वी आकाश स्थिर है तबतक यह कथा तेरी प्रसिद्ध रहेगी और तू सब भूमिका राजा होगा इतना कह राजा इन्द्र अपने स्थान को गया और राजाने उन दोनों लोथों को ले तेल के कडाहे में डाल दिया तब वे दोनों बीर आ हाजिर हुए और कहने लगे कि हमें क्या आज्ञा है राजाने कहा जब मैं याद करूं तब तुम आना इस तरह से उनसे वचन ले राजा अपने घर आ राज करने लगा ऐसा कहा है कि पंडित हो या मूरख लडका हो या जवान जो बुद्धिवान होगा उसी की जै होगी ॥ २५ ॥